प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका-गीताञ्जली

मूल ग्रन्थकर्त्ता - महर्षि श्री अमोघवर्ष
पद्यानुवाद - आचार्य कनकनन्दी

पुण्य-स्मरण

जिनवाणी महोत्सव श्रुतपंचमी पर्व [सागवाड़ा] के उपलक्ष्य में
तथा मुनिसंघ दर्शन यात्रा के उपलक्ष्य में

स्वैच्छिक अर्थ सौजन्य (ज्ञानदानी)

श्री बोबड़ा नगिनलालजी धर्मपत्नी-चंदादेवी
सुपुत्र-अश्विन-रेनु, लोकेश-योगिता, चिराग-आंचल
विनित, हेन्सी, पर्व, तीर्थ, दिशी, ग्राही, सागवाडा. 09460020600

ग्रंथांक-296 संस्करण-प्रथम 2018
प्रतियाँ - 500 मूल्य - 101रू./-

प्राप्ति स्थान एवं सम्पर्क सूत्र

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा आशीर्वाद प्राप्त

(1) धर्म-दर्शन सेवा संस्थान
द्वारा-श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा
चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर, आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास,
उदयपुर (राज.)-313001/मो. 097832-16418

(2) डॉ. नारायणलाल कछारा
सचिव-धर्म-दर्शन सेवा संस्थान, 55, रवीन्द्रनगर, उदयपुर (राज.)-313001
फोन नं. 0294-2491422/मो. 092144-60622
E-mail:nlkachhara@yahoo.com

गणधर से ले आचार्य स्व-शिष्यों के दोष बार-बार क्यों बताते हैं!

(चाल :- आत्मशक्ति.....)

''हित-मित-प्रिय कथन सत्य'' ऐसा आचार्य कहते (लिखते) हैं।
तथापि आचार्य शिष्यों के लिए क्यों अधिक (अमित) कठोर (अप्रिय) कहते (लिखते) हैं।
''सद्वृत्तानां गुण गण कथा दोषवादे च मौनं'' भी कहते/(लिखते) हैं।
किन्तु स्व-शिष्यों के दोषों को बढाकर क्यों बार-बार कहते हैं।।
गणधर स्वामी कृत प्रतिक्रमण में तो दोषों का बारंबार कथन हैं।
पहले से लेकर अन्तिम तक दोषों का दशाधिक बार कथन करते हैं।
स्व-पर उपकारी गणधर से ले आचार्य तक पंचम काल में ऐसा करते हैं।
हुण्डावसर्पणी घोर कलिकाल के कारण ऐसा ही विधान करते हैं।।
आदि तीर्थंकर काल के शिष्य सरल व अनभिज्ञ होते थे।
मध्य के बाविस तीर्थंकर काल के शिष्य सरल व प्राज्ञ होते थे।।
अन्तिम तीर्थंकर महावीर काल के शिष्य कुटिल व जड होते हैं।
अतएव उन्हें सुधार करने हेतु ऐसा विधान प्रयोग करते हैं।।
प्राज्ञ-सरल को समझाने हेतु यह विधान नहीं होता है।
स्व-प्रज्ञा व सरलता के कारण वे स्वंय का सुधार कर लेते थे।।
कली काल के शिष्यों के सुधार हेतु छेदोपस्थाना चारित्र है,
स्वनिन्दा-गर्हा-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान-प्रायश्चित्त का विधान है।।
यथा जीर्णरोग दूर करने हेतु बार-बार औषध सेवन विधेय है।
अनादि कालीन भवरोग दूर हेतु, तथा स्वनिन्दादि बार-बार विधान है।
दिन में दो बार प्रतिक्रमण व प्रायश्चित्त करना अतएव अनिवार्य है।
दैवसिक-रात्रिक, पालिक- चातुर्मासिक-उत्तमार्थ प्रतिक्रमण अनिवार्य है।।
दोष दूर हेतु दण्डकों का भी बार-बार प्रतिक्रमण अनिवार्य है।
एक बार के प्रतिक्रमण में एक ही दण्डक दशाधिक बार उच्चारण अनिवार्य है।
अनादि कालीन ज्ञानावरणादि (कर्म) के कारण, जीव बने हैं अल्पज्ञ व प्रमादी।

अतएव दोष भी होते बार-बार अतः उसे दूर करने हेतु बार-बार होती प्रवृत्ति।।
यथा शरीर व वस्त्र गृहादि को किया जाता है बार-बार स्वच्छ-सलोना।
इससे भी अधिक आत्म शुद्धि हेतु, प्रतिक्रमणादि होते अनेक विध।
ज्ञान-ध्यान व तप-त्याग आदि इस हेतु ही किये जाते हैं।
आगम-प्रायश्चित्त-मनोविज्ञान व अनुभव में 'कनक' सत्य पाते है।। (15)
सागवाडा- 24-3-2018 मध्याह्न-12.30 (यह कविता डॉ. कैलाश जैन के कारण बनी

सच्चा धार्मिक V/S मिथ्या धार्मिक

(सम्यक्त्व सहित व रहित व जैन धर्म नाशक जीवों के स्वभाव)

(चाल :- 1. कसमें वादे ... 2. क्या मिलिये...)

सम्यग्दृष्टि होते (हैं) महान्...श्रध्दा-प्रज्ञा सहित...
अनंतानुबन्धी क्रोधादि रिक्त...मोह व मद रहित...
अतः वे होते ज्ञान वैराग्य युक्त...देव शास्त्र व गुरु भक्त...
संसार-शरीर-भोग(से) भिन्न...निश्चय से मानते सिद्ध सम...-1.

अष्ट गुण अष्ट-अंग युक्त...संवेग वैराग्य उपशम युक्त...
शालीन-शान्त धैर्य युक्त...दान-दया-पूजा संयुक्त...
उक्त गुण गण से जो रहित...उग्रता तीव्र कषाय युक्त...
दुष्टता व दुभार्वना युक्त...दुश्रुत दुर्भाषण युक्त...-2.

मिथ्यामतों में वे अनुरक्त...विरोध व द्वन्द्व सहित ऽऽ
संकीर्ण भाव व काम युक्त...रौद्र परिणाम रूष्टता युक्त ऽऽ
अनिष्ठ भाव व्यवहार युक्त...चुगलखोर-निन्दा युक्त ऽऽ
अभिमान व ईर्ष्या युक्त...याचना व झगडा युक्त ऽऽ-3.

नानाविध दूषण सहित...दुराग्रह हठाग्रह युक्त ऽऽ
संकीर्ण पंथ-मत सहित...ढ़ोंग-पाखण्ड रूढी युक्त ऽऽ
बन्दर सम चंचलता युक्त...समता सहिष्णुता रिक्त ऽऽ

गधा सम मन्दमति युक्त...परचिन्ता-निन्दा वाहक ऽऽ-4.

कुत्ता सम वाचालता युक्त...धर्म धर्मी से कलह युक्त ऽऽ
व्याघ्र यम क्रूरता युक्त...शुकर सम भक्षाभक्ष सहित ऽऽ
ऊँट सम कांटा तिक्त भक्षक...दंभ से शिर ऊँचा युक्त ऽऽ
जोंक सम दोष ग्रहण युक्त...बक सम ध्यान शुचि युक्त ऽऽ

चालनी सम गुण त्याग युक्त...कैंची सम भेदभाव युक्त ऽऽ
किंपाक फल सम मिठा युक्त...शिला सम मृदुता रिक्त ऽऽ
ऐसे जीव के पूजन दान...तप-त्याग-ध्यान-अध्ययन ऽऽ
धर्म प्रभावना तीर्थ वंदना...आत्म बिन शव यात्रा सम ऽऽ-6.

सम्यग्दृष्टि के उक्त धर्म...महाफलदायक कल्पवृक्ष सम ऽऽ
ईकाई सहित शून्य समान..सम्यग्दृष्टि के धर्म महान् ऽऽ
आत्मविशुद्धि से धर्म प्रारंभ...आत्म मलीनता ही सभी अधर्म ऽऽ
शुद्ध-बुद्ध आनन्द धर्म पूर्ण...'कनक' का लक्ष्य स्व-आत्म धर्म ऽऽ-7.

ओबरी दि. 24/2/2018 रात्रि-8.38

भारत के 69 वे गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में

लौकिक जन V/S आध्यात्मिक जन

(सम्यग्दृष्टि मुमुक्षु के समस्त भाव व लक्ष्य अलौकिक होते हैं!)

(चाल :- 1.वैष्णव जन तो... 2.सायोनारा...)

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे ''भैतिक दृष्टि'' सहित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे ''चैतन्य दृष्टि'' सहित हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे शरीर को 'मैं' माने हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे आत्मा को 'मैं' माने हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'अज्ञान-मोह' से सन्तप्त हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'श्रध्दा-प्रज्ञा' से सहित हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'ईर्ष्या-घृणा-तृष्णा' (से) मूर्च्छित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'सत्य-समता-शांति' सहित हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'सत्ता-सम्पत्ति-प्रसिद्धि' मोहित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'आत्मविश्वास ज्ञान चर्या' पूर्ण हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'फैशन-व्यसनों से उत्तप्त'/(मस्त) हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'सरल-सहज-सन्तोषी' हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'संकीर्ण स्वार्थ' हेतु प्रयत्न हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'परमार्थ साधना' में रत हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'शत्रुता-मित्रता भाव' सह हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'मैत्री प्रमोद करुणा साम्य' युत हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'दिखावा-आडम्बर' सहित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'मौन-एकान्त साधना' रत हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'दीन-हीन-अहंकार' सहित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'स्वाभिमान-सोऽहं-अहं' सह हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'प्रतिस्पर्ध्दा-वर्चस्व' सहित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'आत्मशुद्धि-प्रगति' सह हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'परनिन्दा-अपमान' सहित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'आत्म विश्लेषण-समीक्षा' सह हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'संकीर्णता-कट्टरता' सहित हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'उदारता-पावनता' सहित हैं...

लौकिक जन तो तेने कहिए...जे 'तन-मन-इन्द्रियों के' दास हैं...
आध्यात्मिक जन तेने कहिए...जे 'तन-मन-अक्ष' को बनाते दास हैं...
बाह्य में दोनों समान होने पर भी...भाव व लक्ष्य में भिन्न हैं...
लौकिक जन आध्यात्मिक जनों को न समझ पाते 'कनक' किया वर्णन हैं...

ओबरी, दि-26/1/2018, रात्रि-12.08

ज्ञान-वैराग्य हेतु पाप-पापीओं का चित्रण (वर्णन)

(चाल :- आत्मशक्ति.....)

हिंसात्मक या पापत्मक दृश्य देखने या सुननेसे।
नहीं होता है पाप बन्ध ज्ञान-वैराग्य होनेसे।।
इससे जिन्हें न होते ज्ञान-वैराग्य; उन्हें होता है पापबन्ध।
क्योंकि उनमें नहीं संवेदनशीलता, दुःखी जीवोंसे कृपापरत्व।।(1)

संवेग व वैराग्य के लिए, अनुप्रेक्षायें सतत चिन्तनीय।
अनित्य-अशरण-संसार-अशुचि-आस्रव-लोकादि चिन्तनीय।।
इन अनुप्रेक्षाओंमें विशेषतः, हिंसा या पापोंका वर्णन है।
''हिंसादिष्विहामुत्रपायावद्यदर्शनं'' में, उपाय-अवद्य चिन्तन है।।(2)

''दुःखमेव वा'' अर्थात् हिंसादिक दुःखमय हो ऐसा चिन्तन योग्य है।
इस हेतु ही चौरासीलक्ष्ययोनि या चतुर्गतिके दुःखोंका चिन्तन है।।
''जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थं'' यह सब पाप व दुःख दर्शनीय/(चिन्तनीय)।
''आर्तनरा धर्मपरा भवन्ति'' या दुःखमें सुमिरन सरल-सहज है।।(3)

''आत्मपरिणाम हिंसन हेतुत्वात् सर्वमेव हिंसैतत्'' ही भाव हिंसा है।
हिंसा के कारण व परिणाम चिन्तनसे, हिंसा त्याग करना योग्य है।।
''बिन जानन ते दोष गुणनको कैसे त्यजीये गहिए'' के अनुसार।
हिंसा या पापोंके गुण-दोष ज्ञान बिन हिताहित विवेक असम्भव।।(4)

अतएव ही जैनधर्म में पाप व पापीओंका वर्णन प्रचुर है।
नरक-तिर्यंच-मनुष्य गतिके पाप व दुःख वर्णन प्रचुर है।।
निलांजन की मृत्यु देखकर, आदिनाथ को हुआ ज्ञान-वैराग्य।
पशुओं की करुण ध्वनि सुनकर, नेमीनाथ को हुआ ज्ञान-वैराग्य।(5)

गौतम बुद्ध को घायल हंस व वृद्ध-रोगी-शव-साधुसे हुआ वैराग्य।

अधिकांश तीर्थंकर से ले साधु-साध्वियों को, ऐसा ही होता है वैराग्य।।
पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी व सुकुमार-सुकौसल पर हुआ उपसर्ग।
सातसौमुनि पर उपसर्गका वर्णन, चित्र ज्ञान-वैराग्य हेतु योग्य।।(6)
दुःखमा-सुखमा कालमें ही इन सब कारणोंसे होता है वैराग्य।
इससे विपरीत इन्द्रियसुख युक्त, भोग भूमिज/(व देव) में न होता वैराग्य।।
मन्दिरों मे भी उक्त विषयों के, दृश्य भी होते है चित्रित।
तीर्थंकर-गणधर से ले आचार्य आदि, उक्त विषयोंका करते वर्णन।।(7)
ऐसे ज्ञान-वैराग्य उत्पादक विषयोंको भी न समझ पाते मूढ।
ऐसे मूढोंके सम्बोधनार्थे 'सूरी कनक' ने किया वैराग्यपूर्ण काव्य।।(8)

ओबरी- 07/03/2018 रात्रि-08.28

कामासक्त पाप व दुःखोंको उत्साहसे करता है

(कामासक्ति से विवाह-भोगोपभोग-हिंसादि पाप व दुःख)

(चाल :- आत्मशक्ति... क्या मिलिए...)

कामासाक्तिमें यदि इतनी शक्ति न होती, जीव क्यों सहन करते इतने दुःख-दैन्य!?
मरना-मारनासे ले आक्रमण युध्द, उत्सवसे ले क्यों करते आत्म हत्या!?
इस शक्ति दास होकर कामी जीव, हित-अहित, हानि-लाभ न समझ पाते।
भावहिंसासे लेकर द्रव्य हिंसा करते, मिठा जहरको अमृतमानकर पीते।।(1)

कामासक्त जीव मोह वेद से पीड़ित होकर, भोगोपभोगके संकल्प-विकल्प करते।
आकर्षण-विकर्षण-संक्लेश-द्वन्द्व करते, चिन्ता-तनाव आदिसे भावहिंसा करते।।
विवाह हेतु आरभंसे ले परिग्रह करते, आडम्बरसे अनावश्यक धन-जन व्यय।
समय-शक्तिसे ले साधन-उपकरण व्यय, फैशन-व्यसनोंसे ले ढोंग-पाखण्ड।।(2)

इससे होते विविध प्रकार प्रदूषण, शब्द-वायु-मृदा व जलादि प्रदूषण।
प्रसिद्धि-वर्चस्व-प्रतिस्पर्ध्दा अन्धानुकरण, गरीबोंका अपमानसे विविध शोषण।।

लोभ-भय व आशंकादि होते इसमें, दहेजके कारण शोषण से प्रताडन।
निन्दा-अपमानसे ले तनाव-तलाक, मुकदमासे ले हत्या-आत्महत्या तक।।(3)
एक बारके भोगसे मरते नौलाख जीव, वे भी लब्धयपर्याप्तक पंचेन्द्रिय मानव।
अथवा नौलाखकोटी ऐसे जीव मरते, अनेक बार में मारते ऐसे असंख्य जीव।।
और भी उत्तरोत्तर आरंभ-परिग्रह चाहिए, दम्पत्तिसे लेकर सन्तति हेतु भी चाहिए।
पालन-पोषण व सुरक्षा सम्बर्ध्दन हेतु, उक्त पाप-ताप बढते संसार भ्रमण हेतु।।(4)
तो भी कामासक्त जीव होते मदमस्त, जीवन होता अस्त-व्यस्त-संत्रस्त।
तथापि मानते विवाह वर्षका उत्सव, दुःख न चाहते तो भी मानते दुःख उत्सव।।
ज्ञान-वैराग्य सम्पन्न जीव होते सुखी, बह्मचर्य से पाते उक्त दुःखों से मुक्ति।
आत्म साधनासे वे बनते परमात्मा, 'कनक' का लक्ष्य बनना परमात्मा।।(5)

ओबरी 06/03/2018 रात्रि 08:53

विषयानुक्रमणिका

अं.क्र.	विषय	पृ. क्र.
1.	गणधर से ले आचार्य स्व-शिष्योंके दोष बार-बार क्यों बताते हैं!	02
2.	सच्चा धार्मिक V/S मिथ्या धार्मिक	03
3.	लौकिक जन V/S आध्यात्मिक जन	04
4.	ज्ञान-वैराग्य हेतु पाप-पापीओं का चित्रण (वर्णन)	06
5.	कामासक्त पाप व दुःखोंको उत्साहसे करता है	07
	(प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका-गीताञ्जली)	
1.	मंगल स्मरण	14
2.	महावीर भगवान् की महानता	14
3.	भगवान् महावीर का विश्व को दिव्य सन्देश	15
4.	ग्रन्थ की आवश्यकता	16
5.	दोषग्राही दुर्जन-पतित व गुणग्राही सज्जन-महान्	17
6.	नैतिक नियम का पालन न कर सको तो	19
7.	सभी के लिए नैतिकाचार	20
8.	महान् कार्यों में बाधक-साधक कारण	21
9.	नीति सुमनाञ्जली	22
10.	छोटे-छोटे सदाचार नित्य ही पालो	23
11.	उपादेय-हेय व गुरु का स्वरूप	24
12.	करणीय एवं त्यजनीय	24
13.	सत्य एवं वचन-सत्य का विश्व रूप	25
14.	स्व-पर उपकारी गुरु	26
15.	साधक हूँ छोटा-लक्ष्य है मोटा	27
16.	भक्तजन के उपकारी गुरु-गुरु का दाता स्वरूप	28
17.	सर्वोदयी चार भावनाएँ	29
18.	शीघ्र करने योग्य कर्त्तव्य व मोक्ष-बीज	30

19. सहज V/S दुर्लभ 31
20. विकृति को त्यागकर संस्कृति को पाले धार्मिक जन 32
21. सही शिक्षा पध्दति से लाभ तो गलत पद्धति से हानि 33
22. पाथेय-शुचि-पण्डित-विष 34
23. कुभाव-व्यवहार होना सरल 35
24. संसार में सार 36
25. मोहजनक-चार-भववल्ली-शत्रु 36
26. भय-अन्धा-शूर 37
27. सप्त भय रहित एवं भय सहित 39
28. मेरी भय एवं निर्भय की साधना 40
29. कामांध जीव करते हैं अनेक अनर्थ काम 41
30. अंधा मेरा नाम है (विभिन्न प्रकार के अंधे) 42
31. मूर्ख की आत्मकथा व आत्मव्यथा (कुशिष्य-सुशिष्य) 43
32. कर्णामृत-सदुपदेश, गुरुता-अयाचनावृत्ति 46
33. स्व-पर विश्वहितकारी जिनवाणी 46
34. मेरे आदर्श गुरु 47
35. अद्वितीय ज्ञानामृतदायिनी जिनवाणी-माता 48
36. स्वध्याय परम तप से मुझे प्राप्त लाभ 49
37. समतासुखामृत पायो/(पीयो) 50
38. समतामहाशक्ति पायो 51
39. अनुभवज्ञानामृत पायो 51
40. आत्मविश्वास जगानेवाले होते हैं सर्वश्रेष्ठ उपकारी गुरु 57
41. आध्यात्मिक जन-संत की अलौकिक निस्पृह वृत्तिः तो भी वे न होते पलायनवादी या परपीड़क 58
42. मेरी (आचार्य कनकनन्दी) की प्रतिज्ञा, ससंघ के नियम व कारण 60
43. गहन, चतुर, दरिद्रता, लघुता 62
44. धन विहीन सुख एवं आनंद 62
45. प्रसिद्धि की तृष्णा से मिलती है अशान्ति 63

46. भारतीय नारी की गरिमावस्था व पतितावस्था 64
47. आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी 66
48. मातृशक्ति उद्धारक-शक्ति बने न कि संहारक 67
49. चक्रवर्ती तक क्यों बनते हैं निस्पृह समताधारी साधु!? 69
50. अर्थ (धन) की आत्मकथा 70
51. इच्छा-अनिवार्यता-भावना का स्वरूप एवं फल 71
52. जीवन, जडता, जाग्रत, निद्रा 73
53. क्षणभंगुर, चन्द्र किरण सम 74
54. सज्जन एवं दुर्जन संगति के फल 75
55. संकीर्ण व स्वार्थी मानव न मानते गुण-सज्जनों को भी 76
56. नरक, सुख, सत्य, प्रिय 76
57. प्रिय से श्रेय मार्ग क्लिष्ट परन्तु श्रेष्ठ 77
58. नारकी की आत्मकथा तथा आत्मव्यथा 77
59. सुखी होने के धार्मिक एवं वैज्ञानिक कारण 79
60. प्राकृतिक सुखी जीवन-स्मरण 79
61. परिग्रहः महापाप क्यों ? 81
62. वाचनिक सत्य एवं परम सत्य 82
63. सुखी एवं दुःखी होने के कारण 82
64. दान, मित्र, अलंकार, भूषण 84
65. दान-सेवा-परोपकार से सुख व स्वास्थ्य लाभ 85
66. भीख <दान <त्याग 86
67. भोग से पतन तो त्याग से उत्थान 86
68. निः स्वार्थ-स्वैच्छिक दान से बढती है शांति संपत्ति 87
69. अशुभ (पाप)-शुभ (पुण्य)-शुध्दोपयोग (मोक्ष) के फल 88
70. ज्ञानदान है महान् दान 89
71. परोपजीवी से समस्या तथा परस्परोपग्रह से समाधान 89
72. निःस्वार्थ सेवादि का सुफल 90
73. सर्वोपलब्धि के उपायः स्वात्मोपलब्धि 91

74. वचन की विशेषताएँ 91
75. विवाद-विसंवाद से सत्य व शान्ति अप्राप्त 92
76. यथार्थ से शुत्र-मित्र 93
77. चाटुकार (चापलूस) की आत्मकथा-आत्मव्यथा 94
78. अनर्थफल, सुख स्त्रोत, सर्व दुःख नाशक 95
79. मन के अस्थिर एवं स्थिर होने के कारण 97
80. विकल्प-संकल्प-संक्लेश नाश हेतु मेरी साधना 100
81. ईर्ष्या के रूपान्तरण से विकास 102
82. पावन भावना एवं व्यवहार 103
83. अन्धा, बधिर, गूँगा 103
84. यथार्थ सत्य-तथ्य व ढ़ोंग-पाखण्ड-आडम्बर 104
85. मरण, अमूल्य, शल्य 105
86. प्रयत्न, उपेक्षा 106
87. कार्य से पुरुषार्थ श्रेष्ठ 106
88. मनन-चिन्तन स्मरणीय योग्य 107
89. विद्या तेरी धारा अमृत 108
90. दूसरों से प्रभावी हुआ न करो 109
91. अनुचिन्तन, प्रेयसी 110
92. सुभाव से जीवन निर्माण एवं निर्वाण 110
93. करुणा! तेरी अमृतधारा 111
94. चिन्ता त्याग कर (के) आत्म चिन्तन से सुखी बनो! 112
95. पराधीन, अविधेय 113
96. उपेक्षा-अपेक्षा-प्रतीक्षा रहित विकास 114
97. मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बने न कि कृतघ्न 115
98. हे मानव! वन गिरि का कृतघ्न न बन! 117
99. पूज्य, निर्धन, विजयी 117
100. वन्दे तद्गुण-लब्धये 118
101. सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धियुक्त न्यायदाता

भी परमज्ञान सुख हेतु बनते हैं साधु! 119
102. तीर्थंकर केवल मानवों के गुरु नहीं होते अपितु सम्पूर्ण विश्व के होते हैं 121
103. अध्यात्म गुरु की वन्दना 122
104. गुरु का स्वरूप 123
105. गुरुवर से प्रार्थना एवं शुभ आकांक्षाएँ 124
106. क्षमा माँगे बिना भी मैं क्षमाभाव धरूँ 125
107. समस्त सीमातीत हैः आध्यात्मिक 126
108. देवों के द्वारा भी वन्दनीय,भय योग्य 127
109. दया ही पावन अमृत धारा 127
110. धार्मिक जन के लक्षण 128
111. सबके स्वामी, स्थित योग्य 129
112. परम न्याय संविधान-राजनीति के सूत्र 129
113. सद्गृहस्थ (श्रावक) के 35 गुण 131
114. अठारह (18) पाप स्थान 132
115. चपल, सत् पुरुष 133
116. हाय रे! मानव संकीर्णवाला....!? 134
117. खेदजनक, प्रशंसनीय, उदारता, सहनशीलता 135
118. मैं प्रशंसनीय गुणी बनूँ व गुण-गुणी की प्रशंसा करूँ 136
119. चार भद्र चिन्तामणि 137
120. आहार-औषधि-अभय-ज्ञानदान 138
121. आभरण रिक्त शोभा 139
122. ग्रन्थ कर्त्ता का परिचय 139
123. सुकवि-सुकविता व गुणग्राही श्रोता का सुफल 140
124. ''गुणगण कथा दोष वादे च मौनं'' मैं क्यों करता हूँ 141
125. त्यजनीय व ग्रहणीय 158
126. परम पावन भाव-व्यवहार क्या व कैसे होते है!? 165
127. मानव तू महामानव बन! 167

महर्षि श्री अमोघवर्ष विरचित

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका

पद्यानुवाद - आचार्य कनकनन्दी

अनुवाद हेतु निवेदक-प्रो.डॉ. P.M. अग्रवाल

(भूतपूर्व वैज्ञानिक U.S.A.)

मंगल-स्मरण

प्रणिपत्य वर्ध्दमानं, प्रश्नोत्तररत्नमालिकां वक्ष्ये।
नागनरामरवन्द्यं, देव देवाधिपं वीरम्।। (1)

पद्यभावानुवाद - (चालः आत्मशक्ति....)

नगनर अमर से वन्दित देवाधिदेव श्री वर्ध्दमान वीर।
प्रश्नोत्तर रत्नमालिका को कहुँगा मैं अमोघवर्ष प्रणिपत्य वीर।।

महावीर भगवान् की महानता

(महानतम् वैज्ञानिक व समाज सुधारक भगवान् महावीर)

(चाल :- चाँद सी मेहबूबा हो .....)

त्रिशला नंदन हे! महावीर सन्मति वर्ध्दमान अति वीर।
बाल ब्रह्मचारी करुणाधारी दिगम्बर वेशधारी वनविहारी।।
सत्य अहिंसा अपरिग्रहधारी अचौर्य व्रतधारी समताधारी।
उत्तम क्षमा-मार्दव आर्जवधारी, संयम-तप-त्याग-धैर्यधारी।।(1)
गम्भीर-शांत व सौम्यताधारी भेदविज्ञानी व विवेकधारी।
निस्पृह-निराडम्बर व आत्मविहारी सुख-दुःख में समताधारी।।
दासी चंदना से आहार लिया, दास प्रथा का विरोध किया।
राजकुमारी थी चन्दना दासी (तो भी) दास प्रथासे बनी थी बंदी।।(2)
केवलज्ञान जब हुआ आपको, समवसरण में दिव्यध्वनि खीरी।

चंदना सुन्दरी भी बनी आर्यिका, पतित पावन है बाना/(काम) आपका।।
चन्दना साध्वी बनी प्रमुख आर्यिका, अबला उद्धारक रूप आपका।
पशु-पक्षी भी बने आपके भक्त, राजा-महाराजा-चक्रीसे देव तक।।(3)
सातसौअठारह भाषा में आपकी वाणी, जनभाषा से ले पशु-पक्षी की वाणी।
विश्व हितकारी आपकी वाणी, अन्त्योदय से लेकर सर्वोदय वाणी।।
अणु सिद्धान्तसे ले विश्व विज्ञान, कर्म सिद्धान्तसे ले आध्यात्मिक विज्ञान।
अनेकान्तसे ले पर्यावरण सुरक्षा, विश्व शांति मैत्री से ले जीव विज्ञान।।(4)
आधुनिक विज्ञान के जन्मसे पूर्व, प्रायः द्विसहस्र वर्षसे पूर्व।
अभी भी जो अज्ञात भौतिक ज्ञानीको, वे सभी विज्ञान ज्ञात था आपको।।
इससे सिद्ध होता आप थे सर्वज्ञ, महान् वैज्ञानिक व दार्शनिक।
समाज सुधारक अबला उद्धारक, विश्व शांति के प्रचार-प्रसारक।।(5)
इससे सिद्ध होता पूर्वके मानव समाज, न थे अज्ञानी व बर्बर असभ्य।
वे थे सभ्य से अधिक सांस्कृतिक, भौतिक ज्ञान परे भी थे आध्यात्मिक।।
ये सभी ज्ञात होता आगम ग्रन्थोंसे, लिपिबद्ध है द्विसहस्र वर्ष पूर्वसे।
अतएव आप हो मेरे आदर्श, आपके अनुकरणसे (बनूँ) आप सदृश्य।।(6)
आपके गुणगण है अनंतानंत, गणधर तक आपका न पाते अन्त।
मैं तो अल्पज्ञ श्रद्धा संपन्न, आपके गुण चाहे भक्त 'कनक'।।(7)

भगवान् महावीर का विश्व को दिव्य सन्देश

(चाल :- सुनो-सुनो हे दुनियावालों...)

(यह कविता "JAINA"अमेरिका (U.S.A.) के अनुरोध से बनी।)

सुनो-सुनो ऐ दुनियावालों, महावीर का दिव्य संदेश।
उसका निश्चय विकास होगा, जो अपनाएगा यह संदेश।।
अनेकान्त है दिव्य सन्देश, उदारवादी बने मानव।
सापेक्ष दृष्टि अपनाकर, सापेक्ष कथन करें मानव।।(1)

इससे दूर संकीर्णता होगी, कट्टरता भी गायब होगी।
पक्षपात भी दूर होगा, सर्व समस्या शान्त होगी।।
अहिंसा से स्व-पर विश्व रक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा होगी।
कषाय भाव मन में न हो, यह अन्तरंग अहिंसा होगी।।(2)

इससे तनाव संक्लेश भाव, लड़ाई-झगड़ा दूर भी होंगे।
गृह कलह से आतंकवाद, युद्ध-महायुद्ध दूर भी होंगे।।
तृष्णा की कमी सन्तोष वृत्ति से, अपरिग्रहका होगा विकास।
मर्यादित में गृहस्थ पाले, सम्पूर्ण पाले साधु संन्यास।।(3)

प्रकृति शोषण कम भी होगा, यान-वाहन भी कम ही होंगे।
कल-कारखाने भी कम होंगे, अपरिग्रह जब हम पालेंगे।।
पर्यावरण की सुरक्षा होगी, प्रदूषणों में कमी आयेगी।
ग्लोबल वॉर्मिंग विषम दृष्टि, रोग दुर्घटना में कमी आयेगी।।(4)

आध्यात्मिकसे अन्तरदृष्टि, समता भाव से होगी प्रवृत्ति।
इससे होगी आत्मिक शांति, सत्य-सहिष्णुता व सन्तोष वृत्ति।।
पवित्रता व सहज वृत्ति, जिससे फैलेगी विश्व में शान्ति।
अन्त में मिलेगी मुक्ति की प्राप्ति, महावीर सम मिलेगी शान्ति।।(5)

'कनकनन्दी' भी भावना भाये, विश्व मानव यह अपनायें।
विश्व में सर्वत्र शान्ति प्रसारे, अन्त में आत्मिक शान्ति पाये।।
'जैना' द्वारा यह दिव्य संदेश, विश्व कल्याणार्थे हो प्रसारा।
मंगल कामना विश्व हेतु है, ब्रह्माण्ड में हो मंगल सारा।।(6)

(यह कविता "JAINA"अमेरिका (U.S.A.) के कारण बनी।)

ग्रन्थ की आवश्यकता

कः खलु नालं क्रियते,दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान्।
कण्ठास्थितया विमलप्रश्नोत्तररत्नमालिकया।। (2)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

दृष्ट-अदृष्ट अर्थ साधना में, जो होते हैं समर्थवान्।
वे क्यों न धारण करेंगे कण्ठ में, यह विमल प्रश्नोत्तर रत्नमालिका।(1)

समीक्षा-

जो प्रत्यक्ष-परोक्ष स्वहित साधन(में) रत, वे ही सही समर्थवान्।
वे अवश्य होते हैं नैतिक-सदाचारी व आदर्श ज्ञानवान्।।(2)

अन्यथा कोई न हो सकते है, प्रत्यक्ष-परोक्षहित साधन योग्य।
अतएव स्वहित साधन हेतु, नीति-सदाचार-ज्ञान ग्रहण योग्य।।(3)

सागवाडा-16-03-2018 अपराह्न-6.02

दोषग्राही दुर्जन-पतित व गुणग्राही सज्जन-महान्

(दुर्गुणीभी स्व-प्रशंसा चाहते हैं व सुगुणी की प्रशंसा से जलते हैं)

(चाल :- आत्मशक्ति... जिंदगी एक सफर...)

स्व-दोष जानना अति कठिन तथाहि परगुण परिज्ञान।
स्व-पर दोष गुण परिज्ञान से स्व-गुण बढाना अति कठिन।।
यथा आँख न स्वयं को देखती, देखती है पर को।
तथाहि मोही(जीवों) की होती बाह्य प्रवृत्ति देखते परदोष को।।(1)

दीपक यथा स्व-पर प्रकाशी होता तथाहि होते निर्मोही ज्ञानी।
स्व-पर दोष गुण ज्ञान से स्व-दोष दूर से बनते गुणी।।
मक्खी यथा गन्दगी चाहती तथाहि अज्ञानी-मोही।
राजहंज यथा क्षीरनीर भेद से क्षीर को पीता तथा निर्मोही ज्ञानी।।(2)

पानी यथा निम्नगामी होता तथाहि अज्ञानी-मोही।
दीपशिखा सम उर्ध्वगामी होते जो होते हैं निर्मोही-ज्ञानी।।
धोबी के समान परदोष ग्राही जो होते अज्ञानी-मोही।
वैद्य के समान दोष दूर करते जो होते निर्मोही-ज्ञानी।।(3)

मच्छर-जोंक व कौआ-बगुला सम होते हैं अज्ञानी मोही।
इन से परे गाय-मधुप सम, जो होते निर्मोही-ज्ञानी।।

विषम दर्पण सम होते दोषग्राही, समतल दर्पण सम गुणग्राही।
स्व-स्व-दोष गुणों के कारण, होते हैं दुर्गुणी व गुणी।।(4)
निर्मोही-ज्ञानी होते हैं सदा ''गुणगण कथा दोष वादेच मौनम्''।
अज्ञानी-मोही होते हैं सदा ''गुणगण मौनं दोषवादे च चपलम्''।।
इन सब कारणों से दोषी जीव होते हैं स्व-पर घातक।
स्व-दोष बढाते गुणी निन्दक ''पृष्ठमांस भक्षी सम निन्दक''।।(5)
पूजा-प्रार्थना-स्तुति-वन्दना-तीर्थयात्रादि है गुण प्रशंसा।
गुण प्रशंसा से गुणग्राही जीव होते प्रसन्न व बान्धते पुण्यकर्म।।
उक्त कारणों से गुणग्राही जीव गुणवृद्धि से बनते हैं महान्।
यथा गाय घास खाकर भी दूध देती है अमृत सम।।(6)
प्रकाश सम व सुगन्धी सम गुणग्राही होते स्व-पर उपकारी।
अन्धेरा सम व दुर्गन्ध सम गुणद्वेषी होते स्व-पर उपकारी।।
सुअर व कुत्ता सम होते हैं दोषग्राही स्व-दोष के कारण।
मधुमक्खी व भ्रमर सम होते है गुणग्राही स्व-गुण के कारण।।(7)
धुआँ सम होते हैं दोषग्राही स्वयं मलीन व फैलाते दोष।
चन्दन सम होते हैं गुणग्राही होते शीतल व सुवासीत।।
गुण प्रशंसा से भी दोषग्राही जीव ईर्ष्या से जल-भुन जाते।
स्व-दोषों की प्रशंसा भी नवकोटि से चाहते।।(8)
ऐसे जीव तो तीर्थंकर-बुद्ध-ईसा-सुकरात की भी निन्दा करते।
स्व-सत्ता-सम्पत्ति-भोगोपभोग फैशन-व्यसन की प्रशंसा करते।।
पक्षीणां काक चाण्डाल पशु चाण्डाल गर्दभ कहा नीतिकारों ने।
मुनिनां कोप चाण्डाल सर्व चाण्डाल निन्दक कहा उन्होनें।।(9)
मुनिनिन्दा से हुए श्रीपाल कुष्ठी अनुमोदना से सात सौ सैनिक।
मुनि के प्रणाम से उच्च गोत्र मिले स्तवन/(प्रशंसा) से मिले कीर्ति।।
ये सब मैंने ग्रन्थों में पढा व अनुभव कर रहा हूँ पूर्व से।
स्व-पर दोष गुण परिज्ञान से गुणवृध्दि करुँ 'कनक' सदा से।।(10)

नैतिक नियम का पालन न कर सको तो

(चाल : शत शत वन्दन...)

व्यायाम यदि न कर सको तो, शारीरिक श्रम तो सदा करना।
प्राणायाम यदि न कर सको तो, पैदल चलना मत भूलना।।(1)
ध्यान यदि न कर सको तो, टेंशन कभी भी मत करना।
अध्ययन यदि न कर सको तो गुणग्राही भी सदा बनना।।(2)
पूजा यदि न कर सको तो, पूज्यों प्रति भक्ति सदा रखना।
तपस्या यदि न कर सको तो, तृष्णा भाव को नहीं करना।।(3)
साधना यदि न कर सको तो, समता भाव सदा रखना।
पुण्य यदि न कर सको तो, पाप भाव भी नहीं करना।।(4)
सही नेता यदि न बन सको तो, राष्ट्रद्रोही भी मत बनना।
न्यायपति यदि न बन सको तो, अन्याय कभी भी मत करना।।(5)
गाय सम यदि न बन सको तो, सर्प सम भी मत बनना।
फूल यदि तुम बिछा न सको तो, काँटा कभी न बिछाना।।(6)
प्रेम यदि तुम दे न सको तो, घृणा भाव भी मत रखना।
प्रशंसा किसी की कर न सको तो, निंदा कभी भी मत करना।।(7)
अपना यदि न बना सको तो, भेदभाव भी मत करना।
ब्रह्मचर्य नहीं रख सको तो, कुशीलाचार भी मत करना।।(8)
गाना यदि न गा सको तो, गाली कभी भी मत देना।
प्रसन्न कभी न कर सको तो, दुःखी कभी भी मत करना।।(9)
मोक्ष की इच्छा यदि नहीं तो, क्षोभत भी मत करना।
निर्वाण की इच्छा यदि नहीं तो, निर्मम भी मत बनना।।(10)
सत्यमार्ग में न चल सको तो, असत्य मार्ग में मत जाना।
नदी पार न कर सको तो, नदी में भी मत डूबना।।(11)
सत्यासत्य का विवेक नहीं तो, विवकी की आज्ञा पालन।

विष मारने की विद्या नहीं तो, विषहर की आज्ञा मानना।(12)
रक्षा यदि न कर सको तो, कभी जीवों को मत मारना।
दान यदि न कर सको तो, दम्भ कभी भी मत करना।।(13)
धर्म यदि न कर सको तो, आडम्बर भी मत करना।
पानी यदि वर्षा न सको तो, बवन्डर भी मत करना।।(14)
ज्ञान यदि न कर सको तो, ज्ञानी से भी मत चिढ़ना।
शान्त यदि न रह सको तो, शान्त को भी न सताना।।(15)
मौन यदि न रह सको तो, झूठ भी कभी मत बोलना।
उपवास यदि कर न सको तो, कुखाद्य कभी भी मत खाना।।(16)
उपकार यदि कर न सको तो, अपकार भी मत करना।
पिला न सको यदि पानी तो, जहर कभी भी मत पिलाना।।(17)
बोल न सको हित बोल तो, कटु बोल भी मत बोलना।
पैर न यदि दबा सको तो, गला कभी भी मत दबाना।।(18)
क्षमादान न कर सको तो, विद्वेष कभी भी मत रखना।
दान यदि न कर सको तो, शोषण कभी भी मत करना।।(19)
औषधि दान न कर सको तो, प्रदूषण भी मत फैलाना।
पर्यावरण रक्षा न करो तो, वृक्षों को भी मत काटना।।(20)

सभी के लिए नैतिकाचार

(धार्मिक या अधार्मिक सबके लिए करणीय)

(सुख प्राप्ति के लिए धार्मिक या अधार्मिक के लिए करणीय)

(तर्जः परदेशियों से न अंखियाँ मिलाना...)

मानव चाहो यदि सुख है पाना, नैतिक कार्य पे सदा ही चलना।
किसी भी धर्म पंथ/(रूढ़ि) को मानो या न मानो, नैतिक सदाचार सदा ही पालना।।(टेक)
क्रोध मान माया लोभ न करना[2]... हित मित वचन बोलना...[2]।
हत्या व चोरी ठगी जूआ को त्यागना, पराई स्त्री से भोग न करना।।1।।

नशीली वस्तुओं का सेवन त्यागना....[2], मछली मांस व अडा को छोड़ना...[2]।
निरीह पशुओं की हत्या न करना, पर्यावरण की रक्षा भी करना।।2।।
विनम्र सदाचारी गुणग्राही बनना...[2], सत्य तथ्य को स्वीकार करना...[2]।
रोगी गरीबों की सहायता करना, माता पिता की सेवा भी करना।।3।।
मिलावट शोषण कभी न करना...[2], भ्रष्टाचारी प आतंकी न बनना...[2]।
दीन हीनों को कभी न सताना, विधर्मियों से भी द्रोह न करना।।4।।
अधर्मी विधर्मी कुधर्मी जनों से...[2], सुख व शान्तिमय जीवन बिताना...[2]।
किसी भी भाषा भाषी राष्ट्रों के जनों से, वैरत्व भाव भी कभी न रखना।।5।।
सरल सहज व प्रसन्न रहना...[2], सुख व शान्तिमय जीवन बिताना...[2]।
इसलिए तो सदा नैतिक रहना, उक्त विषयों को पालन करना।।6।।
क्रिया की प्रतिक्रिया होती है सभी में...[2],सुख हेतु सुख अन्य को देना...[2]।
विषमता से विषम उपजे हैं, समता भाव से समता को पाना।।7।।
जल व वायु सम ये सब नियम...[2], सुख व शान्ति से जीने के नियम...[2]।
देशी व विदेशी राजा व रंक के, धर्मी व अधर्मी सभी के हित के।।8।।
विभिन्न धर्म व विज्ञान पढ़ के...[2], राजनीति तथा कानून पढ़ के...[2]।
नीति नियम व स्व अनुभव से, सर्व हित हेतु ''कनक'' रचा ये।।9।।

महान् कार्यों में बाधक-साधक कारण

(चालः हल्दीघाटी में समर..., 2. शत शत वन्दन...)

दीर्घ अनुभव में पायो हैऽऽऽ, जो महान्ज्ञानियों ने गायो हैऽऽऽ
महान् कार्य में बाधक है..., संकीर्ण भाव-व्यवहार सभीऽऽऽ (ध्रु.)

संकीर्ण स्वार्थ या क्रोध मान ... ईर्ष्या घृणा या कम ज्ञान...
विद्वेष कलह व भेदभाव... वैर विरोध या नीचभाव...
अनुभव हीन व दीनभाव...परनिन्दा चुगली व अपमान...महान् कार्य में (1)
आलस्य प्रमाद व मिथ्यादान...किंकर्त्तव्य मूढ़ भ्रम भाव...
पर अपेक्षा उपेक्षा प्रतीक्षा... परावलम्बन व कुशिक्षा...

आत्म विश्वास हीन क्षुद्र भाव...अन्धानुकरण व कुण्ठाभाव..(न) महान् कार्य में (2)
कुद्रव्य क्षेत्र काल भाव काम...समायोजन रिक्त सभी काम...
सुनिमित्त उपादान रिक्त काम...पापोदय व क्षीण पुण्य...
नहीं हो पाते हैं कार्य महान्...यह आगम अनुभव प्रमाण...महान् कार्य में (3)
इसी से विपरीत कारणों से...महान् भाव व्यवहारों से...
सहयोग समन्वय पुण्य से...निमित्त उपादान योगों से...
होते हैं महान् काम सभी...'कनकनन्दी' चाहे योग्य सभी...महान् कार्य में (4)

(मोलेला, दिनांक 25 दिसंबर 2013, प्रातः 7.05)

नीति सुमनाञ्जली

(तर्जः छोटे छोटे शिष्य हैं लेकिन....)

खोटे ही छोटे होते आकार से नहीं, क्षुद्रता से क्षुब्ध होते उम्र से नहीं।
विवेकी ही ज्ञानी होते साक्षरी नहीं, सुभाव से धर्मी होते क्रिया से नहीं।
तृष्णा से दरिद्री होते अपरिग्रही नहीं, समता से साधु होते वेश से नहीं।
अकषायी अहिंसक है कायर नहीं, आत्मजयी विश्वजयी दिग्विजयी नहीं।
सत्य ही परमेश्वर वचन के नहीं, निर्लोभ ही शुचिता स्नान से नहीं।
सुगुणों से सुंदरता फैशनी से नहीं, नम्रता से महानता घमंड से नहीं।
समता से क्षमाधर्म क्षमावाणी नहीं, सहज ही सरलता जड़ता (अज्ञता) नहीं।
मनजयी संयमी है आलसी नहीं, तृष्णात्यागी तपस्वी है निराहारी नहीं।
आत्मजयी वीर होते बर्बर (क्रूर) नहीं, रक्षक ही शासक है पीड़क नहीं।
संतोष से ही सम्पन्नता सम्पत्ति से नहीं, भाव से संसार है ब्रह्माण्ड नहीं।
सत्य से न्याय है साक्षी से नहीं, सच्चा ज्ञान प्रमाण है फैसला नहीं।
अच्छी भावना प्रभावना है प्रसिद्धि नहीं, आत्मशक्ति धर्म है पंथ में नहीं।
पाप से पतन है त्याग से नहीं, भोगी से प्रदूषण है योगी से नहीं।
आप्त से आगम है परम्परा से नहीं, सच्चाई से आम्नाय है झूठ से नहीं।
आत्मनिष्ठ अनुयायी भीड़तंत्र नहीं, पुरुषार्थी प्राप्त करे धोखेबाज नहीं।
स्वविश्वासी धैर्यशाली बलशाली नहीं, सत्यनिष्ठ नम्रभावी चापलूस नहीं।

अनजान शंकालू प्रज्ञावान् नहीं, अल्पज्ञान से आश्चर्य है पूर्ण ज्ञान से नहीं।
आकार से नहीं महान् गुणवत्ता से सही, छोटे दीपक से भी अंधेरा भागता सही।

छोटे छोटे सदाचार नित्य ही पालो

(तर्जः 1. अच्छा सिला दिया... 2. छोटी छोटी गैया...)

छोटे छोटे सदाचार नित्य ही पालो, श्वास क्रिया सम इसे नित्य ही करो
छोटे छोटे बच्चों को प्यार करो, बड़े बड़े व्यक्ति का आदर करो,
दुर्गुणी दुर्जनों से दूर ही रहो, सुगुणी सज्जनों की संगति करो,
प्यास दूर करने हेतु पानी तो पियो, प्यास दूर करने हेतु विष न पियो।।
छोटे छोटे सदाचार....(1)

साक्षर बनो किन्तु राक्षस नहीं, सभ्यता संस्कृति त्याग भी नहीं,
आधुनिक बनो किन्तु उद्दण्ड नहीं, फैशनी व्यसनी मूढ़ बनो नहीं,
धार्मिक बनो किन्तु संकीर्ण नहीं, अन्धविश्वासी बनो भी नहीं।
छोटे छोटे सदाचार....(2)

भोजन करो किन्तु सात्विक करो, शाकाहार मिताहार हित भी करो,
बाते भी करो किन्तु सत्य भी बोलो, हित मित प्रिय वचन (बोल) सदा ही बोलो,
कार्य भी करो किन्तु उचित करो, प्रामाणिक अहिंसक समय पे करो।
छोटे छोटे सदाचार....(3)

कृषि व्यापार सेवा शिल्पादि करो, धर्म नीति सदाचार कभी न भूलो,
नेता न्यायधीश शासक पुलिस बनो, राष्ट्रहित मर्यादा दया न भूलो,
शिक्षक बनो ज्ञानी अनुभवी भी बनो, वात्सल्य ज्ञानदाता गुण भी बनो।
छोटे छोटे सदाचार....(4)

विद्यार्थी बनो किन्तु जिज्ञासु बनो, गुणग्राही सदाचारी विनम्र बनो,
स्वाध्यायी बनो अनुप्रेक्षा भी करो, अनुभवी आत्माकांक्षी व्यापक बनो,
छोटे छोटे सदाचार महत्व के है, 'कनकनन्दी' को ये गुण सदा भाते हैं।
छोटे छोटे सदाचार....(5)

उपादेय-हेय-व गुरु का स्वरूप

भगवन् किमुपादेयं, गुरुवचनं हेयमपि च किमकार्यम्।

को गुरुधिगततत्त्वः, सत्त्वहिताभ्युद्यतः सततम्।।(3)

पद्यभावानुवादः- (चालः-आत्मशक्ति.....)

है! भगवन् उपादेय क्या है? गुरुवचन है उपादेय।

हेय होता अकार्य गुरु होते हैं, तत्त्वज्ञ व सत्वहित में तत्पर।।(1)

समीक्षा-

गुरुवचन होते हैं उपादेय क्योंकि गुरु होते हैं तत्त्वज्ञ।

सर्व जीव हित साधन में तत्पर, अतएव गुरु वचन है उपादेय।।(2)

देय होता है अकार्य जो उक्त गुरु वचन से विपर्यय।

तत्त्वज्ञान व सत्त्वहित से रिक्त, वे सभी कार्य होते हेयभूत।।(3)

बहुरागीय गीत-
"करणीय एवं त्यजनीय"

(शान्तिप्रद भजनीय दुःखप्रद त्यजनीय)

(तर्जः इक प्यार का नगमा है....., चुपके-चुपके रात-दिन.....)

शुभ भावना करणीयम्...अशुभ भाव त्यजनीयम्।
सतत आत्म चिन्तनीयम्...स्व-दोष गुण स्मरणीयम्।।1।।

दोष समूह त्यजनीयम्...सुगुण गण/(सर्व) भजनीयम्।
हेय-उपादेय चिन्तनीयम्...उत्तम गुण वर्द्धनीयम्।।2।।

राग-द्वेष-मोह त्यजनीयम्...दुःख उत्पादक अतः हेय।
हेय सर्व दोष प्रद (म्)...सर्व उपादेय (है) गुण प्रद (म्)।।3।।

शान्ति कारक गुणज्ञेयम्...अशान्ति कारक दोष ज्ञेयम्।
स्व-पर हितकारी उपादेय...इससे विपरीत सर्व हेय।।4।।

सत्य समता उपादेय...इससे विपरीत सर्व हेय।

आत्म-उत्थानक गुणज्ञेय...आत्म विनाशक दोष हेय।।5।।

ईर्ष्या तृष्णा त्यजनीय...मलीन भाव वर्जनीय।
मद-मत्सर त्यजनीय...संक्लेश द्वन्द्व वर्जनीय।।6।।

सरल सहज क्षमाभाव...धैर्य संयम मृदुभाव।
दया सेवा करणीय...उदास सहिष्णु वरणीय।।7।।

ज्ञानानन्द वरणीय...आत्म भावे रमणीय।
'कनक' द्वारा भावनीय...पावन भाव पालनीय।।8।।

"सत्य एवं वचन-सत्य का विश्व रूप"

(रागः कसमें-वादे प्यार....., आपकी नजरों ने....)

हित-मित-प्रिय सत्य/(पथ्य)...कथन वचन/(वाचनिक) सत्य है।
सर्वोपकारी वचन हित...स्वल्प कथन मित है।।ध्रु.।।
मधुर साम्य सत्य कथन...आह्लादकारी प्रिय है।
क्रोध-मान-माया-लोभ रहित...मोह-काम से रहित है।।(1)

इसी से भिन्न वचन कथन/(कहना)...नहीं यथार्थ सत्य है।
देखा या सुना हुआ भी...पढ़ा या लिखा हुआ भी।(2)

सर्वोपकारी हित वचन...पापों से जो रहित हैं।
वही सर्वोच्च श्रेष्ठ वचन...हित-मित गौण है।।(3)

दयावन्त गुरु जब...समझाते शिष्यों को।
मित व प्रिय रहित...सत्य होता है सर्वोच्च।।(4)

अन्यथा मित प्रयोग...करणीय विधेय है।
असम्बद्ध प्रलाप भी...असत्य सम ही हेय है।।(5)

चाटुकार ठग वेश्या...कथित प्रिय वचन।
नहीं होता सत्य वचन/(कथन)...हित सत्य विरहित।।(6)

यदि सदा सम्भव हो...मौन गुप्ति धारणीय।
आत्मशान्ति कार्यसिद्धि...कर्मनाश करणीय।।(7)

धर्मनाशे क्रियाध्वंसे...सत्य तथ्य विलोपने।
बिना पूछे सत्य कहो...दोष नहीं है कथने।।(8)

सत्य पालन के लिए ही...सत्यधर्म सत्यव्रत।
भाषासमिति भाषागुप्ति...हित-मित-प्रिय वचन।।(9)

सत्य सदा ज्ञातव्य है...सत्य सदा धातव्य।
सत्य सदा कथनीय है...सत्य सदा पालनीय।।(10)

सत्य ही परम प्राप्य...सत्य सदा पूजनीय।
सत्य शिव सुन्दर है...सच्चिदानन्द है सत्य।।(11)

सत्यमय होता धर्म...सत्य परमेश्वर है।
सत्यमय होता ज्ञान...सत्यसम विज्ञान है।।(12)

न्याय व राजनीति...संविधान व समाज।
व्यापार कला कविता...सत्य से ही प्रतिष्ठित।।(13)

सत्य रहित पर्व ही...होते हैं अस्तित्वहीन।
अतएव 'कनकनन्दी'...माने सत्य सर्वश्रेय।।(14)

स्व-पर उपकारी गुरु

(चालः कभी तो ये गुरुवर....)

स्व-पर उपकारी...गुरु होते हैं...स्वयं तो तरते है...अन्य को तारते हैं...
ब्रह्मा-विष्णु-महेश...गुरु होते हैं...स्व-पर प्रकाशी...दीपक होते हैं...
तो ध्याऊँ मैं/(तो सेवूँ मैं)...स्व-पर...(टेक)...

सतत ये गुरुवर...समता में रहते हैं...आत्म विशुद्धि हेतु...साधना करते है...
ज्ञान-ध्यान व तप में...ये रत रहते है...राग-द्वेष-मोह से...ये दूर रहते हैं...
तो ध्याऊँ मैं...स्व-पर उपकारी...(1)...

ख्याति-पूजा-लाभ व...लंद-फंद, से... तेरा-मेरा भाव...धनी-गरीबों से...
तनाव-अशांति व...फूट-लूट से...दूर रहकर मस्त...आत्म-शुद्धि में...
तो सेवूँ मैं...स्व-पर उपकारी...(2)...

कभी ये गुरुवर...स्वाध्याय कराते हैं...आत्मा को परमात्मा...बनाना सिखाते हैं...
आगम व अनुभव से...धर्म सिखाते हैं...अशुभ-शुभ व...शुद्ध बताते हैं...
तो ध्याऊँ मैं...स्व-पर उपकारी...(3)...

कभी तो ये गुरुवर...उपदेशी बनते हैं...उदार-पावन का...पाठ पढ़ाते हैं...
विश्व हितकर...शिक्षा भी देते हैं...समता व शांति का...पाठ पढ़ाते हैं...
तो सेवूँ मैं...स्व-पर उपकारी...(4)...

सदैव श्री गुरुवर...सत्य शोध करते हैं...शोध-बोध से...आत्म-शुद्धि करते हैं...
स्वयं तरते हैं...अन्य को तारते हैं...ऐसे ही सद्गुरु...'कनक' को भाते हैं...
तो ध्याऊँ मैं...स्व-पर उपकारी...(5)...

साधक हूँ छोटा-लक्ष्य है मोटा

-आचार्य कनकनन्दी

(चालः नन्हा-मुन्ना राही हूँ....)

साधक हूँ मैं छोटा, लक्ष्य है पर मोटा।
अभी तो हूँ अल्पज्ञ, पर लक्ष्य है सर्वज्ञ।।
श्रद्धा के साथ...निष्ठा के साथ हूँ...(धृ.)

इसी हेतु ही मैं करूँ साधना, जिनवाणी की (मैं) करूँ आराधना।
एंकात मौन व साम्य भाव से, शोध-बोध करूँ मैं शुद्ध भाव से।
धैर्य के साथ...ध्येय के साथ हूँ।।(1)

सनम्र सत्यग्राही उदारमना, निःस्वार्थ भाव से ही (मैं) करूँ साधना।
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि रिक्त, स्वाध्याय अध्यापन करूँ सतत।
श्रद्धा के साथ...निष्ठा के साथ हूँ।।(2)

अपेक्षा-उपेक्षा व प्रतीक्षा रिक्त, आर्कषण-विकर्षण-संक्लेश रिक्त।
संकीर्ण पंथ-मत भेद रहित, आत्मविशुद्धि करूँ (मैं) कामना रिक्त।
धैर्य के साथ...ध्येय के साथ हूँ।।(3)

किसी से न वैरी न किसी से द्वेषी, प्रतिस्पर्द्धा दिखावा ढ़ोंग रहित।

निन्दा चुगली वाद-विवाद रिक्त, साधना करूँ मैं शक्ति-भक्ति सहित।
श्रद्धा के साथ...निष्ठा के साथ हूँ।।(4)

मंच माईक विज्ञापन पाण्डाल रिक्त, सम्मान भीड़ व धन रहित।
निमंत्रण कार्ड (पत्रिका) टी.वी. प्रोग्राम रिक्त, सरल सहज निस्पृहता सहित।
धैर्य के साथ...ध्येय के साथ हूँ।।(5)

कोई (भी) आये आशीर्वाद वात्सल्य युक्त, नहीं आने पर नहीं संक्लेश चित्त।
जाने पर (शुभ) कामनायें आशीष युक्त, वीतरागी साम्यभावी शान्ति सहित।
श्रद्धा के साथ...निष्ठा के साथ हूँ।।(6)

लक्ष्य मेरा सतत है आत्मकेन्द्रित, आत्मविशुद्धिमय प्रमाण युक्त।
यथायोग्य लक्ष्य की ओर प्रयाण करूँ, 'कनकनन्दी' सतत मैं आत्मा निहारूँ।
धैर्य के साथ...ध्येय के साथ हूँ।।(7)

मै ही लक्ष्य हूँ मैं ही साधन हूँ, मैं ही साधक हूँ मैं ही साध्य हूँ।
मैं ही उपासक मैं ही उपास्य हूँ, मेरे द्वारा ही मैं ही प्राप्य हूँ।

भक्तजन के उपकारी गुरु-गुरु का दाता स्वरूप

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल: कभी तो ये गुरुवर....., सायोनारा....)

परम उपकारी...गुरु होते हैं...ज्ञान-ध्यान (तप) में...वे लीन होते हैं...
आप तरते है...भव्यों को तारते हैं...दीपक सम स्व-पर प्रकाशी होते हैं...
तो ध्याऊँ/(पूजूँ)/(सेवूँ) मैं...परम उपकारी...(टेक)...

भक्त वत्सल वे...दाता होते हैं...बिना माँगे वे...दान देते हैं...
आहारदाता तो...पुण्य पाते हैं...नमनकर्त्ता...उच्च गोत्री होते हैं...
तो सेवूँ मैं...परम उपकारी...(1)...

उपासक जन तो...पूज्य होते हैं...स्तुति जो करे...वे कीर्ति पाते हैं...
वैयावृत्ति से...तीर्थंकर बनते हैं...औषधिदान से...निरोगी होते हैं...
तो सेवूँ मैं...परम उपकारी...(2)...

ज्ञानदानी तो...ज्ञानी होते हैं...वसतिका दान से...स्वर्ग पाते हैं...
भक्त-सेवक...छटवाँ अंश पाते है....अहेतुक रूप से...गुरु दाता होते हैं...
तो पूजूँ मैं...परम उपकारी...(3)...

उपदेश देकर...भव्यों को तारते हैं...बिना उपदेश से भी...शिक्षा देते हैं...
ऐसे गुरु को...भव्य सदा सेवते...ऐसे गुरु का...ध्यान 'कनक' करते...
तो ध्याऊँ मैं...परम उपकारी...(4)...

सर्वोदयी चार भावनाएँ

(चाल: 1.शत-शत वन्दन.... 2.सायोनारा.... 3. रघुपति राघव...)

सभी जीवों में मैत्री भावना, गुणी जीवों में हो प्रमोद।
दुःखी जीवों में हो करुणा भाव, विपरीत में (हो) माध्यस्थ भाव।।धृ.।।
ऐसा ही सर्वज्ञों ने भी कहा, आचरण भी उन्होंने किया।
स्व-पर विश्व के हित के लिए, आचरण योग्य सभी को कहा।।
अनेक रहस्य इनमें भरे है, इह परलोक हितकारी भी है।
अहिंसा उदारता गुण ग्राहकता, समता, शान्ति, सेवा सहित है।।
मन-वचन-काय-कृत-कारित से, अनुमत रूप से सभी जीव में।
अदुःख जननी वृत्ति मैत्री भावना, अहिंसा उदारता सभी जीव में।।
गुणी जीवों में प्रमोद भावना से, गुण ग्रहण नम्र भाव होता।
जिससे सुगुण भी विकास होते, आदर-पूजनीय स्व-पर होते।।
दुःखी जीव प्रति करुणा होने से, सेवा सहयोग सहज होते।
दयादत्ति व परोपकार से, दुःखी जीवों के दुःख हरते।।
दुष्ट दुर्जन व पापी जो होते, उनसे माध्यस्थ भाव से।
राग-द्वेष-घृणा-मोह न होते, वैर विरोध क्लेश न होते।।
इसी से पाप न बन्ध होते, स्वयं न पापी इससे बनते।
पूर्व पाप भी विनष्ट होते, समय शान्ति न विनष्ट होते।।
इन सब भावों से विकास होता, तन-मन व आध्यात्मिक का।
इह पर व मोक्ष सुख मिलता, ''कनक'' चारों ही भावना भाता।।

शीघ्र करने योग्य कर्त्तव्य व मोक्ष-बीज

त्वरितं किं कर्त्तव्यं, विदुषा संसारसन्ततिच्छेदः।

किं मोक्षतरोर्बीजं, सम्यग्ज्ञानं क्रियासहितम्।। (4)

पद्यभावानुवादः-(चालः-आत्मशक्ति...)

त्वरित करने योग्य विद्वानों को, वह है संसार सन्ततिच्छेद।
मोक्ष तरुके बीज क्या है ? सम्यग्ज्ञान क्रियासे सहित।।(1)

समीक्षा-

अनादि कालसे अनन्तभवोंसे, हर जीव ने किया है अनन्तकुकार्य।
किन्तु संसार च्छेद का कार्य नहीं किया है संसारी जीव एक भी बार।।(2)
संसार सन्ततिच्छेद एक बार जब होता जीव बनते हैं शुद्ध-बुद्ध।
अनन्तज्ञान-दर्शन-सुख-वीर्य को पाकर, जीव बन जाते हैं कृतकृत्य।।(3)
पुनः कोई कार्य शेष न रहता, जन्म-मरण से ले सुख-दुःख।
अतएव संसारच्छेद का कार्य, विद्वानोंको करना चाहिए शीघ्र।।(4)
ऐसा मोक्ष प्राप्तिके लिए चाहिए, सम्यग्ज्ञान सदाचारसे युक्त।
यह ही परम उपादेय है अन्य सभी कार्य होते कुकार्य व हेय।।(5)

उजाले की ओर

मेरी सबसे बेशकीमती चीजों मे से एक वे शब्द है, जो मैंने कभी बोले ही नहीं।

-ऑर्सन स्कॉट कार्ड, अलोचक

जिसका शरीर, मन और भाषा संयमित होती है वह खुद ही परमात्मा बन जाता है।

दादा भगवान्, आध्यात्मिक गुरु

जब शक्ति से संयम और सौजन्यता मिला दी जाती है तो ऐसी शाक्ति अजेय हो जाती है। **-महात्मा गांधी**

जब तक हम अपने आप को पूरी तरह खो न दें तब तक खुद को पाने की कोई उम्मीद नहीं होती। **-हेनरी मिलर, लेखक**

कड़ाई से अपनाए संयम को हटा दीजिए फिर देखिए सारे गुणों का क्या होता है ? **-सेनेका, रोमन दार्शनिक**

संयम व अनुशासन और गुणों तथा न्याय के उदाहरण, बस यही तो वे चीजें है, जो दुनिया की शिक्षा का मूल है। **-एडमंड बर्क, राजनीतिक सिद्धांतकार**

लगातार संयम और अनुशासन अपनाकर कोई भी व्यक्ति चरित्र की महानता हासिल कर सकता है। **-ग्रेनविले क्लैसे, प्रेरणादायी पुस्तकों के लेखक**

आत्म-संयम ही ताकत है। सही विचार है महारत। शांति ही प्रभाव और सत्ता है। **-लेटीटिया एलिजाबेथ लंडन, कवयित्री**

संयम ही सौंदर्य का अधिक अच्छा हिस्सा है।

-जैम्स एलन, सेल्फ हेल्प मूवमेंट के प्रवर्तक

आत्म-संयम ही आमोद-प्रमोद का स्वर्णिम सूत्र है।

-लेटीटिया एलिजाबेथ लंडन, कवयित्री

नैतिक संस्कृति का सर्वोच्च संभव उत्कर्ष यही होगा जब हम समझ लेंगे कि हमें अपने विचारों को संयम में रखने की आवश्यकता है। **-चार्ल्स डार्विन,वैज्ञानिक**

किसी के बोर होने का रहस्य यह है कि किसी को भी सब कुछ बता देना।

-वोल्टेयर,दार्शनिक

सहज V/S दुर्लभ

(सहज ही दुर्लभ क्यों है?)

(सहज आत्मिक गुण प्राप्त करना दुर्लभ क्यों!?)

(चाल :- 1.सायोनारा... 2.आत्मशक्ति.... 3. तुम दिल की....)

आत्मविश्वास सब से सहज है, स्व-आत्म स्वभाव होने से।
किंतु अज्ञानी हेतु होता दुरूह, मोह से भ्रमित होने से।।
आत्मज्ञान तो सबसे सहज है, स्वयं ही ज्ञानरूप होने से।
किंतु रागी-द्वेषी-मोही कुज्ञानी रहता, आत्म-रूचि/(श्रद्धा) न होने से।।(1)

आत्मानुचरण सब से सरल है, स्वयं का आचरण होने से।
आत्मविश्वास ज्ञान बिन आचरण, न होता राग-द्वेष युक्त होने से।।
आत्मविकास तो सबसे सहज है, आत्मा में अनंत शक्ति होने से।
आत्मविश्वास ज्ञान आचरण बिन, विकास न होता प्रमाद युक्त होने से।।(2)
आत्मसुख तो सबसे सहज, आत्मा में अनंतसुख होने से।
किंतु आत्मिक सुख मिलना कठिन है, विकार भाव होने से।।
उत्तम क्षमा सरल-सहज है, क्षमा आत्मा का गुण होने से।
किंतु क्षमा भाव धारण कठिन है, क्रोध से क्षोभित होने से।।(3)
मृदुता-सरलता-शुचिता-सत्य निष्ठा, प्रामाणिकता आदि आत्म गुण है।
अतः इन्हें पाना सहज होने पर भी, मान-माया-लोभादि से दुर्लभ है।।
किंतु अंध श्रद्धा अविवेकपना, कुआचरण आदि अनात्म भाव है।
तथापि ये सब सरलता से होते, आत्मिक शक्ति/(शुद्धि) अभाव से।।(4)
अनादि कालीन कर्म परतंत्रता से, जिसकी आत्मशक्ति (शुद्धि) होती क्षीण।
वे आत्म-स्वभाव को सरलता से न पाते, विभाव भाव में होने से।।
ऊर्ध्वगति करना जीवों का स्वभाव, तथापि ऊर्ध्वगति न सरल है।
शुद्ध जीव की गति होती है उर्ध्व, शुद्ध में अनंतशक्ति प्रगट है।।(5)
अतः स्व-शक्ति प्राप्त करने हेतु, परम शुद्ध होना अनिवार्य।
विकार भाव संपूर्ण नष्ट से, परमशुद्ध होता है जीव।।
शुद्धता से शक्ति प्रगट होती, जिससे मिलती सभी उपलब्धि।
आत्मोपलब्धि प्राप्ति के हेतु, साधना रत है 'कनकनंदी'।।(6)

विकृति को त्यागकर संस्कृति को पाले धार्मिक जन

(जैन धर्मावलम्बियों के लिए आह्वान)

(तर्जः छोटी-छोटी गैया.....)

आज धार्मिक जनों को क्या हो गया, धर्म से विपरीत जीवन हो गया।
कभी दीपक नीचे तम होता था, आज बल्ब के ऊपर अन्धेरा हो गया।।1।।

वीतरागी धर्मी वित्तरागी हो गये, अनेकान्त धर्मी संकीर्ण हो गये।
आत्मकल्याण मार्ग से च्युत हो गये, परमार्थ स्थान में स्वार्थी हो गये।।2।।
भेद-विज्ञानी न हो भेद-भावी हो गये, अपरिग्रह छोड़कर संग्रही हो गये।
स्याद्वाद्व छोड़कर मिथ्यावादी हो गये, जिनवाणी (को) त्यागकर जनवादी हो गये।।3।।
सिद्धान्त रहित शंकाशील हो गये, गुणग्राही न होकर गुणद्वेषी हो गये।
क्षमाभाव रहित क्षमावाणी हो गई, आत्मदृष्टि बदले दोषदृष्टि हो गई।।4।।
मोक्षलक्ष्मी बदले धनलक्ष्मी पूजते, द्रव्य अंहिसा हेतु भावहिंसा करते।
दूरदर्शन में रुचि आत्मदर्शन बिना, पढ़ाई में रुचि धर्मज्ञान के बिना।।5।।
धर्म भी करते आज धन निमित्त, धर्म के पहले करते धन अर्जित।
धन से कर्म का आज करते मूल्य, धन बिना सच्चा धर्म होता अमूल्य।।6।।
आत्मशान्ति विरहित धर्म हो गया, दिखावा के लिए सब धर्म हो गया।
धनजनमान हेतु करते धर्म, ज्ञान वैराग्य विरहित करते धर्म।।7।।
'न धर्मों धार्मिकेः' बिना यह स्वभाव/(सिद्धान्त), इसीलिये जैनियों का नहीं प्रभाव।
वैश्विक धर्म आज क्षीण हो रहा, इसीलिये 'कनक' को दुःख हो रहा।।8।।
दोष निवारण हेतु यह रचना हुई, धर्म प्रभावना हेतु कविता हुई।
द्वेष-घृणा-दृष्टि मेरी नहीं है, संस्कृति को पाले सब भाव यही है।।9।।

सही शिक्षा पद्धति से लाभ तो गलत पद्धति से हानि

(चाल :- 1.आत्मशक्ति... 2.सायोनारा.....)

अस्त-व्यस्त व संत्रस्त जीवन से, छात्रों का न होता सही विकास।
मस्त-व्यस्त व स्वस्थ आनंद से, छात्रों का होता सही विकास।।
पालन-पोषण, प्यार-दुलार व, खेल-कूद व मनोरंजन से।
भ्रमण-व्यायाम प्राणायाम-योगासन व विश्राम-शयन से।।(1)
संस्कार सदाचार व महापुरुषों, के आदर्श जीवन से।
कविता-नाटक उदाहरण व, दृष्टांत चित्रों के माध्यम से।।
शुध्द शाकाहार व फल-सब्जी, दूध-मेवा आदि भोजन से।
तन-मन-इंद्रियों को स्वास्थ्य करना, अनुकूल वातावरण से।।(2)

पांच वर्ष के अनंतर ही, शिक्षा हेतु विद्यालय भेजना योग्य।
दबाव-भय-प्रलोभन-प्रतिस्पर्द्धा, रहित शिक्षा पाने योग्य।।
ट्यूशन-होमवर्क आदि के कारण, तनाव-उदास नहीं योग्य।
स्कूल की पढाई व समय सारीणी के, कारण निद्रा में कमी नहीं योग्य।।(3)

प्रसन्न चित्त व मुक्त वातावरण में, एकाग्र चित्त से अध्ययन योग्य।
तोता रटंत व नकलची शिक्षा परे, शोध-बोध-प्रयोग होना योग्य।।
जीवन उपयोगी शिक्षा चाहिए, जिससे जीवन हो आदर्शमय।
केवल सत्ता-सम्पत्ति-डिग्री हेतु जो, शिक्षा होती वह न आदर्शमय।।(4)

स्वाभाविक रूप से जो कली खिलती, उस से बनता है सही फूल।
सुंदर व विकसित बनता सुयोग्य, फूल से ही विकसित होता फल।।
तथाहि शिक्षा होनी चाहिए, सहज-सरल व जीवन योग्य।
अन्यथा शिक्षा से न होता सही लाभ, अतएव 'कनक' बनाया काव्य।।(5)

पाथेय-शुचि-पण्डित-विष

किं पथ्यदनं धर्मः कः शुचिरिह यस्य मानसं शुध्दम्।
कः पण्डितो विवेकी, किं विषयवधीरिता गुरवः।। (5)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

धर्म ही होता है पाथेय जिसका मन शुद्ध वे होते हैं पावन।
विवेकी ही होते हैं पण्डित गुरु का तिरस्कार होता है विष।।(1)

समीक्षाः

मोक्षमार्ग में पाथेय है धर्म यथा पथिक हेतु होता भोजन।
भोजन बिना क्षुधा-तृष्णा से युक्त पथिक न पहुँच पाता गन्तव्यस्थल।।(2)
तथाहि धर्म है भोजन जीव हेतु, जिससे जीवों को मिले आध्यात्मबल।
इस बल से मुमुक्षु जीव संसार पारकर पाते हैं स्व-मोक्ष स्थल।।(3)
मन शुद्धि से जीव बनते पावन, मनशुद्धि बिन देव भी अपावन।
मन शुद्धि सम्यक्त्व से कुत्ते भी बनते देव, मन शुद्धि बिन देव का पतन।।(4)

हिताहित परिज्ञान से होते है विवेकी, विवेकी जन ही होते पण्डित।
तोता सम ग्रन्थ रटन्त मात्र से विवेक बिन कोई न होता पण्डित।।(5)
गुरु होते हैं पंचपरमेष्ठि गुरु ही ब्रह्मा-विष्णु-व महेश।
गुरु का तिरस्कार विष के समान, जिससे होता है आत्मिकनाश।।(6)
इसके उदाहरण है साठ हजार लोग, गुरु की निन्दा से जल मरे।
श्रीपाल व सात सौ वीर कुष्ठी बने, राजा श्रेणीक भी नरक गये।।(7)

कुभाव-व्यवहार होना सरल

(कुभाव-व्यवहार त्याग से ही विकास)

(चाल : आत्मशक्ति)

राग द्वेष मोह काम क्रोध में संसारी जीव होते हैं प्राचार्य।
इसे सिखाने के लिए उन्हें नहीं चाहिए कोई आचार्य।।
ईर्ष्या तृष्णा घृणा व संकीर्ण स्वार्थ में संसारी जीव होते हैं दक्ष।
इसे सिखाने के लिए उन्हें नहीं चाहिए कोई प्रशिक्षण।।(1)
आहार निद्रा भय मैथुन में संसारी जीव होते है प्रशिक्षित।
इसे सिखाने के लिए उन्हें नहीं चाहिए कोई पुस्तक।
हिंसा झूठ चोरी कुशील व परिग्रह में संसारी जीव होते हैं मास्टर।
इसे सिखाने के लिए उन्हें नहीं चाहिए कोई विद्यालय।।(2)
अहंकार-ममकार परनिन्दा/(परहानि) अपमान में संसारी जीव होते है शिक्षित।
इसे सिखाने के लिए उन्हें नहीं चाहिए कोई निर्देशक।
पापभाव व पापकाम में संसारी जीव होते हैं अभ्यस्त।
इसे सिखाने के लिए उन्हें नहीं चाहिए कोई ग्रन्थ।।(3)
अनादि कालीन कर्म संस्कार से उक्त भाव-काम होते सरल।
(किन्तु) उक्त भाव-व्यवहार से भिन्न अच्छे भाव-व्यवहार होते दुर्लभ।।
इस हेतु, चाहिए सुद्रव्यक्षेत्रकाल भाव व सुयोग्य प्रशिक्षित शुरु।
आत्म विश्लेषण व आत्म सुधार से अच्छे भाव-व्यवहार होते शुरू।।(4)

आत्म संयम व ध्यान-अध्ययन से सुभाव-व्यवहार में होती वृद्धि।
दृढ़ संकल्प व आत्म शुद्धि से सुभाव-व्यवहार में वृद्धि होती जाती।
इससे ही व्यक्ति से लेकर समाज-राष्ट्र में होता है विकास।
सर्वांगीण विकास हेतु कनक (नन्दी) को मान्य आध्यात्मिक विकास।।(5)

संसार में सार

किं संसारे सारं बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव।

मनुजेषु दृष्टतत्वं स्वपरहितायोघतं जन्म।।(6)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

बहुत बार चिन्तनसे जो ज्ञात होता है संसारमें सार।
मनुष्य जन्म प्राप्त करके स्व-पर-हितमें उद्यमशील।।(1)

समीक्षाः

जन्म-मरण तो अति सुलभ है, तथाहि भोगोपभोग करना।
राग-द्वेष-मोह से आक्रान्त होकर, विवाह से ले वैभव पाना।।(2)
आक्रमण युद्ध अन्याय-अत्याचार से सत्ता-सम्पत्ति पाना।
ये सभी नहीं है संसारमें सार ख्याति-पूजा-लाभ आदि पाना।।(3)
स्व-पर हित साधन करना यह है संसारमें सारभूत।
इस हेतु ही चक्रवर्ती तक वैभव त्यागकर बनते निर्ग्रन्थ सन्त।।(4)

मोहजनक-चोर-भववल्ली-शत्रु

मदिरेव मोहजनकः कः स्नेहः के च दस्यवः विषयाः।

का भववल्ली तृष्णा को वैरी नन्वनुद्योगः।।(7)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

मदिरा के समान मोहजनक है स्नेह चोर होता है विषयभोग।
तृष्णा होती है संसार की लता, पुरुषार्थहीन होता शत्रुसम।।(1)

समीक्षाः

मोहासक्त जीव मद्यपी से भी अधिक होता है मदमस्त।
मद्य का नशा तो कुछ क्षण में उतरता मोहमद तो अनन्त तक।।(2)
चोर यथा भौतिक वस्तु चोरी करता, विषय भोग तथा आत्म वैभव।
संसार की लता होती है तृष्णा, तष्णा से बढती संसार की लता।।(3)
शत्रु यथा हानि पहुँचाता पुरुषार्थहीनता से होता है तथा।
पुरुषार्थ ही बनता है दैव (पुण्य) मोक्ष प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ विधाता।।(4)

भय-अन्धा-शूर

कस्माद्भयमिह मरणादन्धादपि को विशिष्यते रागी।

कःशूरो यो ललनालोचन बाणैर्न च व्यथितः।।(8)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

मरण से भयभीत है संसारी जीव, अन्धों से भी महाअन्धा होते रागी।
शूर वह है जो ललनाओं के नयन बाणों से न होते प्रभावी।।(1)

समीक्षाः

मोही अज्ञानी रागी संसारी जीव जो मानते शरीर को स्व-स्वरूप।
वे सब भयभीत होते मृत्यु से वे न जानते आत्मा का अमर स्वरूप।।(2)
अन्धों से भी महाअन्ध होते हैं रागी उनमें न होता हिताहित विवेक।
अन्धे तो केवल भौतिक वस्तु नहीं देखते रागान्ध न देखते हित-अहित।।(3)
काम विजयी होते (हैं) महान् शूर त्रिलोक विजयी काम विजयी होने से।
युद्ध विजयी भी होते (हैं) काम से पराजीत अतः वे न होते शूर-वीर।।(4)

उजाले की ओर

साहस के बिना आप किसी और गुण को व्यवहार में नहीं ला सकते। आपमें भिन्न प्रकार के साहस होने चाहिएः सबसे पहले बौद्धिक साहस हो ताकि तय कर

सकें कि कौन-सा मूल्य आपके लिए उचित है। जो मूल्य चुना है उस पर डटे रहने के लिए नैतिक साहस चाहिए-फिर सामने कोई भी बाधा, क्यों न हो। **-इंदिरा गांधी**

मैंने सीखा है भय का अभाव साहस नहीं है बल्कि भय पर जीत साहस है। बहादुर वह नहीं है जिसे डर नहीं लगता, बल्कि वह है, जिसने डर को जीत लिया है। **-नेल्सन मंडेला**

कोई आपसे गहराई से प्रेम करें तो इससे आपको शक्ति मिलती है, जबकि आप किसी को गहराई से चाहें तो आपको साहस मिलता है।

-लाओ त्सु, चीनी दार्शनिक

टीम वह है जिसमें कोई नया लड़का भी अपने बल पर अपना साहस सिद्ध कर सकता है। एक गैंग वह है जहां कायर छिपने के लिए जाते हैं।

-मिकी मैंटल, अमेरिकी बेसबॉल खिलाड़ी

हर व्यक्ति के भीतर बुनियादी शालीनता और अच्छाई होती है। यदि वह इसकी सुनता है, वह बहुत कुछ वैसा हो जाता है, जिसकी इस दुनिया को बहुत आवश्यकता है। यह जटिल नहीं है पर अपने भीतर की अच्छाई की सुनकर उसके अनुसार काम करने में साहस लगता है।

-पाब्लो कैसल, संगीतकार, कैटेलोनिया, स्पेन

प्रसन्नता का रहस्य है स्वतंत्रता, आजादी....और आजादी का रहस्य है साहस।

-थुसीडीडीज, इतिहासकार

आपके साहस के अनुपात में आपकी जिंदगी सिकुड़ती अथवा फैलती है।

-अनैस नीन, लेखिका

साहस भीषण दबाव के बीच व्यक्त गरिमा है।

-अर्नेस्ट हेमिंग्वे, लेखक

आपने क्या हासिल किया इससे सफलता नहीं आंकी जाती बल्कि अत्यधिक विपरीत परिस्थिति में आपने जो साहस बनाए रखा उससे कामयाबी का आकलन होता है। **-ओरिसन स्वेट मार्डन, मोटिवेशनल स्पीकर**

''सप्त भय रहित एवं भय सहित''

(अपाप भीरु के लिए दंड विधान)

(रागः जय हनुमान.....,तुम दिल की धड़कन....)

सप्त भय रहित आत्मस्वभाव.... जन्म जरा मृत्यु रहित भाव।
इह परलोक आकस्मिक वेदना.... मरण अरक्षा अगुप्ति रहित।।ध्रु.।।

इसी अवस्था को पाते वे जन.... आत्मविश्वासी होते जो जन।
वे भी पापों से होते भयभीत....संसार भ्रमण से होते भयभीत।।

पापों से भयभीत जो नहीं होते.... वह अयोग्य काम अधिक करते।
यथा रावण कंस दुर्योधन लादेन....पापभीरु न थे वे दुर्जन।।(1)

जो पापभीरु नहीं होते हैं....अन्याय अत्याचार वे करते हैं।
क्रूर कठोर हिंसक होते हैं....ईर्ष्या द्वेष घृणा करते हैं।।

इन्हीं के लिए दण्ड विधेय....सामाजिक न्याय दण्ड विधेय।
अन्यथा मत्स्यन्याय होयेगा....सर्वत्र अत्याचार फैलेगा।।(2)

रोग चिकित्सा सम दण्ड विधेय....परिशोधन हेतु दण्ड विधेय।
प्रतिशोध रहित होना चाहिए....द्वेष घृणा से रिक्त चाहिए।।

आदर सहित भय विधेय....गुरु गुणी से विनय/(भय) विधेय।
इसी से अनुशासन पलता....मर्यादित कार्य भी होता।।(3)

प्रायश्चित्त विधान साधु के लिए....दोष परिहार के लिए।
आत्मानुशासन जो नहीं करते....उनके लिए प्रायश्चित्त होते।।

पापभीरु होते आत्मानुशासी.... व दृढ़ होते आत्मविश्वासी।
आत्मानुशासन ही श्रेष्ठ शासन.... 'कनक' मान्य है आत्मानुशासन।।(4)

मेरी भय एवं निर्भय की साधना

(चालः 1. जननी जन्म भूमि स्वर्ग से महान्....(बंगला) 2. रघुपति राघव.... 3. इक परदेसी मेरा.... 4. छोटी-छोटी गैया....)

सतत हो भय मुझे तुच्छ/(मिथ्या, खोटे) भाव से।
निर्भय बनूँ मैं सदा उच्च/(उदार, सत्य, अच्छे) भाव से।।
कोई न माने बोले कुछ नहीं भय हो।
सत्य समता से (में) सदा निर्भय हो।।
पर निन्दा पर पीड़ा से मुझे भय हो।
भय न लगे कभी स्व-पर हित से/(में)।।
भय लगे मुझे सदा तुच्छ स्वार्थ से।
निर्भय बनूँ सदा आत्म स्वार्थ/(आत्मसिद्धि) से/(में)।।
ईर्ष्या द्वेष घृणा से मुझे भय हो।
क्षमा (व) मृदुता से/(में) नहीं डर हो।।
आडम्बर ढोंग पाखण्ड से मुझे डर हो।
सादा सीधा भोला-भाव से नहीं भय हो।।
भेड़-भेड़िया चाल से मुझे भय हो।
सनम्र सत्यग्राही से नहीं भय हो।।
प्रकाश न डरे कभी अन्धकार से।
आध्यात्मिक ज्योति से भय नहीं हो।।
सत्य मानूँ भले मैं बोलूँ न बोलूँ।
वाद-विवाद व लिखूँ न लिखूँ।।
सत्य-समता-शान्ति सर्वोपरि हो।
संकीर्ण कट्टर रूढ़ि भाव नहीं हो।।
निर्भय निराकुल निर्द्वन्द्व मैं रहूँ।
''कनकनन्दी'' सदा आत्मा में रहूँ/(रमूँ)।।

'कामांध जीव करते हैं अनेक अनर्थ काम'

(ब्रह्मचर्य से परम ब्रह्म की उपलब्धि)

-आचार्य कनकनंदी

(चालः छोटी-छोटी गैया....)

अंधे से भी अधिक अंधे है, जो होते है कामांध।
चुक्ष से अंधे न देखते दृश्य, स्वहित भी न देखे कामांध।।(1)
कामांध जब होता कोई भी जीव, मदमस्त/(उत्तेजित) होता है एस्ट्रोजन से।
फेरमोन से भी होता प्रभावित, विवेक व धैर्य खोता टेस्टास्टेरन से/
(आक्रामक भी होता टेस्टास्टेरन से)।।(2)
वेदकर्म-मोहनीय कर्म के कारण, होता है अधिक कामांध।
जिससे उत्तेजित व विवश होकर, करता है विभिन्न अनर्थ काम।।(3)
पुंवेद-स्त्रीवेद व नपुंसक वेद से, जब होते है कोई प्रभावित।
स्त्री पुरुष व उभयलिंगी से, होते हैं वे क्रमशः आकर्षित।।(4)
आर्कषण होता है राग-भाव से, जहाँ राग वहाँ होता है द्वेष।
राग व द्वेष दोनों के कारण, होता है आर्कषण व विर्कषण।।(5)
अनादि कालीन कर्म संस्कार से, संसारी हर जीव होते इससे आक्रांत।
सूक्ष्म एकेंद्रिय जीव से लेकर, मनुष्य-पशु-पक्षी-देव तक।।(6)
इन सब कारणों से कामांध जीव, करते हैं अनेक अनर्थ काम।
दबाव-प्रलोभन-भय-आक्रमण, युद्ध हत्या से लेकर संभोग काम।।(7)
कामांध की दृष्टि से मानव नर-नारी, नहीं होते श्रेष्ठ पशु-पक्षी से।
पशु-पक्षी से भी नीच काम करते, बलात्कार से लेकर हत्या तक।।(8)
आयु-प्रजाति व रक्त-संबंध आदि, सीमा को भी लाँघ जाता कामांध।
मदमस्त हाथी से भी अधिक करता, संभोग से लेकर भ्रूण हत्या तक।।(9)
परस्त्री गमन वेश्या गमन करना, शील-सदाचार-मर्यादा रिक्त।
एड्स रोग से प्राणदंड तक भी पाता, मरकर नरक में महाकष्ट भोगता।।(10)

इन सब अनर्थ से बचने के लिए, ब्रह्मचर्य महाव्रत सर्वश्रेष्ठ उपाय।
यदि न संभव महाव्रत पालन करना, ब्रह्मचर्य अणुव्रत अवश्य ग्रहण।।(11)

ब्रह्मचर्य से आत्म साधना द्वारा, कर्मक्षय से बनते परम ब्रह्म।
अनंत आत्मिक सुख को पाते, 'कनक' का लक्ष्य पाना परम ब्रह्म।।(12)

अंधा मेरा नाम है (विभिन्न प्रकार के अंधे)

(चाल: पूछ मेरा क्या नाम रे....., छोटू मेरा नाम है....)

अंधा मेरा नाम है, नहीं देखना काम है।
सत्य-स्वरूप वस्तु स्वरूप को, नहीं देखना काम है।।(1)

मेरे विभिन्न रूप होते, चक्षु से लेकर विवेक है।
चक्षुअंध नहीं यथार्थ अंध, चक्षुअंध हो सकता प्रज्ञाचक्षु।।(2)

चक्षुअंध से भी अधिक अंध, मोहांध, ज्ञानांध (कामांध) स्वार्थांध।
प्रकाश में भी चक्षु से युक्त, नहीं जान पाते है सत्य-असत्य।।(3)

मोहांध अवस्था में मैं तो नहीं जान पाता हूँ आत्म-अनात्म।
शरीर को मैं आत्मा मानता, धन-जन-मान को मेरा मानता।।(4)

शरीर पोषण भोगोपभोग को, सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि को।
'मैं' या 'मेरा' मानकर करता हूँ, राग-द्वेष काम क्रोध आदि को।।(5)

यह अवस्था ही मेरी जघन्य अवस्था, इसी से बनता ज्ञानांध आदि।
साक्षरी निरक्षरी (आदि) अवस्था में, नहीं जान पाता हूँ हिताहित।।(6)

स्वार्थांध के कारण मैं नहीं जानता, स्व-पर हित अहित आदि।
अन्याय अत्याचार शोषण-मिलावट, करता भ्रष्टाचार चोरी आदि।।(7)

कामांध अवस्था के कारण मैं, होता आसक्त भोगोपभोग में।
स्व-परस्त्री-वेश्या में आसक्त हो, सेवन करता हूँ फैशन-व्यसन।।(8)

इस सब अवस्थाओं के कारण, न कर पाता स्व-पर कल्याण।
स्व-पर कल्याण हेतु अंधत्व त्यागूँ, इस हेतु 'कनक' बनाया काव्य।।(9)

मूर्ख की आत्मकथा व आत्मव्यथा (कुशिष्य-सुशिष्य)

(मूर्ख से प्राप्त शिक्षाएँ)

(चाल: पूछ मेरा क्या नाम रे....., आत्मशक्ति....)

मूर्ख मेरा नाम है, दुर्गुणों की खान है।
तो भी स्वयं को श्रेष्ठ मानूँ, ऐसा मेरा अभिमान है।।(स्थायी)

मेरे अनेक पर्यायवाची, मूढ़-अज्ञ-अबोध-जड़।
बुद्धिहीन, बेवकूफ, अज्ञानी, अविवेकी, नादान, भोंदू उजबक।।

मोहे के कारण मैं अज्ञानी होकर न जानता सत्य-असत्य।
हित-अहित में हूँ अंधा बधिर, तो भी मानूँ स्वयं को श्रेष्ठ।।(1)

मेरे अनेक रूपक अलंकार होते, जिससे मैं होता प्रसिद्ध।
कूपमण्डूक, गधा, भैंसा, भेड़िया, आदि मेरी उपाधि प्रसिद्ध।।

उक्त उपाधि प्राप्त हेतु मेरी होती निम्नोक्त उपलब्धियाँ।
अहंकार, हठाग्रह, दुराग्रह, कुतर्क, अप्रिय कथन, अमान्य नीतियाँ।।(2)

मैं न बनता योग्य श्रोता-शिष्य, जिससे मेरे अलंकार न होते दूर।
मच्छर, जोंक, पत्थर, चालनी, मेढ़ा, भैंसा, फूटा घड़ा सम (मेरे) गुण होते।।

सही-गलत की मुझे चिंता न होती, जिससे मैं निश्चिंत होता।
खाता-पीता-सोता रहता, जगने पर परनिंदा/(कलह) करता।।(3)

अन्य के दिमाग मैं खाता रहता, सभी मुझे माने ऐसा मानता/(कहता)।
सबके सिर पर चढ़ना चाहता, मनमाना सभी बातें बताता/(काम करता)।।

ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-पक्षपात, फैशन-व्यसन भी करता।
आलस-प्रमाद-संकीर्णता युक्त, क्रूर कठोर काम भी करता।।(4)

स्वयं को मैं सच्चा-अच्छा मानता, अन्य सभी को मूर्ख मानता।
मूर्खें की ही संगति करता, ज्ञानी सज्जनों से दूर रहता।।

नीति-नियम-सदाचार ज्ञान-विज्ञान सभ्यता-संस्कृति।
आत्मा-परमात्मा, पुण्य-पाप को, जानने की मेरी नहीं प्रवृत्ति।।(5)

मुझे क्या लेना-देना समाज-राष्ट्र-विश्व में क्या हो रहा।
मैं तो मेरी उपलब्धियों में मस्त, उसी हेतु मेरा काम हो रहा।।
इनको तब तक सही माना, जब तक (मेरा) सातिशय पुण्य न जगा।
अनुभवी ज्ञानी गुणी सज्जन से, अज्ञान मोह दूर न भगा।।(6)
जिसको मैं स्वयं के अलंकार मानता था, वे तो मेरे कलंक है।
ऐसा ज्ञान होने पर मैं अभी, दूर कर रहा हूँ उक्त कलंक।।
अंधा यथा सूर्य देख न पाता, तथाहि मैं ज्ञान न जान पाया।
जितने अंश में जान रहा हूँ, उतने अंश में अज्ञान को जाना।।(7)
अभी मुझे अनुभव हो रहा, अज्ञान अवस्था में होता न भान।
अंधेरा से यथा अंधेरा न मिटे, अज्ञान से नाश न होता अज्ञान।।
मेरी आत्मकथा-व्यथा, हर अज्ञानी-मोही जीव की।
मुझसे शिक्षा लेने हेतु कविता बनी 'कनक' की।।(8)

संदर्भ-

शक्यो वारयितुं जलेन दहनं छत्रेण सूर्यातपो
व्याधिर्भैषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषम्।
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदौ दण्डेन गोगर्दभौ
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्र विहितं मूर्खस्य नास्त्योषधम्।।(483)
मूर्खत्वं हि सखे ममापि रुचितं तस्यापि चाष्टौ गुणा-
निश्चन्तो बहुभोजनो वठरता रात्रौ दिवा सुप्यते।
कार्याकार्यविचारणान्धवधिरो मानापमाने समः
कृत्वा सर्वजनस्य मूर्द्धनि पदं मूर्खः सुखं जीवति।।(484)

अग्नि, पानी से रोकी जा सकती है, सूर्य का घाम, छत्ते से दूर किया जा सकता है, रोग, औषधियों के सग्रंह से हटाया जा सकता है, विष, नाना प्रकार के मत्रों तथा प्रयोगों से ठीक किया जा सकता है, मदोन्मत्त हाथी तीक्ष्ण अंकुश से वश में किया जा सकता है और बैल तथा गधा, दण्ड के द्वारा ठीक किये जा सकते हैं। इस प्रकार सब की औषध शास्त्र में बतायी गयी है परन्तु मूर्ख की कोई औषधि नहीं है।

किसी मित्र ने किसी को मूर्ख कहा। इसके उत्तर में मित्र, मित्र से कहता है कि हे मित्र! मूर्खता मुझे भी अच्छी लगती है क्योंकि उसमें आठ गुण हैं-मूर्ख मनुष्य निश्चिन्त रहता है, बहुत भोजन करता है, ढीठ होता है, रात-दिन सोता है, कार्य और अकार्य के विचार में अंधा तथा बहरा रहता है, मान-अपमान में माध्यस्थ रहता है, इस तरह मूर्ख मनुष्य सब मनुष्यों के सिर पर पैर देकर सुख से जीवित रहता है।

ज्ञान का अंहकार एवं अज्ञानता का कारण

ज्ञानवरणे प्रज्ञाज्ञाने। (13) स्वतंत्रता के सूत्र, पृ . 571

प्रज्ञा Conceit and; अज्ञान Lack of knowledge, sufferings are caused by the operation of ज्ञानावरणीय, knowledge-obscuring karmas.

ज्ञानावरण के सद्भाव में प्रज्ञा और अज्ञान परीषह होती है, प्रज्ञा क्षायोपशमिकी है, अर्थात् ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होती है, अन्य ज्ञानावरण के उदय के सद्भाव में प्रज्ञा का सद्भाव है अतः क्षायोपशमिकी प्रज्ञा अन्य ज्ञानावरण के उदय में मद उत्पन्न करती है, सर्व ज्ञानावरण कर्म का क्षय हो जाने पर मद नहीं होता। अतः प्रज्ञा और अज्ञान परीषह ज्ञानावरण कर्म के उदय से उत्पन्न होत है अर्थात् इन दोनों परीषहों की उत्पत्ति में ज्ञानावरण कर्म का उदय ही कारण है।

केवल ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय होने पर केवलज्ञान होता है केवलज्ञान होने पर किसी भी प्रकार अहंकार नहीं होता है। जो अत्यंत अज्ञानी है, जैसे-एकेन्द्रिय आदि जीव; इनके विशिष्ट क्षयोपशम नहीं होने से तथा तीव्र ज्ञानावरणीय का उदय होने पर विशेष ज्ञान न होने के कारण इनके भी प्रज्ञा और अज्ञान परीषह विशेष नहीं होती है। लोकोक्ति भी है-''रिक्त चना बाजे घना।''

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदूर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति।।(13) (नीतिशतक)

नासमझ को सहज में प्रसन्न किया जा सकता है। समझदार को उससे भी सहज में प्रसन्न किया जा सकता है परन्तु जो न समझदार है, न नासमझ है, ऐसे श्रेणी

के मनुष्य को ब्रह्मा भी संतुष्ट नहीं कर सकते।

जो अल्पज्ञ होते हैं वे भयंकर होते हैं। A half mind is always dangerous. The little mind is proud of own condition. संकीर्ण मन एवं कम बुद्धि वाले अधिक अहंकारी होते है। अल्पज्ञ लोग अहंकार से स्वयं को सर्वज्ञ मानकर सत्य को नकारते हैं।

कर्णामृत-सदुपदेश, गुरुता-अयाचनावृत्ति

पातुं कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिव बुध्यते सुदपदेशः।
किं गुरुताया मूलं यतेतदप्रार्थनं नाम।।(9)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

सुदपदेश है कर्णामृत जो कर्णाञ्जली से पीया जाता।
अयाचनावृत्ति से आती गुरुता, स्वाभिमान से ले स्वतन्त्रता।।(1)

समीक्षाः

सदुपदेश से ज्ञानामृत भरता, उसका पान होता कर्णाञ्जली से।
ज्ञानामृत पान से ही जीव बनते अमृत जो पीया जाता कर्णाञ्जली से।।।(2)
सदुपदेश सुनने वाले ही श्रोता हैं सुनने से भी होता श्रुतज्ञान।
ऐसे सुनने वाले ही शिष्य हैं ऐसे ही शिष्य होते श्रावक।।(3)
अयाचकवृत्ति से आती है गुरुता, याचना से निकल जाते पंचदेवता।
शोभा-लज्जा-बुद्धि-धृति-कीर्ति, ये हैं जीव के पंच देवता।।(4)
याचना से आती दीन-हीन भावना, तथाहि नष्ट होता स्वाभिमान।
अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा होती, नष्ट हो जाती है स्वतन्त्रता।।(5)

स्व-पर-विश्वहितकारी जिनवाणी

(चालः 1.चन्दा मामा दूर के..... 2.शत-शत वन्दन....)

सबसे प्यारी श्री जिनवाणी, सबसे न्यारी आगमवाणी।
स्व-पर-विश्वहितकारी वाणी, स्वर्ग-मोक्षदयिनी वाणी।।(1)

द्रव्य तत्त्व पदार्थ बखानी, अनेकान्त स्याद्वाद की वाणी,
पुण्य-पाप हेय-ज्ञेय की वाणी, बन्ध-मोक्ष की आप सुवाणी।।(2)
आपने बताया अहिंसा-धर्म, विश्वशान्ति का परम मर्म,
अपरिग्रहवाद को आप बताया, पर्यायवरण रक्षा मर्म बताया।।(3)
अनेकान्त है वैश्विक-सूत्र, सर्व समस्याओं का निवारण-सूत्र।
परमकथन है स्याद्वादवाणी, उदार सापेक्ष समन्वय वाणी।।(4)
षट् द्रव्यमय विश्व बताया, अकृत्रिम शाश्वत सत्य बताया।
उत्पाद-व्यय ध्रौव्य मय बताया, जीव-अजीव मय बताया।।(5)
रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग बताया, आत्म स्वभाव ही रत्नत्रय कहा।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्रमय, व्यवहार-निश्चयमार्ग यह।।(6)
दशलक्षण यह धर्म स्वरूप, समिति गुप्ति व ध्यान स्वरूप।
इसी से परम मोक्ष मिलता, 'कनक' सेविता आप हो! माता।।(7)

मेरे आदर्श गुरु

(चालः आये हो मेरी जिन्दगी में.....)

आये मेरे जीवन में, आदर्श गुरु बन के।
अरिहन्त सिद्ध सूरी, पाठक साधु बन के।।(स्थायी)
अरिहन्त गुरु मेरे, सर्वज्ञ साम्यधारी।
लोकालोक के ज्ञाता, अनन्त-गुण भण्डारी।।
शुद्ध सिद्ध भगवन्त सर्व-कर्म विनाशक।
जन्म मरण रहित, चिदानन्द के धारक।।(1)
आचार्य गुरु मेरे स्व-पर हितकारी।
आचरण सिखाते रत्नत्रय भण्डारी।।
पाठक गुरु मेरे, ज्ञानदान के दाता।
अध्ययन-अध्यापन, करते ज्ञानदाता।।(2)
श्रमण गुरु मेरे, जो समता के हैं साधक।

ज्ञान ध्यान तप के, जो हैं सतत आराधक।।
पाँचों ही गुरु मेरे, जो मेरा ही स्वरूप।
उनके ज्ञान ध्यान से, बनूँ मैं शुद्ध रूप।।(3)
ख्याति पूजा व लाभ, कषाय मैं न चाहूँ।
सत्य समता शान्ति मय, आतम लाभ ही चाहूँ।।
बीज से वृक्ष तथा, बने हैं फूल-फल।
गुरु ध्यान से है चाहे, 'कनक' मोक्ष फल।।(4)

अद्वितीय ज्ञानामृतदायिनी जिनवाणी-माता

(चालः भातुकली....., सायोनारा......, तुम दिल की.....)

अनेकांत स्याद्वादमयी, जिनवाणी हे! माता।
तेरे ज्ञानामृत पयपान बिन, नहीं मिले सुख-साता।।(ध्रुवपद)
इसलिए मरे ज्ञान पीपासु, अबोध मन माने ना।
अतः तेरे ज्ञानामृत पान हेतु, मेरा मन मचले माँ।।
देश-विदेश के ज्ञान-विज्ञान (व), दर्शन शास्त्र भी पढ़ा।
न्याय राजनीति मनोविज्ञान, शिक्षा व साहित्य पढ़ा।।(1)
तथापि तेरे ज्ञानामृत सम, श्रेष्ठ न मुझे मिला।
आत्मा को परमात्मा बनाने की, शिक्षा तेरी निराला।।
तेरे ज्ञान में समाहित है, अणु से ब्रह्माण्ड तक।
आकाश में यथा समाहित है, जीव-अजीव तक।।(2)
सापेक्ष सत्य से परम सत्य, मूर्तिक-अमूर्तिक तक।
दृश्य-अदृश्य शुद्ध-अशुद्ध, ज्ञान व ज्ञेय तक।।
क्रम-व्यवस्थित कार्य कारण सह, निमित्त-उपादान युक्त।
व्यवहार-निश्चय लोक-परलोक, बंध व मोक्ष सहित।।(3)
तर्क तर्कातीत अनुभूत, गणितीय वर्णन मिले सारा।

इसलिए ही 'कनकनन्दी', सतत पयपान करे तेरा।।
निकट-भव्य मुमुक्षु जीव तो, तेरे पयपान करते सदा।
इसी से विपरीत जीव जो होते, तेरे पयपान से वंचित सदा।।(4)
जो श्रद्धा से तुझे सेवते, वे होते है निकट भव्य।
तेरे ज्ञान बिना कोई भी कभी, नहीं पाते है मोक्ष।।(5)

स्वाध्याय परम तप से मुझे प्राप्त लाभ

(चालः रात कली इक....)

धन्य हे! मेरा भाग्य जगा है, स्वाध्याय तप में सतत लगा।
छोड़ के राग-द्वेष मोह-ममत्व, आत्म विशुद्धि में सतत लगा।। (ध्रुव)
इसी हेतु त्यागा ख्याति पूजा लाभ, पूर्वाग्रह संकीर्ण भाव।
त्याग के पक्षपात एकांत आग्रह, सनम्र सत्यग्राही बना के स्वभाव।।(1)
प्रमाण नय निक्षेप सहित, अनेकान्त (मय) स्याद्वाद सहित।
उत्सर्ग-अपवाद संतुलन युक्त, करता हूँ स्वाध्याय शुद्धि सहित।। (2)
इसी से स्व का परिज्ञान होता, जिससे पर का भी (परि) ज्ञान होता।
जिससे हिताहित परिज्ञान होता, ग्राह्य-अग्राह्य (का) शोध-बोध होता।।(3)
इसी से होता है सम्यग्दर्शन, जिससे ज्ञान (भी) सुज्ञान होता।
जिससे आचरण (भी) सम्यक् होता, मोक्षपथ भी प्रशस्त होता।।(4)
श्रद्धा-प्रज्ञा से होता है ज्ञान, 'मैं' तो चिदानन्द ज्ञानधन।
राग-द्वेष-मोह मुझसे पर, तन-मन-इन्द्रिय (भी) मुझसे पर।।(5)
द्रव्य-क्षेत्र-काल भावानुसार, शक्ति आयु स्वास्थ्य अनुसार।
आहार-विहार-निवास-विचार/(निर्णय) होता (है) संतुलित आगमानुसार।।(6)
भाव में निर्मलता स्थिरता आती, समता (शांति) निस्पृहता आती।
आत्म गौरव 'सोऽहं' 'अहं' (मैं) भाव जगे, (अतः) 'कनक' स्वाध्याय सतत करो।।(7)

संदर्भ-

आगमहीणो समणो णेवप्पाणं परं वियाणादि।

अविजाणंतो अट्ठे खवेदि कम्माणि किध भिक्खू।।(233)प्र.सा.

गाथार्थ-शास्त्र के ज्ञान से रहित साधु न तो आत्मा को न पर को जानता है। परमात्मा आदि पदार्थों को नहीं जानता हुआ साधु किस तरह कर्मों का क्षय कर सकता है?

समतासुखामृत पायो/(पीयो)

(चाल: पायोजी मैंने राम रतन....)

पायोजी मैंने समतासुखामृत पायो। पायोजी मैंने समतासुखामृत पीयो।।
जिस में समाहित है परम साधना, परम साध्य मैं पायो।।ध्रुव पद।।

समता में नहीं है राग-द्वेष मोह, असत्य दुराग्रह कोय।
आर्कषण-विकर्षण द्वन्द्व न होते, विकार (भी) न होय कोय।।पायोजी।।(1)

उपेक्षा-अपेक्षा-प्रतीक्षा न होती, न होती चिन्ता भी कोय।
अहंकार ममकार-दीनता नशाये, न रहे कल्मष कोय।।पायोजी।।(2)

अपना-पराया भेदभाव मिटे (है), शत्रु-मित्र न रहे कोय।
हानि-लाभ का विकल्प न होय, संकल्प सभी नश जाये।।पायोजी।।(3)

स्व-पर-अनादर-अपमान विरहित, वीतराग-विज्ञान होय।
ख्याति-पूजा-लाभ-आसक्ति रहित, यथार्थ मुमुक्षु ये होय।।पायोजी।।(4)

स्वयं में पूर्णता बाह्य से शून्यता, चिदानन्द रूप होय।
द्रव्य भाव व नोकर्म रहित, निजशुद्धात्मा रूप होय।।पायोजी।।(5)

आत्मविश्वास ज्ञान चारित्रमय यह, व्रत समिति गुप्ति होय।
उत्तम क्षमादि दश धर्म समाहित, धैर्य सहिष्णु भी समाय।।पायोजी।।(6)

यही मोक्षमार्ग तन-मन स्वास्थ्य हेतु, आत्मिक स्वस्थ्यता होय।
तीर्थंकर उपदिष्ट रहस्य यह है, 'कनक' का सर्वस्व होय।।पायोजी।।(7)

समतामहाशक्ति पायो

पायोजी! मैंने समतामहाशक्ति पायो।
जिस शक्ति से कर्मशक्ति नशे, जो शक्ति अनन्त दुःख दिये।।ध्रुव पद।।

समता से नशे राग द्वेष मोह, जो होते कर्म जनक।
रागादि नाश से कर्म भी नशते, जो कर्म दुःखजनक।।

समता शक्ति से मोह नाश होता, मिलती सम्यक्त्व-शक्ति।
सम्यक्त्व लाभ से सुज्ञान मिले, जिससे बढ़े आत्मशक्ति।।

सुज्ञान से चारित्रशक्ति मिले, जिससे बने रत्नत्रय।
रत्नत्रय से कषाय नशते, आत्मविशुद्धि अतः होय।।

आत्मविशुद्धि से क्रोधनाश होता, जिससे क्षमा जन्म लहे।
आत्मविशुद्धि से माननाश होता, जिससे आर्जव जन्म लहे।।

तथाहि मार्दव शौच सत्य जन्मे, संयम तप त्याग जन्म लहे।
आकिंचन्य व ब्रह्मचर्य जन्मे, जिससे कर्म नाश होय।।

ऐसी महाशक्ति समताशक्ति से, चिन्ता द्वन्द्व नाश होय।
शत्रु-मित्र भेद-भाव नाश होते, संकल्प-विकल्प नाश होय।।

ख्याति पूजा लाभ आसक्ति नशते, नशते संक्लेश भाव।
अशान्ति चंचलता नाश (भी) होती, 'कनक' पाये आत्मभाव।।

अनुभवज्ञानामृत पायो

पायो/(पीयो) जी! मैंने अनुभवज्ञानामृत पायो/(पीयो)।
जिसमें समाहित (है) आत्मविश्वासज्ञान, चारित्ररूपी रत्नत्रय।।ध्रुवपद।।

द्रव्यश्रुतयुक्त भावश्रुतमय जो (है), अनुभवमय होय।
इन्द्रिय मन परे आत्मशक्ति युक्त, विशेष क्षयोपशम होय।।(1)

भावश्रुत है परोक्ष केवलज्ञान, प्रत्यक्ष का अनन्तवाँ भाग होय।
भावश्रुत से परोक्ष/(आंशिक) ज्ञान होता, मूर्तिक-अमूर्तिक (द्रव्य) जो होय।।(2)

इसी से ही आत्मज्ञान होता परोक्ष से, मति आदि (अवधि मनः पर्यय) न होय।
भावश्रुतज्ञानी संयमी/(अभेदरत्नत्रयधारी) आत्मानुभवी, श्रुतकेवली सम जो होय।।(3)

मतिज्ञान जब अनुभव (ज्ञान)होता, वही भाव श्रुतज्ञान होय।
अनुभव बिन द्रव्य श्रुतज्ञान केवल, मतिज्ञान ही होय।।(4)

अल्पज्ञ भी अनुभवी ज्ञानी, द्वादशांग ज्ञानी सम होय।
द्वादशांग का सार आत्मज्ञान, अनुभवी ज्ञानी को जो होय।।(5)

अनुभवज्ञान में वैराग्य समता, आत्मविशुद्धि प्रज्ञा समाय।
हिताहित विवेक धैर्य सहिष्णुता, कार्य-कारण समन्वय समाय।।(6)

आंशिक त्रिकाल का ज्ञान भी होता है, दूरदृष्टि समाहित होय।
जोड़रूप ज्ञान होने के कारण, अल्पज्ञान भी विशाल होय।।(7)

अनुभव हेतु ध्यान-अध्ययन-मनन, चिन्तन-अनुप्रेक्षा योग्य।
इसके माध्यम से स्वयं पर प्रयोग से, अनुभव होता है तीव्र।।(8)

अनुभव एक जन्म देता अनेक, अनुभवपूर्ण ज्ञान को।
अनुभव शून्य विशाल ज्ञान भी, हितकर नहीं है जो जीवों को।।(9)

अनुभव शून्य ज्ञान से होते है, अहंकार व ममकार।
स्वार्थ संकीर्णता तुच्छता दिखावा, उद्दण्डता व आडम्बर।।(10)

अनुभव है ज्ञान का सार, आचरण का दिव्य स्रोत।
धैर्य सहिष्णुता वैराग्य समता का, 'कनक' का अन्तः स्रोत।।(11)

सद्गुरु के उपदेश की आवश्यकता

धातुः स काञ्चनमयः क्रिया विहीनः,
कालान्तरादपि न याति सुवर्णभावम्।
एवं जगत्यमितभव्यजनश्चिरेण नालं,
भवाद व्रजितुमत्र विनोपदेशात।। (8) (वरांगचारित्र)

सुवर्ण मिश्रित मूलधातु ठीक प्रकार से शुद्ध न किये जाने के कारण बहुत समय बीत जाने पर भी स्वर्ण-पाषण ही रह जाती है, सोना नहीं हो पाती हो। इसी

प्रकार इस संसार में अनेकानेक भव्य (मुक्त होने योग्य) जीव सद्गुरु का उपदेश न मिलने के कारण ही चिरकाल तक संसार समुद्र में ही ठोकरें खाते हैं मोक्ष नहीं जा पाते हैं।

दीपं विना नयनवानपि संदिदृक्षुर्द्रव्यं,
यथा घटपटादि न पश्यतीह।
जिज्ञासुरुत्तममतिर्गुण वास्तथैव वक्त्रा,
विना हितपथं निखिलं न वेत्ति।।(9)

पदार्थों को देखने के लिए उत्सुक पुरुष, आँखों की दृष्टि हर तरह ठीक होने पर भी जैसे केवल दीपक न होने के कारण ही अंधेरे में घट पट आदि वस्तुओं को नहीं देख पाता है, उसी प्रकार परम बुद्धिमान, सद्गुणी और कल्याण मार्ग जानने के लिए लालयित पुरुष भी एक सच्चे उपदेष्टा के न मिलने से ही संसार से उद्धार के हितमार्ग को पूर्ण रूप से नहीं समझ पाता है।

उपदेशकर्त्ता सद्गुरु-

सर्वज्ञ भासितमहान् धौतबुद्धिः स्पष्टेन्द्रिय
स्थिरमतिर्मितवाङ्मनोज्ञः।
मृष्टाक्षरो जितसभः प्रगृहीतवाक्यो वक्तुं
कथां प्रभवति प्रतिभादि युक्तः।।(10)

वही प्रतिभाशाली व्यक्ति कथा कहने का अधिकारी होता है, जिसकी बुद्धि सर्वज्ञ प्रभु के मुखारबिन्द से निकले शास्त्ररूपी महानद में गोते लगाकर निर्मल हो गई हो, जिसकी चक्षु आदि इन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों को पूर्ण तथा विशद रूप से जानती हो, जो सभा को मंत्रमुग्ध-सा कर देता हो तथा जिसकी भाषा को श्रोता सहज ही समझ लेते हो; अर्थात् जिसकी भाषा-भावों के पीछे-पीछे चलती हो।

सत्कारमैत्र्यवनभेषजसंश्रयादीन्वक्ताऽनपेक्ष्य-
जगतात्युपकार हेतुम्।
निष्केवले हित पथं प्रवदन्वदान्यः
श्रोतात्मनोरूपचिनोति फलं विशालम्।।(11)

जो उदाराशय उपदेशक निजी आदर-सत्कार, परिचय-मित्रता, भरण-पोषण, विरोधियों से रक्षा, रोगों की चिकित्सा, सहारा आदि स्वार्थों की तनिक भी अपेक्षा न करके संसार का एकमात्र पूर्ण उपकार करने की इच्छा से ही सर्वज्ञ प्रभु के मुखारबिन्द से आगत सद्धर्म का ही उपदेश देता है वह श्रोताओं के पुण्य को ही बढ़ाता है, अपितु स्वयं भी विशाल पुण्य बंध करता है।

जन्मार्णवं कथमयं तरतीति योऽत्र
संभावयत्यतुल धीर्मनसा दयालुः।
संसार घोर भय दुःख मनादिबद्धं तस्य
क्षयं व्रजंति साध्विति वर्णयन्ति।।(12)

इस संसार में जो परम कृपालु और अतुल बुद्धिशाली उपदेशक अपने मन में सर्वदा यही सोचता है कि 'यह बिचारे श्रोता लोग कैसे संसार समुद्र से पार होंगे?' उनके अनादि काल से बंधे भयंकर संसारिक अज्ञान आदि दुःख और जन्म, जरा, रोग, मरणादि भय समूल नष्ट हो जाते है, ऐसा श्री गणधरादि महाज्ञानियों ने कहा है।

श्रेयोऽर्थिना हि जिनशासनवत्सलेन
कर्तव्य एव नियमेन हितोपदेशः।
मोक्षर्थिना श्रवणधारणसत्क्रियार्था
योज्यास्तु ते मतिमता सततं यथावत्।।(13)

अपने तथा दूसरों के कल्याण के इच्छुक सच्चे जिनधर्म प्रेमियों को नियमपूर्वक जिनशासन का उपदेश करना चाहिए तथा मोक्ष लक्ष्मी को वरण करने के लिए व्याकुल उस बुद्धिमान् उपदेशक का यह भी कर्तव्य है कि वह हर समय प्रमाद को छोड़कर सब ही संसारी प्राणियों का शास्त्र श्रवण, तत्वों के मनन, सम्यक् चारित्र के पालन आदि उत्तम कार्यों में लगावे।

योग्य शिष्य-

शुश्रूषताश्रवणसंग्रहधारणानि
विज्ञानमूहनमपोहनमर्थतत्त्वम्।
धमश्रवार्थिषु सुखाभिमुखेन नित्यमष्टौ
गुणान्खलु विशिष्टतमा वदन्ति।।(14)

इस भव और परभव में सुखों के इच्छुक धर्मशास्त्र के श्रोताओं में गुरु आदि की सेवा-परायण, मन लगाकर सुनना, आगे-पीछे पढ़े या सुने को याद करना, रखना पठित या श्रुत विषयों का मनन करना, प्रत्येक तत्त्व का गहन अध्ययन करना, प्रत्येक विषय को तार्किक दृष्टि से समझना, हेय को छोड़ देना और उपयोगी को तुरन्त ग्रहण करना ये आठ गुण निश्चय से होना चाहिए; ऐसा गणधरादि लोकोत्तर ऋषियों ने कहा है।

मृत्सारिणीमहिषहंसशुकस्वभावा
मार्जारकङ्कमशकाजजलूकसाम्याः।
सच्छिद्रकुम्भपशुसर्पशिलोपमानास्ते
श्रावकाभुवि चतुर्दशधा भवन्ति।।(15)

कुछ श्रोताओं का स्वभाव मिट्टी (सुनते समय ही प्रभावित होने वाले, बाद में जो सुने उसे समझकर उस पर आचरण नहीं करने वाले), झाड़ (सार ग्राहक असार छोड़ने वाला), भैंसा (सुना ना सुना दोनों बराबर), हंस (विवेकशील), शुक (जितना सुना उतना ही बिना समझे याद रखा), के समान होता है। दूसरे श्रोताओं की तुलना बिल्ली (चालाक पाखंडी), बगुला (अर्थात् सुनने का ढोंग करने वाला), मशक (वक्ता तथा सभा को परेशान करने में प्रवीण), बकरा (देर में समझने वाले तथा कामी) और जौंक (दोष ग्राही) के साथ की जा सकती है। अन्य कुछ श्रोताओं के उदाहरण सैकड़ों छेदयुक्त घड़े (इस कान सुना उस कान निकाल दिया), पशु (किसी का जोर पड़ा तो कुछ सुन-समझ लिया), सर्प (कुटिल) और शिला (प्रभावहीन) से दिये जा सकते है, इस प्रकार संसार के सब श्रावक चौदह प्रकार के होते हैं।

श्रोता न चैहिकफलं प्रतिलिप्समानो
निः श्रेयसाय मतिमांश्च मतिं विधाय।
यः संश्रृणोति जिनधर्मकथामुदारां पापं
प्रणाशमुपयति नरस्य तस्य।।(16)

जो विवेकी श्रोता सांसारिक भोग-विलास रूपी फलों की स्वप्न में भी इच्छा नहीं करता है तथा मोक्षलक्ष्मी की प्राप्ति करने का अडिग तथा अकम्प निर्णय करके प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारिणी जिनधर्म की विशाल कथा को सुनता है, उस

मनुष्य के सब ही पापों का निःसंदेह समूल नाश हो जाता है।

उपदेशक गुरु का कर्त्तव्य-

प्राज्ञस्य हेतुनयसूक्ष्मतरान्तपदार्थान्।
मूर्खस्य बुद्धिविनयं च तपः फलानि।
दुःखार्दितस्य जनबन्धुवियोगहेतुं
निर्वेदकारणमशौचशाश्वतस्य।।(17)

बुद्धिमान और कुशल कथाकार को श्रोता की योग्यता के अनुसार उपदेश देना चाहिए। जैसे विशेष ज्ञानी श्रोता के सामने प्रमाण-नय आदि के भेद-प्रभेद ऐसे सूक्ष्म विषयों की चर्चा करे। मूर्ख या अज्ञ पुरुष को साधारण ज्ञान, शिष्टाचार और व्रत-नियम आदि के लाभों को समझाये। यदि श्रोता का हृदय इष्ट वियोग से विह्वल हो रहा हो तो उसे उन कर्मों का मधुर उपदेश दे जिनके कारण स्वजन और बंधु-बांधवों का वियोग होता है। जिसकी बुद्धि डांवाडोल रहती हो उसे संसार और शरीर की अपवित्रता का और अस्थिरता का दिग्दर्शन कराये, जो कि वैराग्य के कारण हैं।

लुब्धस्य शीलमधनस्य फलं व्रतानां
दानं क्षमा च धनिनो विषयोन्मुखस्य।
सद्दर्शनं व्यसनिनो जिनपूजनं च
श्रोतुर्वशेन कथयेत्कथको विधिज्ञः।।(18)

सांसारिक संपत्ति और भोगों के लोभी को संयम का उपदेश दें, निर्धन को व्रतादि पालन करने की प्रतिज्ञा कराये जिससे फलस्वरूप धनादि की प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है। सांसारिक भोग-विलासों में मस्त धनी पुरुष को दान और क्षमा का माहात्म्य समझाये। इसी प्रकार चोरी, व्यभिचारी आदि व्यसनों या दुःखों में फँसे व्यक्ति को तत्त्वों के सच्चे श्रद्धान और जिनपूजनादि की ओर प्रेरित करें।

संसारसागरतरङ्गनिमग्नजीवान् सज्ज्ञाननावमधिरोप्य सुखेन नीत्वा।
सद्धर्मपत्तनमनन्तसुखाकरं यत् तत्प्रापयन्ति गुरवो विदितार्थतत्त्वाः।।(19)

जो सद्‌गुरु तत्त्व और अर्थ को भलीभाँति जानते हैं वे संसार समुद्र के मोह रूप तूफान के थपेड़े खाकर लहरों में डूबते हुए प्राणियों को सरलता से उभार लेते है

और सम्यग्ज्ञानरूपी नाव पर बैठकर अनंत सुखों के भण्डार जिनधर्मरूपी नगर में पहुँचा देते हैं।

जन्माटवीषु कुटिलासु विनष्टमार्गान्
येऽत्यन्तनिर्वृतिपंथं प्रतिबोधयन्ति।
तेभ्योऽधिकः प्रियतमों वसुधातलेऽस्मिन्
कोऽन्योऽस्ति बन्धुरपरः परिगण्यमानः।।(20)

भाई बंधु हितैषियों का लेखा करने पर इस संसार में उनसे बढ़कर हितैषी और प्रेमी बंधु दूसरा और कौन हो सकता है, जो जन्म-मरण रूपी घने जंगलो की टेडी-मेढ़ी पगडंडियों में रास्ता भूले हुए संसारी प्राणियों को पूर्ण वैराग्य और शांति रूपी कल्याणकारी मार्गों को पूर्णरूप से दिखा देते हैं।

सद् उपदेश से लाभ-

राज्यार्धराज्यपृथुचक्रधरोरूभोगान् भौमेन्द्रकल्पपतिनामहमिन्द्रसौख्यम्।
क्लेशक्षयोद्भवमनन्तसुखं च मोक्षं संप्राप्नुवन्ति मनुजा गुरुसंश्रयेण।।(21)

मनुष्य सद्‌गुरु का सहारा पा जाने पर आधे राज्य, पूर्ण राज्य और विशाल राज्यों के अधिपति पद को, चक्रवर्ती के विशाल भोगोपभोगों को अथवा चक्रवर्तियों के भी पूज्य भौमेन्द्रपद, देवताओं के अधिपति इन्द्र और अहमिन्द्रों के सुखों को ही प्राप्त नहीं करता अपितु दुःख के संयोग से हीन ज्ञानावरणादि क्लेशों के समूल नाश से उत्पन्न एकमात्र फल अनंत सुख, वीर्य, दर्शनादिमय मोक्ष महापद को वरण करता है।

आत्मविश्वास जगाने वाले होते हैं सर्वश्रेष्ठ उपकारी-गुरु

(चालः तुम दिल की धड़कन...., धन्य गुरुवर धन्य हो तुम....)

धन्य हे! सद्‌गुरु धन्य हो तुम!, आत्मविश्वास (जो) जगाते हो।
समस्त प्रकार के विकास हेतु, भावात्मक बीज (को) बोते हो।।धृ.।।

अंकुर विकास व फूल फल यथा, सुयोग्य बीज से ही होते है।
तथाहि समस्त विकास के लिए, आत्मविश्वास रूपी बीज होते हो।।

आत्मविश्वास से ज्ञान सुज्ञान होता, तथाहि होता है सही आचरण।

जिससे सम्पूर्ण कार्य होते हैं, लौकिक से लेकर परिनिर्वाण।।
आत्मविश्वास बिना काम न करते, ज्ञान से लेकर शक्ति आचरण।
यथा बिन बीज काम न करते, वृक्ष हेतु मृदा वायु सूर्य किरण।।
आत्मविश्वास में होती अनंत शक्ति, जो आत्मा की है निज शक्ति।
जिससे अन्य शक्ति सक्रिय होती, आत्मविश्वास बिन निष्क्रिय होती।।
चारण ऋद्धिधारी मुनि के द्वारा, जगा सिंह का भी आत्मविश्वास।
वह सिंह बना महावीर भगवान्, ऐसा ही बना (था) गज पार्श्व भगवान्।।
पतित से पावन बने अनंत, भव्य से भगवान् बने अनंत।
आगे भी ऐसा ही होता रहेगा, इसके मूल में होता आत्मविश्वास।।
सच्चि श्रद्धा-रूचि या सम्यग्दर्शन, आत्मविश्वास के है विभिन्न नाम।
'सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि' ही, होता है मोक्ष का मार्ग नियम।।
मोक्ष में मिलता है अनंत सुख, जो है आत्मोत्थ व अविनाशी।
इसी के मूल में है आत्मविश्वास, जिस के अमृत फल है मोक्ष सुख।।
तीन लोक व तीनों काल में भी, मोक्ष समान नहीं है महान् काम।
आत्मविश्वास से जब मिलता है मोक्ष, आत्मविश्वास से क्यों न हो अन्य काम।।
अतः आप ही महान् उपकारी, तीनों काल व तीन लोक में।
आप ही दाता हो! रक्षक संवर्द्धक, आपको नमन करे 'आचार्य कनक'।।
लोगों को आत्मविश्वास देना ही अब तक का सबसे जरूरी काम है, जो मैं कर सकता हूँ। क्योंकि तब वो काम करेंगे-जैक वेल्व

आध्यात्मिक जन-संत की अलौकिक निस्पृह वृत्तिः तो भी वे न होते पलायनवादी या परपीड़क

-आचार्य कनकनन्दी

(चालःआत्मशक्ति....)

विश्व हितंकर तीर्थंकर भी, त्याग करते हैं राज्य वैभव।
माता, पिता, पत्नी, पुत्र से लेकर, षट्खण्ड की प्रज्ञा तक।।(1)

नग्न रहते व केशलोंच करते, करते केवल ध्यान-अध्ययन।
व्यापार राजनीति कृषि शिल्पादि, न करते रहते एकांत मौन।।(2)
सामाजिक व राजनैतिक बंधन से परे करते आत्मानुशासन।
आत्म तत्व व वैश्विक सत्य हेतु, करते शोध-बोध-अनुसंधान।।(3)
जब तक न होता केवलज्ञान, तब तक ऐसा ही करते काम।
तथापि वे न होते पलायनवादी, अयोग्य आलसी या परपीड़क।।(4)
केवलज्ञान के अनंतर देवनिर्मित, समवसरण में हो विराजमान।
विश्वहित हेतु करते प्रवचन, ख्याति पूजा लाभ से नहीं प्रयोजन।।(5)
संकीर्ण कट्टर व पक्षपात शून्य, अनेकांतमय करते उपदेश।
अनेक सुदृष्टि नर-नारी-देव, पशु-पक्षी सुनते उपदेश।।(6)
कर्मक्षय व शरीर से रहित बनते, जन्म-जरा-मरण शून्य।
अनंत ज्ञान सुख वीर्य से सहित (होकर), सिद्ध अवस्था में रहते शाश्वत।।(7)
ये सब नहीं है संकीर्ण स्वार्थ व, कर्त्तव्यविमुख या पलायनवाद।
आलस्य प्रमाद या असमाजिकता या पर दुःखप्रद।।(8)
राज त्यागकर जब साधु बनते, अन्य के न दुःखप्रद भाव करते।
स्व-पर-विश्वहित हेतु साधु बनते, नवकोटि से अन्य को न दुःख देते।।(9)
पंच महाव्रत व समिति पालते, सत्ता-संपत्ति व भोग न चाहते।
नम्र होकर अश्लीलता नहीं करते, समता-शांति से मौन रहते।।(10)
सर्वज्ञ के अनंतर जिस समवसरण में तीर्थंकर प्रवचन (भी) करते।
उसका निर्माण स्वयं न करते, उसका कर्त्ता-धर्त्ता-भोक्ता नहीं बनते।।(11)
भक्त-शिष्य व अनुयायी से भी, न राग द्वेष मोह करते।
उनके जो न होते भक्त आदि, उनसे भी द्वेष घृणा नहीं करते।।(12)
मोक्ष के अनंतर कर्म के अभाव से, पुनर्जन्म उनका नहीं होता।
शरीर इन्द्रिय व मन के अभाव से, संसार के काम भी नहीं करते।।(13)
यह ही जीव की शुद्धावस्था, संसारी जीवों की तो अशुद्ध दशा।
अशुद्ध दशा में ही जीव होते है, आलसी-प्रमादी-कर्त्तव्य शून्यता।।(14)

ऐसा अन्य आध्यात्मिक जन, जो होते निस्पृह निराडम्बर।
ध्यान-अध्ययन व मौन एकांत, साधना करते वे होते श्रेष्ठ नर।।(15)

आत्मिक विकास जो नहीं करते, वे ही यथार्थ से अज्ञानी जन।
कर्त्तव्यविहीन, पलायनवादी, आलसी, प्रमादी, परपीड़क जन।।(16)

मोही अज्ञानी कामी स्वार्थी जन, विपरीत भाव व्यवहार करते।
इनसे विपरीत आध्यात्मिक जन करते 'कनकनन्दी' को यह ही भाते।।(17)

मेरी (आचार्य कनकनन्दी) की प्रतिज्ञा, ससंघ के नियम व कारण

-आचार्य कनकनन्दी

(चालः तेरे प्यार का आसरा....)

ब्रह्मचारी क्षुल्लक मुनि दीक्षा में, व्रत लिया हूँ मैं गुरु साक्षी में।
सम्मेदाचल (1988) में ली ग्यारह प्रतिज्ञाएँ, बहु अवसर पर बहु प्रतिज्ञाएँ।।

(1) जन्म जयन्ती नही मानने का कारण

जन्म-मरा-मरण नाश के लिए, साधु मैं बना हूँ (मैं) मोक्ष के लिए।
अतः जन्म जयन्ती नहीं मानता हूँ, दीक्षादि जयन्ती भी नहीं मानता हूँ।।(1)

(2) पूर्व गृहस्थ सम्बन्ध त्याग के कारण

गृहत्यागी ब्रह्मचारी जब से बना हूँ, गृहस्थ अवस्था से विरक्त हुआ हूँ।
क्षुल्लक की ग्यारह प्रतिमा धरा हूँ, अनुमत उद्दिष्ट भी गृह से त्यागा हूँ।।(2)
दिगम्बर साधु-व्रत जब से धरा हूँ, अलौकिक अनागार आचार धरा हूँ।
नवीन नामकरण गुरु ने किया है, गृहस्थ अवस्था के संबधं/(मोह) त्यागा है।।(3)
पंचपरमेष्ठी ही बन्धु है मेरे, वैश्विक कुटुम्ब के विचार मेरे।
रत्नत्रय ही है वैभव मेरे, मोक्ष महल ही है मकान मेरे।।(4)

(3) याचना, भौतिक निर्माण आदि नहीं करने का कारण

मुमुक्षु-भिक्षुक हूँ मैं नहीं भिखारी, सर्वपरिग्रहत्यागी साम्य धारी।
अतः मैं याचना या चन्दा न करूँ, भौतिक निर्माण हेतु भी कुछ न करूँ।।(5)

(4) प्रसिद्धि आदि नहीं चाहने का कारण

आत्मा की सिद्धि हेतु साधु मैं बना, राग-द्वेष-मोह-ममत्त्व त्यागा।
अतः मैं ख्याति-पूजा-प्रसिद्धि त्यागा, निस्पृह निराडम्बर समता भोगा।।(6)

(5) भेदभाव-विद्वेष-विघटन पूर्ण व्यवहार नहीं करने का कारण

समता साधक मैं श्रमण बना, सकंल्प-विकल्प-संक्लेश त्यागा।
सभी में सदाकाल ही समता भाव, अतः न मेरा-तेरा विभाव भाव।।(7)

(6) ढोंग पाखण्ड-दबाव प्रलोभन आदि से दूर रहने के कारण

आत्मविश्वास-ज्ञान-चारित्र-धर्म, इससे विपरीत होता अधर्म।
ढोंग-पाखण्ड-आडम्बर-दंभ को त्यागा, दबाव प्रलोभन भय को त्यागा।।(8)

(7) पत्रिका विज्ञापन आदि नहीं करने के कारण

पत्रिका विज्ञापन या निमंत्रण, धन-जन-मान व दिखावा काम।
माईक-मंच व पण्डाल तामझाम, नौकर चौका व गाड़ी सामान।।(9)
इत्यादि कार्य हेतु मैं नहीं कहता, अनावश्यक हेतु मना करता।
सहज आगमोक्त जो कार्य होता, निस्पृह-समता से मैं प्रवृत्त होता।।(10)

(8) निस्पृह वृत्ति के कारण

कतृत्व वर्चस्व व प्रसिद्धि हेतु, कोई न काम करूँ संक्लेश हेतु।
निस्पृह आकिंचन्य निःस्वार्थ युक्त, काम करूँ मैं कतृज्ञता युक्त।।(11)
संस्थादि का नामकरण मेरा न करता, सहयोगी दाताओं का नाम लिखता।
ऐसा ही पूरा संघ के नियम होते, समता शांति सहयोग से रहते।।(12)

(9) देश-विदेश में धर्म प्रचार के साधन

ध्यान-अध्ययन व लेखन प्रवचन, शिविर संगोष्ठी व साहित्य प्रकाशन।
देश-विदेशों में धर्म (ज्ञान) का प्रचार, संघ में होता है सहज प्रचुर।।(13)
स्वेच्छा से सहभागी होते हैं भक्तजन, सहयोग करते वे तन व मन।
समय-श्रम व धन भी लगाते, देश-विदेशों के भक्त ये करते।।(14)
सहज सरल व समता शांति से, सुयोग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल व भाव से।
मेरी प्रतिज्ञा व संघ के नियम कहा, 'कनकनन्दी' को आध्यात्म भाया।।(15)

गहन, चतुर, दरिद्रता, लघुता

किं गहनं स्त्रीचरितं, कश्चतुरो यो न खण्डिनस्तेन।
किं दारिद्रयमसन्तोष एव किं लाघवं याञ्चा।।(10)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

स्त्री चरित्र होता है गहन, स्त्री से जो न खण्डित वह चतुर।
असन्तोष होती है दरिद्रता, याचना करना होती है लघुता।।

धन विहीन सुख एवं आनन्द

(रागः आत्म शक्ति.....)

धन सम्पत्ति है परिग्रह पाप जो है जड़ स्वरूप।
जड़ में न होती चेतना कभी न होता है ज्ञानानन्द।।
शरीर इन्द्रियाँ मन भी जड़ है काम-भोग राज-पाट।
जन्म मरण व बुढ़ापा भी जड़ महल व ठाठ-बाट।।
ईर्ष्या द्वेष घृणा काम क्रोध मोह तृष्णा व आसक्ति मद/(भाव)
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि विद्वेष चिन्तादि विकृत भाव।।
जड़ स्वरूप व विकृत भाव में न होता है ज्ञानानन्द।
इसी से आत्मा तो मलिन होता नशता है ज्ञानानन्द।।
ज्ञानानन्द हेतु तीर्थंकर बुद्ध आध्यात्मिक साधुसंत जन/(गण)।
चक्रवती के भी वैभव त्यागकर, करते हैं आत्मध्यान।।
''जो राजेश्वरी सो नरकेश्वरी'' त्याग से है (सर्वोदय)/मोक्षधाम।
बहु आरम्भ व परिग्रह से नरक में होता गमन।।
परिग्रह हेतु सभी पाप होते, शोषण मिलावट चोरी।।
क्रोध मान मोह लोभ भी होते है हिंसा झूठ मायाचारी।।
इसी के बिना सत्ता सम्पत्ति व भोग-विलास न होते।
राजतन्त्र या लोकतंत्र में पाप बिना कभी न होते।।

इसी के कारण राजा-महाराजा सेठ-साहूकार धनी/(जन)।
ईर्ष्या तृष्णा दम्भ व्यसन कारण, होते हैं संत्रस्त मन।।
आत्म शान्ति हेतु अनेक हैं अभी देश-विदेश के जन।
पर हित हेतु दान करते हैं, रखते न ज्यादा धन।।
बिल गेट्स व वॉरेन बफे, जुकरबर्ग, स्टीव, जॉब्स।
अजीम प्रेमजी धन त्यागकर, पाते हैं आत्मसंतोष।।
मनोवैज्ञानिक तथा अर्थशास्त्री, अभी जो किया है शोध।
सुखी होना है तो संतोषी बनो, तृष्णा में नहीं है सुख।।
वे हैं शोधकर्त्ता मार्था नसबम, अमर्त्य सेन, जॉन राल्स।
माइकल सैण्डल, राबर्ट पुत नेम, गायत्री चक्रवती, स्वी वॉक।।
भौतिकवाद व बाजारवाद से, लोप हो रहा है नैतिक मूल्य।
व्यापार शिक्षा कानून राजनीति, धर्म में भी लोप है मूल्य।।
नैतिक बिना न सदाचार होता, सदाचार शून्य न धर्म।
धर्म बिना न शान्ति मिलती, यह है सुख का मर्म।।
धर्म मोक्ष शून्य अर्थ काम से, कभी न मिलता सुख।
'कनकनन्दी' का आह्वान/(आशीष) विश्व को, पाओ है! आत्मिक सुख।।

(यह कविता प्रो. पूर्व कुलपति नरेश दाधीच के लेख से भी प्रभावित है।)

''प्रसिद्धि की तृष्णा से मिलती है अशान्ति''

(प्रसिद्धि की तृष्णा से उत्पन्न विभिन्न कषाय एवं समस्याएँ)

(रागः सावन का महीना......, अरिहंताये नमो नमः....., फूलों का तारों का.....)

प्रशंसनीय काम ही होना विधेय, प्रशंसा की इच्छा न होती विधेय।
सुगुणी की प्रसिद्धि होनी चाहिए, प्रसिद्धि की भावना त्याग चाहिए।।
प्रसिद्धि की इच्छा में कामना होती, कामना से तृष्णा उत्पन्न होती।
तृष्णा से कषायें उत्पन्न होती, जिससे समस्याएँ उत्पन्न होती।।

सुगुण बिन जो प्रसिद्धि चाहे, विभिन्न अयोग्य कार्य रचे।
मिथ्या आडम्बर ढोंग रचाये, कूट-कपट के व्यूह रचाये।।
इसी हेतु धन-जन भी चाहे, शक्ति सत्ता व बुद्धि भी चाहे।
इसी हेतु भी कुकार्य करे, अन्याय अत्याचार बहु भी करे।।
प्रसिद्धि हानि के भय कारण, चिन्ता जन्य दुःख होते विभिन्न।
राग-द्वेष-मद भी होते उत्पन्न, शत्रु-मित्र विरोधी लेते जनम।।
शत्रु के प्रति द्वेष भी होता, मित्र के प्रति राग भी होता।
जिससे पाप बन्धन होता, जिससे संसार दुःख बढ़ता।।
प्रसिद्धि हेतु खोटे काम करता, नट-नटी ढोंगी सम काम करता।
ज्ञान धन-जनों का संग्रह करता, तन-मन-आत्मा को कष्ट भी देता।।
सुख-शान्ति-समता निद्रा नशती, प्रसिद्धि की तृष्णा शान्त न होती।
ईंधन से यथा अग्नि बढ़ती, प्रसिद्धि तृष्णा/(अग्नि) की तथा ही गति।।
ऐसा व्यक्ति न महान् होता, महान् कार्य में अयोग्य होता।
स्व-पर हित न उससे होता, दिवा स्वप्न यथा सत्य न होता।।
प्रसिद्धि न चाहते महान् जन, साधना से सिद्धि वे पाते महान्।
प्रसिद्धि बंधन से नहीं बंधते, स्वतंत्रता से वे सिद्धि को पाते।।
राग-द्वेष-मोह मद को जो त्यागा, प्रसिद्धि का बंधन वह ही त्यागा।
इसी से ही मिलती समता-शान्ति, इसी में ही रत है 'कनकनन्दी'।।

भारतीय नारी की गरिमावस्था व पतितावस्था

(रागः है यही समय की पुकार....., सुनो सुनो है दुनियाँ वालो!....)

सुनो सुनो है भारतीय नारी! सुनो है तेरी गौरव गाथा।
तुम हो आर्या सुपुत्री तुम, उभयकुल की दीपिका सुता।।ध्रु.।।

अनेक रूप तेरे जन्मे, कन्या माता (भार्या) आर्या बहिन,
विदुषी सती संस्कारदात्री, लेखिका धात्री पोषणकर्त्री,
तुम से जन्मे तीर्थंकर बुद्ध, ऋषि मुनि ज्ञानी सती सावित्री,

तत्त्ववेता व दार्शनिक वीर, राजा-महाराजा सकल चक्री।।(1)

अनेक तेरे प्रसिद्धि नाम, ब्राह्मी सुन्दरी सीता सावित्री,
गार्गी लीलावती चन्दनामती, चेलना मैनासुन्दरी सती,
मॅडम क्यूरी मदर टेरेसा, नाइटिंगल जीजाबाई,
निवेदिता व कस्तूरीबाई, सरोजिनी नायडू लक्ष्मीबाई।।(2)

तेरे से अनेक रूपक बने, लक्ष्मी सरस्वती सती दुर्गा,
तेरा विशेषण पहले आवे, मात-पिता भगिनी-भैया,
जन्मस्थान को मातृभूमि कहे, स्वभाषा है मातृभाषा,
''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' कहती देव भाषा।।(3)

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' आर्य भाषा,
गृहलक्ष्मी धनलक्ष्मी सरस्वती, रणचण्डी कहे संस्कृत भाषा,
इसलिये तो भारत रहा कभी, विश्वगुरु व समृद्ध देश,
चार आश्रम से युक्त भारत, सामाजिक रचना से महान् देश।।(4)

दीर्घ परतन्त्रता के कारण, उपरोक्त गरिमा विकृत हुई,
शिक्षा दीक्षा संस्कारविहीन, भारतीय महिला विकृत हुई
स्वतन्त्र भारत में तो और भी, विकृतियाँ विकसित हुई,
पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण, फैशन-व्यसन में वृद्धि हुई।।(5)

पढ़ाई नौकरी किटी पार्टी व, टीवी सीरियल ने जहर घोला,
टेंशन फोबिया चिढ़चिढ़ापन, अश्लील हरकतों को बल मिला,
इन कारणों से सबसे अधिक, टेंशनयुक्त भारतीय नारी,
भ्रूणहत्या से आत्महत्या तक, फल भोग रही आधुनिक नारी।।(6)

जो वृक्ष स्वमूल से कट जाये, उसकी सुरक्षा वृद्धि न होती,
वैसा ही जो स्व-संस्कृति से, कट जाये उसकी उन्नति कभी न होती,
परिवार सेवा गुरु सेवा, शील सदाचार से जो होती दूर,
उसका पतन वैसा होता, जैसे वृक्ष के मूल से दूर।।(7)

साक्षर के साथ संस्कार पालो, आधुनिकता के साथ शील,

प्रगति के साथ विनम्र बनो, दृढ़ता से रहो पापों से दूर,
कुरीति त्यागो नैतिक बनो, मान-मर्यादा का करो पालन,
गरिमामय जीवन जीयो, 'कनकनन्दी' का है आह्वान।।(8)

आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी

(आधुनिक से नारी के लिये सुविधा एवं समस्यायें)

(रागः हे गुरुवर धन्य हो तुम...., होठों पे सच्चाई....)

आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी है, कौन भरेगी अब पानी है।
नदी भी आ गई किचन में, डिनर खाते हैं होटल में।।ध्रु.।।

आटा मसाला न पीसती है, पैकेट में रेडिमेड लाती है।
सड़े गले मिलावट मिलते, चमक-दमक पैकिंग भाती है।।(1)

पानी छानना नहीं आता है, बिसलरी वॉटर जो पीती है।
दश रुपयों में मिले एक लीटर, जिससे लगे स्टेटस सिंबल।।(2)

बाइक से वाकिंग जाती है, मन्दिर पैदल न जाती है।
किटी पार्टी क्लब में जाती, आहारदान न करती है।।(3)

टीवी सीरियल देखती है, स्वाध्याय प्रवचन न जाती है।
फैशन से शरीर सजाती है, मन का मंजन न करती है।।(4)

ब्यूटी पार्लर जाती है, बड़ों की सेवा न करती है।
गप्प में समय बिताती है, बच्चों को संस्कार न देती है।।(5)

लिपिस्टिक होंठ में लगाती है, खाना बनाना न जानती है।
नेलपॉलिश नखों में लगाती है, घर की सफाई न आती है।।(6)

अप टु डेट मॅडम बनती है, ज्ञान-विज्ञान न जानती है।
हाईहिल सेंडल पहनती है, स्वास्थ्य रक्षा न जानती है।।(7)

प्रेमी के साथ घूमने जाती, अनैतिकपूर्ण काम करती।
इससे उसे शर्म न आती, अच्छे कामों में शर्माती है।।(8)

इन कारणों से होती निष्क्रिय, आलस्य प्रमाद छा जाता है।

व्यवहार ज्ञान सदाचार बिना, बुद्धि का विकास न होता है।।(9)

हिताहित ज्ञान पुण्य पाप बिना, महान् विचार न होता है।
इसके बिना सुख-शन्तिमय, जीवन कभी न बनता है।।(10)

तनाव रहता प्रेम न मिलता, सहयोग भी न मिलता है।
एकली होती उदास रहती, खोटा (छोटा) विचार आता है।।(11)

मोटापा आता शुगर लाता, दिल भी कमजोर होता है।
हड्डी भी होती कमजोर भंगुर, शरीर होता रोग का घर।।(12)

इत्यादि से वह दुःखी भी होती, झगड़ा संक्लेश निन्दा होती।
तलाक देती या घर से जाती, आत्महत्या से जीवन देती।।(13)

इसलिये बहनों सम्भल जाओ, शिक्षित बनो आदर्श बनो।
मूल को सींचो विकास करो, कनकनन्दी का आह्वान सुनो।।(14)

मातृशक्ति उद्धारक-शक्ति बने न कि संहारक

(रागः हे वनगिरि! हे लतागिरि!.....)

हे मातृजाति! हे मातृशक्ति!
सुनो गरिमा तेरी जाति/(नारी जाति) की...., हे मातृजाति!....।।ध्रु.।।

तुझसे जन्म लेते, तीर्थंकर व बुद्ध, रामकृष्ण सहित समस्त ही मानव।
तू ही ब्राह्मी सुन्दरी, चन्दना सीता गार्गी, प्राचीनकाल से ही अनेक सती साध्वी।।
अनेक वीरांगनाये, तेरी जाति में जन्मी, दुर्गा लक्ष्मीबाई व अहिल्याबाई जन्मी।
देशहित के हेतु, संग्राम भी लड़ी, जीजाबाई के सम किंगमेकर बनी।
ऐनीबेसेंट तथा सरोजिनी नायडू, माता कस्तूरबा व माता स्वरूप रानी।
कमला मीरा बेन दुर्गा प्रेमवती, स्वतन्त्र संग्राम की बनी है महानेत्री।।
विजयलक्ष्मी तथा सुचेता कृपलानी, राजनीति क्षेत्र में महान् नेत्री बनी।
महान् वैज्ञानिक मॅडम क्यूरी बनी, कल्पना चावला देखो स्पेस यात्री बनी।।
श्रीमती अमृता व महाश्वेता देवी, अरून्धती राय व सुभद्रा कुमारी।

राण्डा बर्न शक्ति गवेषक भक्त मीराबाई, विदुषी लेखिकायें महिलायें ये भी हुई।।
नाइटिंगल नर्स मदर टेरेसा भी, सेवा के क्षेत्र में देखो महनीया बनी।
अतएव माता को गरिमामय माना, स्वर्ग से भी महान् माता को स्मृति माना।।
कुछ तो मातायें भी कलंकिनी है बनी, मर्यादा शालीनता ममता सर्व छोड़ी।
कामुक ईर्ष्यालु व मायाचारिणी बनी, बातूनी झगड़ालु श्रृंगारप्रिय बनी।।
जिससे बच्चों को संस्कार नहीं देती, नर्क समान देखो परिवार बना देती।
सास-ससुर बड़ो की सेवा नहीं करती, गर्भपात के लिये कारण भी बनती।।

कसरत की जरुरत नहीं

करें घर का काम और रहें स्वस्थ

भारत सहित 17 देशों में प्योर की ओर से कराए एक अध्ययन खुलासा हुआ है जिम में घटों पसीना बहाने से अच्छा है कि आप नियमित रूप से आधे घंटे घरेलु काम करें। अध्ययन 1,30,000 लोगों को शमिल किया गया। इसका विषय भावी शहरी और ग्रमीण महामारी रखा गया था। अध्ययन रिपोर्ट को मेडिकल जर्नल 'लैंसेट' में प्रकाशित किया गया है।

घरेलु कामकाज का असर ज्यादा

30 मिनट घरेलु काम मौत की संभावनाओं को 1/4 से ज्यादा कम करता है
750 मिनट प्रति सप्ताह ब्रिस्क वाकिंग से बेहतर
20 प्रतिशत तक दिल की बीमारियों से राहत
10 प्रतिशत से भी कम लोग भारत में मनोंरजक गतिविधि में शमिल
28 प्रतिशत कम होता है अस्वस्थता का जोखिम
96 प्रतिशत से अधिक लोग गैर मनोरंजक गतिविधि में शामिल

स्वास्थ्य के लिए के बेहतर

कपड़ें धोना, साफ-सफाई व अन्य काम जिसमें शरीरिक गतिविधि शामिल हो।

जोखिम कम करने वाला

प्योर का लगातार दूसरा अध्ययन रिपोर्ट भारतीय जीवनशैली के प्रति लोगों के

पारंपारिक विश्वास को बढ़ावा देने वाला है, क्योंकि दिल से अधिकतर लोगों कम आयु वर्ग के है और वे गैर मनोरंजक गतिविधियों में ज्यादा शामिल होते है। वह लोगों के जोखिम स्तर को कम करने वाला साबित होता है।

150 मिनट प्रति सप्ताह

वर्तमान जीवनशैली में लोग घरेलु कामकाज से बचते हैं। पर घर के काम करने से 12 में से कम से कम एक व्यक्ति मौत से बच सकता है।

चक्रवती तक क्यों बनते हैं निस्पृह समताधारी साधु!?

-आचार्य कनकनन्दी

(चालः आत्मशक्ति से ओतप्रोत....., क्या मिलिये....)

एक प्रश्न मेरे मन-मस्तिष्क में, बार-बार उभरकर आता है...
क्यों राजा-महाराजा सेठ-साहूकार भी, साधु-श्रमण बन जाते हैं...(ध्रुव)...
इसी हेतु मैंने शोध-बोध किया, देश-विदेशों के ग्रथों से....
इतिहास पुराण समाजशास्त्र व, मनोविज्ञान तथा आगमों से....
मैंने जो पाया व अनुभव किया, सुख न मिले सत्ता-संपत्ति से....
ख्याति-पूजा-लाभ-प्रसिद्धि से व, भोग-उपभोग-विभूति से...(1)...
इनसे तृष्णा तो बढ़ती जाती यथा, लवण युक्त पानी से प्यास की...
आकुलता-व्याकुलता अशांति बढ़ती, न मिलती तृप्ति-शांति भी...
यथा दिग्विजयी चक्री भरत को, अनंत सुख न मिला राज्य में...
श्रमण बनते ही अंतमुर्हूत में, अनंत सुख मिला स्व-आत्मा में...(2)...
दिग्विजयी चक्री या राजा-महाराजा, सिकन्दर चँगेज खाँ नेपोलियन...
रावण कंस जरासंध हिटलर को, नहीं मिला आध्यात्मिक सुख-चैन....
शांति कुंथु अरह थे तीर्थंकर कामदेव, चक्रवर्ती सम्राट षट्खण्ड के...
मुनि बनकर चौसठ ऋद्धि प्राप्त कर भी, अखण्ड मौन में साधनारत...(3)...
सर्वज्ञ बनने के अनन्तर ही, दिव्यध्वनि से किये उपदेश...
राग-द्वेष-मोह-ख्याति-पूजा शून्य, निस्पृह भाव से ही दिये उपदेश...

इसी से यह भी शिक्षा मिलती है, निस्पृह समता से ही मिलता सुख...
राग-द्वेष-मोह व ख्याति-पूजा से भी, नहीं मिलता है आत्मिक सुख...(4)...
सर्व कर्म से रहित अवस्था में, जीव बनता (है) सच्चिदानंदमय...
शुद्ध-बुद्ध-आंनदमय बनना ही, 'कनकनन्दी' का परम लक्ष्य...(5)...

''अर्थ (धन) की आत्मकथा''

(अर्थ अनर्थ एवं अर्थ भी है)

तर्ज:-(1. छोटू मेरा नाम रे.... 2. जीना यहाँ.... 3. शांति के सागर अरु....)

अर्थ मेरा नाम है अनर्थ भी काम है,
तो भी मानव मेरे निमित्त करे अनर्थ काम है।।(टेक)
मेरा विश्व में अनेक नाम धन, सम्पत्ति, पैसा भी,
डालर, रूपये, अशर्फी, दीनार, भूमी, चाँदी, सोना भी।
दास, दासी, पशु-पक्षी, यान-वाहन घर भी।
टी.वी., कम्प्यूटर, फ्रिज, वस्त्र, गृहोपकरण घर भी।।अर्थ...
जीवन निर्वाह, परिवार, पोषण दान, धर्म सेवा में,
न्याय से उपार्जित मेरा प्रयोग, उचित कहा है ज्ञानी ने।
इससे भिन्न अधिक संग्रह अन्याय अर्जित धन है।
परिग्रह रूपी महापाप कहते आचार्य जन है।।अर्थ...
फैशन व्यसन दुरूपयोग में जो खर्च होता अर्थ है।
वह भी अनर्थ-अनर्थ जनक कहे धार्मिक ग्रंथ है।
भ्रष्टाचार, शोषण, मिलावट चोरी अन्याय मार्ग से
जो भी मुझे प्राप्त करे, गिरे पतन के मार्ग में।।अर्थ...
लोभी न कभी सन्तुष्ट होता प्रचुर मेरी प्राप्ति से।
यथा अग्नि न शान्त होती अधिक पेट्रोल प्राप्ति से।।
धनी व गरीब दोनों की तृष्णावान जो होय।

सुखी न होता तृष्णावान कभी कुबेर सम भी होय।।अर्थ...
पुत्र भी मारे मात-पिता को मेरे निमित्त जान से।
शोषक-शोषित, धनी-गरीब मेरे कारण बने हैं।।
चोरी, डकैति शोषण, मिलावट आक्रमण व युद्ध है,
भ्रष्टाचार आतन्कवाद विश्वयुद्ध तक होय है।।अर्थ...
मेरे कारण पढ़ाई नौकरी कृषि व वाणिज्य होते हैं।
मेरे कारण सेवा शिल्प, उघोग धन्धे चलते हैं।।
लोभी बापड़ा सब कुछ माने परमेश्वर तक माने हैं।
सर्वगुण कांचनमाश्रयंते ऐसा वह श्रद्धाने है।।अर्थ...
मेरे अभाव उपार्जन, संग्रह, सुरक्षा आदि में दुःखी लालची।
व्यय, दान, धर्म, परोपकार में भी दुःखी होता है लालची।।अर्थ...
मेरा दास सदा दुःखी होता, मेरे हाथ उसके प्राण,
मैं उस मालिक के आधीन जो दान पुण्य करे महान्।।
अच्छे भावों से मेरा उपयोग करे जो दान पुण्य परोपकार में।
मैं उसे मिलता अधिक से अधिक उसके पुण्य प्रभाव से।।अर्थ...
मेरा दास होता पुण्यहीन उसे सदा मैं दुःख ही देता।
धनी, गरीब सदा दुःखी जैसे मलत्याग बिन सुख कहाँ।।अर्थ...
सातिशय पुण्य से तीर्थंकर राजा महाराजा होते।
अर्थ से अनर्थ न करते, अर्थ त्याग साधु होते।।
जिससे आत्मिक अर्थ पाते अन्त मोक्ष धाम पाते।
उनसे सीखो हे मानव जो मुझे त्यागे वो अमृत पाते।अर्थ...
अर्थ को सर्व अर्थ जो माने उसका अनर्थ होता निदान।
आय, व्यय जो न्याय से करे वह पुण्यवान होता महान्।।
इसलिए मानव मेरे निमित्त, अन्याय कभी न करो निदान।
''कनकनन्दी'' के माध्यम से मैं करूँ अपना आत्म आख्यान।।अर्थ...

''इच्छा-अनिवार्यता-भावना का स्वरूप एवं फल''

(इच्छा की मर्यादा, अनिवार्यता की आवश्यकता एवं भावना की व्यापकता)

(चालः यमुना किनारे श्याम....)

इच्छा-आवश्यकता-भावना जीवों की होती, उससे प्रेरित प्रवृत्तियाँ भी होती।
इच्छादि उत्तरोत्तर श्रेष्ठ भी होती, उससे प्रेरित प्रवृत्तियाँ तथा भी/(ही) होती।
तृष्णा से इच्छा होती तथा ही काम, असीम अतृप्त इच्छा तथा ही काम।।(1)
जीवन जीने हेतु अनिवार्यता होती, यह है आवश्यकता सीमित होती।
पवित्र विचार युक्त, लक्ष्य जो होता है, वह भावना जिससे/(श्रेष्ठ) कार्य होता।
भावनानुकूल आवश्यकता होती, वह तो योग्य जो तृष्णा रहित होती।।(2)
राग-द्वेष से युक्त इच्छाएँ होती, तृष्णा कामना संज्ञा स्वरूप होती।
आवश्यकता तो अनिवार्यता होती, साधन उपकरण सहयोग रूप (से) होती।
भावना तो स्व-पर उपकारमय ही होती, दया क्षमा सहिष्णु समता होती।।(3)
इच्छा रूपी अग्नि वृद्धि होती रहती, इच्छापूर्ति की सामग्री जब मिलती।
रावण कंस दुर्योधन की इच्छा अतृप्त रही, सिकन्दर हिटलर की तृष्णा शांत न हुई।
धनी चक्री की लालसा तृप्त न होती, खारे जल से यथा प्यास शांत न होती।।(4)
इच्छा से ही अन्याय अत्याचार होते, शोषण मिलावट भ्रष्टाचार होते।
आक्रमण युद्ध हत्या लूटपाट होते/(करते), आतंकवाद चोरी डाका डालते।
''इच्छा निरोध तप'' जैन धर्म में कहा, ''दुःखों का कारण इच्छा'' बुद्ध ने कहा।।(5)
जीवन निर्वाह हेतु आवश्यकता होती, लक्ष्य हेतु साधन की आवश्यकता होती।
सात्विक आहार जलवायु की होती, शास्त्र कमण्डलु पिंछी औषधि होती।
इसी से अधिक पाप नहीं होते, अन्याय शोषण युद्धादि न होते।।(6)
उदार समता सहिष्णु भावना होती, स्व-पर-विश्वकल्याण की भावना होती।
अहिंसा-सत्य-अचौर्य की भावना होती, क्षमा मुदृता पवित्रता करुणा होती।
इसी से पाप ताप कष्ट न होते, अन्याय अत्याचार युद्धादि विनष्ट होते।।(7)
अतएव भावना को पावन करो, आवश्यकता को सीमित करो।
इच्छा निरोध से तृष्णा को त्यागो, सादा जीवन उच्च विचार करो।

यह जीवन प्रबंध समाजवाद, पर्यावरण सुरक्षा का आदर्शवाद।।(8)
शक्ति अनुसार इसे सभी स्वीकारे, व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र स्वीकारे।
धर्म-अर्थ-काम-मोक्षार्थी भी स्वीकारे, सुख-शांति-तृप्ति से विकास करे।
इसी हेतु 'कनक' भी प्रयासरत, विश्व मानव भी करे योग्य प्रयास।।(9)

जीवन, जडता, जाग्रत, निद्रा

किं जीवितमनवधं किं जाडयं पाटवेऽनभ्यासः
को जागर्ति विवेकीका निद्रा मूढ़ता जन्तो।।(11)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

दूषण रहित होना है जीवन, दक्ष होने पर भी अनभ्यास जडता।
विवेकी जीव होते है जाग्रत, मूढता होती है प्राणीओं की निद्रा।।

समीक्षाः-

आदर्शमय जीवन जीना है जीवन, कंलकितमय जीवन है मरण।
अभ्यास करने से बढती दक्षता, अभ्यास बिन आती दक्ष में जडता।।
हिताहित ज्ञान सहित होते विवेकी, विवेकी जीव ही होते हैं जाग्रत।
मूढता से आती अचेतन अवस्था, निद्रा सम इस में होती निष्क्रियता।।

उजाले की ओर

ज्ञान दूसरे को दिया जा सकता है पर बुद्धिमत्ता नहीं। हम इसे पा सकते है, जी सकते हैं इससे चमत्कार कर सकते है पर इसे न तो दे सकते है और न सिखा सकते है।

-हर्मन हेस, कवि उपन्यासकार, पेंटर

मेरी तमन्ना इच्छा शक्ति के उपयोग की बजाय बुद्धिमत्ता पाने की इच्छा शक्ति ऐसा शक्तिशाली दृष्टिहीन व्यक्ति है, जो अपने कंधो पर लगड़े व्यक्ति को ले जाता है, जो देख सकता है। **-आर्थर शापेनहॉवर, दार्शनिक**

बुद्धिमत्ता के विकास को तुनकमिजाजी और जल्दी आपा खो देने में आती कमी से ठीक-ठाक नापा जा सकता है। **-फ्रेड्रिच नीत्शे, दार्शनिक**

अच्छे लोग अच्छे इसलिए होते है, क्योंकि उन्होंने नाकामियों से बुद्धिमत्ता हासिल की होती है। **-विलियम सारोयान, नाटककार**

मन के लिए बुद्धिमत्ता वही है जो शरीर के लिए सेहत।

-फ्रेकॉइस डे ला रोशफोकु, विचारक

बुद्धिमत्ता तब बुद्धिमत्ता नहीं रहती जब इसमें इतना गर्व आ जाता है कि यह रो नहीं सकती, इतनी गंभीर हो कि हंस न सके और इतनी आत्मकेंद्रित हो कि खुद के अलावा किसी का विचार न कर सके। **-खलिल जिब्रान, दर्शनिक कवि**

किसी व्यक्ति में बुद्धिमत्ता की तब तक शरुआत नहीं होती, जब तक वह यह नहीं पहचान लेता कि उसके बिना भी काम चल जाएगा।

-रिचर्ड बायर्ड, नौसैन्य अधिकारी

ईमानदारी बुद्धिमत्ता की किताब का पहला अध्याय है।

-थॉमस जेफरसन, अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति

बुद्धिमान व्यक्ति उतना ही देखता है, जितना उसे देखना चाहिए। उतना नहीं जितना वह देख सकता है। **-माइकल डे मोंटेन, दार्शनिक**

ज्ञान यह जानना है कि टमाटर किसी पौधे का फल है और इसे फ्रुट सैलड में न डालना बुद्धिमत्ता है। **-ब्रायन ओ ड्रिस्कॉल, अरबी खिलाड़ी**

क्षणभंगुर, चन्द्र किरण सम

नलिनीदलगतजललव तरलं किं यौवनं धनमायुः।
केशशधरनिकरानुकारिणः सज्जना एव।।(12)

पद्यभावानुवाद : (चालः आत्मशक्ति...)

नलिनी-दल-गत-जल-लव-तरल सम होते हैं क्षणभंगुर तीन।
यौवन-धन व आयु क्षणभंगुर, सज्जनता होती चन्द्रकिरण सम।।

ज्ञान गंगा

प्रियप्राया वृत्तिर्विनयमधुरो वाचि नियमः प्रकृत्या कल्याणी मतिरनवगीतः परिचयः।
पुरो वा पश्चात् वा तदिदमविपर्यासितरसं रहस्यं साधूनामनुपथि विशुद्धं विजयते।।

प्रेम से परिपूर्ण व्यवहार, विनय-मधुर वाणी में संयम, निर्दोष परिचय और मिलने के पहले या पश्चात् अपरिवर्तित स्नेह से युक्त सज्जनों का निष्कपट और विशुद्ध चरित्र सदा विजयी होता है।

सज्जन एवं दुर्जन संगति के फल

(रागः हल्दीघाटी मे समर....., गजानना श्री गणराया....)

सज्जन संगति करणीय...सद्गुण सदा वरणीय।
दुर्जन संगति त्यजनीय...दुर्गुण कदा न भजनीय।।

सज्जन शीतल छाया सम...दुःख ताप के उपशम।
दुर्जन अग्नि ताप सम...दुःख ताप के प्रवर्द्धन।।

चन्दन सम सज्जन संग...सुगन्ध शीतल अनुपम।
दुर्गन्ध सम दुर्जन संग...दुर्गन्ध दूषित होता मन।

सज्जन होते दीप सम...स्व-पर प्रकाशित जीवन।
अन्धकार सम होते दुर्जन...स्व-पर अप्रकाशी जीवन।।

मधुर संगीतमय सज्जन...झंकृत हो जाता सुमन।
शोरगुल सम है दुर्जन...तनावमय होते तन-मन।।

सूर्यकिरण समान सज्जन...विकसित होते गुणी सुमन।
कोहरा के सम है दुर्जन...विनाशकारी होते सुमन।।

प्रेरक प्रसन्नकारी सज्जन...प्रोत्साहनकारी मिले सुज्ञान।
कुण्ठा निराशकारी दुर्जन...शंका भय मिले कुज्ञान।।

अमृत समान होते सज्जन...रोग-शोक प्यास शमन।
मद्य समान होते दुर्जन...पाप-ताप/(मद) दुःख जनम।।

उदार सहिष्णु होते सज्जन...स्व-पर उपकारी निर्मल मन।
अनुदार स्वार्थी होते दुर्जन...स्व-पर अपकारी दूषित मन।।

सज्जन संगति करो हे! जन...उन्नतमय करो जीवन।
दुर्जन संगति त्यजो हे! जन...'कनक' संगति करे सज्जन।।

संकीर्ण व स्वार्थी मानव न मानते गुण-सज्जनों को भी

(चाल : तुम दिल की धड़कन...,सायोनारो...,छोटी-छोटी गैया...)

संकीर्ण पंथ-मत या भावानुसार, सही या गलत मानते (है मानव) स्वार्थानुसार।
सत्य-समता से न होता सरोकार, स्व-पर-विश्व हित हेतु न करते विचार।।(1)
क्रोध-मान-माया या लोभ प्रेरित, करते हैं हर कार्य स्वार्थ प्रेरित।
आहार-भय-मैथुन-परिग्रह सह, करते भाव-व्यवहार मोह युक्त।।(2)
धर्म-कर्म करते इन भाव से युक्त, पढ़ाई नौकरी राजनीति सहित।
कृषि-वाणिज्य या सेवा सहयोग, हित या अहित माने स्वार्थानुसार।।(3)
जिससे गुण-अगुणी या ज्ञानी-अज्ञानी, हित-अहितकारी-सुभावी-दुर्भावी।
सच्चे-झूठे या सुगुरु-कुगुरु, स्वार्थानुसार मानते मानव अज्ञानी।।(4)
इसलिये तीर्थंकर बुद्ध ईसा, सुकरात-मीरा या साधु-संत।
प्रताड़ित उपेक्षित होते अनादर युक्त, वैश्या चोर आतंकी भी होते आदर युक्त।।(5)
अच्छी वस्तु को सभी न करते आदर, मद्य-माँस तम्बाखू को भी खाते पामर।
अच्छे भाव-व्यवहार सभी नहीं करते, चोरी-ठगी हत्या बलात्कार भी करते।।(6)
सज्जन ज्ञानी-गुण भी होते उपेक्षित, स्वार्थी मोही-अज्ञानी से होते अपेक्षित।
तथापि सज्जन ज्ञानी/(गुणी) न होते अयोग्य, 'कनक' को मान्य है गुणी व योग्य।।(7)

नरक, सुख, सत्य, प्रिय

को नरकः परवशता किं सौख्यं सर्वसङ्ग विरतिर्या।
किं सत्यं भूतहितं किं प्रेयः प्राणिनामसवः।।(13)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

नरक होता है पराधीन होना, परिग्रह त्याग होता है सुख।
भूतहित करना होता है सत्य, प्राणीओं को स्व-प्राण है प्रिय।।(1)

समीक्षा-

कर्म पराधीनता से मिलता है नरक, कर्म पराधीनता से ही समस्त दुःख।
इन्द्रिय मन के आधीन है नरक, अन्य प्राणीओं के आधीन होना नरक।।(2)
अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह से दुःख, दोनों के त्याग से मिलता सुख।
इस हेतु चक्री तक त्यागते वैभव, बहुआरंभपरिग्रह से नरक प्राप्त।।(3)
केवल वाचनीक न होता है सत्य, प्राणीओं के हित साधन है सत्य।
प्राणीओं को स्व-स्व प्राण है प्रिय, अतएव प्राणी हित होता है सत्य।।(4)

प्रिय से श्रेय मार्ग क्लिष्ट परन्तु श्रेष्ठ

(रागः सायोनारा...,कौन दिशा में ले के चला रे...)

कौन दिशा से तुम चलोगे रे! मनुआ, कौन दिशा में तुम चलोगे
एक आत्मा/(सत्य, मोक्ष) का डगर, एक झूठा डगर
जरा सोच तो तू, लक्ष्य करो तो तू।।

एक प्रिय डगर, एक श्रेय डगर, प्रिय तो राग-द्वेष-मोह डगर।
वह श्रेय डगर बहु लम्बा डगर, राग-द्वेष-मोह से परे डगर।।
राग-द्वेष-मोह तो सरल-सहज है, अनादि काल से ज्ञात डगर है।
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिध्दि डगर है, खाओ-पीओ मजा करो डगर।।
वह श्रेय डगर है बहु क्लिष्ट डगर है, अपरिचित श्रम साध्य डगर है।
ख्याति पूजा लाभ रिक्त डगर है, धैर्य समता व क्षमा डगर है।।
लक्ष्य प्राप्ति से मिले अक्षय भण्डार है, अनन्त ज्ञान एवं दर्श सुख अपार है।
अनन्तवीर्यमय चैतन्य चमत्कार, 'कनक' तेरा श्रेय ही डगर है।।

नारकी की आत्मकथा तथा आत्मव्यथा

(राग : शायद मेरी....., छोटू मेरा नाम है....., भक्ति बेकरार है....)

नारकी मेरा नाम है, नारत रहना काम है।
द्रव्य क्षेत्र व काल भाव से, संत्रस्त रहना काम है।।ध्रु.।।

जन्म से लेकर मरण तक, हर क्षण हर काम में/(से)।
परस्पर को दुःख देते हैं, तन-मन विक्रिया से।।
कष्टकर उष्ण शीत से, क्षुधा तृष्ण की पीड़ा से।
असुरकुमार देवों से, समस्त शरीर रोग से।।(1)

अशुभतर भाव लेश्या से, विषाक्त भोजन पानी से।
संक्लेशित भाव काम से, दुःख पाते पूर्व पाप से।।
पूर्व भव के पाप विशेष, बह्वारंभ परिग्रह अशेष।
क्रोध मान माया लोभ विशेष, हिंसा झूठ चोरी कुशील।।(2)

सप्त व्यसन व अष्टमद से, मिथ्यावश कुभाव से।
जो पाप किये विशेष रूप से, मैं भोग रहा हूँ अशेष से।।
मरना भी मैं चाह रहा हूँ, आत्महत्या भी कर रहा हूँ।।
पाप के फल भोगने हेतु, इसी गति में ही जी रहा हूँ।।(3)

शुभ भी करना चाहता हूँ, तो भी शुभ न कर पाता हूँ।
तीव्र पाप की शक्ति के आगे, अच्छा काम (भी) न कर पाता हूँ।।
मैं हूँ तीन ज्ञान के धारी, तो भी मैं हूँ दुःखियारी।
मैं हूँ विक्रिया तन धारी, तो भी भोगता हूँ दुःख भारी।।(4)

रत्न के बिल में रहता हूँ, कृष्यादि काम न करता हूँ।
स्वच्छन्द भाव से रहता हूँ, तो भी बहु दुःख भोगता हूँ।।
अनावश्यक (भी) क्रोध करता हूँ, मारकाट भी करता हूँ।
कठोर कटु वाणी बोलता हूँ, मनमाना काम करता हूँ।।(5)

पीड़ानुभव व देव प्रबोध से, जाति स्मरणादि हेतु से।
सम्यक्त्व जब उत्पन्न होता, सम्यग्ज्ञानी भी बनता।।
तो भी सभी दुःख दूर न होते, सभी कुकृत्य न त्याग होते।
अतएव पाप न करो मानव, 'कनक' अतः लिखा मेरा निबन्ध।।(6)

''सुखी होने के धार्मिक एवं वैज्ञानिक कारण''

(राग : छोटी-छोटी गैया...., शत-शत वन्दन...)

सुखी होने के कारण को जानो, स्वयं के अन्दर उसे पहचानो।
प्रमुख कारण आत्मा ही जानो, विकार भाव दुःख ही मानो।।ध्रु.।।

सच्चिदानन्द है आत्मस्वभाव, सत्य-शिव-सुन्दर आनन्द भाव।
राग-द्वेष-मोह दुःख स्वभाव, पापकर्म से दुःख ही सम्भव।।

पावन भाव से सुख उपजे, पुण्यकर्म भी कारण दूजे।
दान दया सेवा परोपकार, ध्यान-अध्ययन श्रेष्ठ विचार।।

विज्ञान में अभी सिद्ध हुआ है, हैप्पी हार्मोंस सिद्ध हुए हैं।
डोपामाइन व सेरोटोनिन, ऑक्सीटोसिन व एण्ड्रोफिन।।

कार्टिसोल हार्मोंस उत्पन्न होने से, प्रसन्न भाव होता मन में।
डोपामाइन उत्पन्न होता अच्छे काम से, महान् लक्ष्य के प्राप्त होने से।।

सम्मान से होता सेरोटोनिन स्राव, जिससे विश्वास होता उद्भव।
अविश्वास या हीनभाव से, विपरीत प्रभाव होता स्राव में।।

सुरक्षात्मक विश्वास भाव से, ऑक्सीटोसिन का होता स्राव है।
इसी भाव के विपरीत होनेसे, विपरीत स्राव होता है दिमाग में।।

एण्ड्रोफिन स्राव होता हँसी से, प्राकृतिक निश्चलमय हँसी से।
दर्द समय में भी स्राव होता, जिससे दर्द कम हो जाता।।

कार्टिसोल प्रेरित करता भाव को, खतरों से आगाह करता मन को।
संकट में यह सहयोगी बनता, उत्साह हेतु भी प्रेरित करता।।

धर्म में वर्णन विस्तार से हुआ, विज्ञान में अभी कुछ शोध हुआ।
'धर्मसर्वसुखाकरो' बताया गया, संक्षिप्त में वर्णन 'कनक' किया।।

''प्राकृतिक सुखी जीवन-स्मरण''

(राग : चन्द दिनों का....., तू ही मेरा परम...)

कहाँ गया वह सुखी जीवन....भोला भाला सह जीवन।

दिखावा तनाव से रिक्त जीवन...,प्रदूषण मुक्त वातावरण।।ध्रु.।।

बाल्यकाल का निश्चिन्त जीवन...खेलकूद व मस्त/(स्वस्थ) जीवन।
खाना-पीना घूमना-फिरना....इसी से विभिन्न शिक्षा लेना।।
सात वर्ष में स्कूल जाना...अंक अक्षर संस्कार सीखना।
नीति धर्म सदाचार सेवा...प्रेम संगठन आदर्श जीवन।।(1)

प्राकृतिक वह जीवनचर्या...हर मानव की दैनिकचर्या।
शीघ्र सोना व शीघ्र उठना...प्रभु स्मरण सह कार्य करना।।
प्रातः भ्रमण व मल त्याग...दूर एकान्त में स्वच्छ स्थान।
शुचिस्नान दन्तधौवन...प्रासुक नदी व कूपस्थान।।(2)

शुचिता सहित मन्दिर गमन...पूजा प्रार्थना ध्यान-अध्ययन।
साधुओं के प्रवचन सुनना...साधुओं को आहार देना।।
परिवार सहित भोजन करना...कृषि वाणिज्य सेवा करना।
न्याय नीति से जीविका चलाना...मिलावट भ्रष्टाचार न करना।।(3)

सन्तोष सदाचार युक्त जीवन...तनाव रहित सादा जीवन।
प्रेम संगठन सहयोग सहित...उदार धार्मिक कर्त्तव्य सहित।।
साधु-साध्वी वृद्धों की सेवा...असहाय रोगी गरीब सेवा।
पशु-पक्षी व प्रकृति संरक्षण...माता-पिता सेवा सह जीवन।।(4)

यह जीवन अभी घट रहा है....ईर्ष्या तृष्णा भाव बढ़ रहा है।
भ्रष्टाचार मिलावट बढ़ रहे हैं...प्रदूषण तनाव बढ़ रहे हैं।।
आबाल वृद्ध भी संत्रस्त...आपाधापी जीवन में नहीं सन्तोष।
भौतिकता की बाढ़ आई है...आध्यात्मिकता नहीं रही है।।(5)

अन्धी दौड़ में लगे हुए हैं...प्रतिस्पर्द्धा में लगे हुए हैं।
जिससे दुःखी हो रहे हैं...'कनक' सबको चेता रहे हैं।।(6)

परिग्रह : महापाप क्यों?

(परिग्रह में सभी पाप गर्भित)

(धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से)

(राग : अच्छा सिला दिया....)

तीर्थंकर ने कहा विश्व को, परिग्रह है महान् पाप।
जिस पाप में गर्भित होते हैं, अन्यान्य समस्त पाप।।(1)

इस सिद्धांत को अभी के वैज्ञानिक, कर रहे हैं सत्य-सिद्ध।
प्रदूषण से लेकर ग्लोबल वार्मिंग तक, होते परिग्रह से सिद्ध।।(2)

अंतरंग व बहिरंग रूप से, परिग्रह होते है जिन कथित।
चौदह अंतरंग-बहिरंग दस, संपूर्ण होते परिग्रह चौबीस।।(3)

तृष्णादि होते (है) अंतरंग परिग्रह, जिससे होता है बहिरंग।
चेतन-अचेतन-मिश्र रूप में, बहिरंग होते है परिग्रह।।(4)

सत्ता-संपत्ति आदि बहिरंग परिग्रह, हेतु मानव करते है विविध पाप।
लोभ-मद-मोह अंतरंग परिग्रह, शोषण आदि अनेक पाप।।(5)

खान खोदते व प्रकृति नाशते, पशु-पक्षी मछलियों को मारते।
फैक्ट्री चलाते गाड़ी चलाते, भोग-उपभोग की सामग्री बनाते।।(6)

इसी से प्रकृति का विनाश करते, पर्यावरण प्रदूषण भी करते।
ग्लोबल वार्मिंग इससे बढ़ता, जिससे वातावरण असंतुलित होता।।(7)

अतिवृष्टि अनावृष्टि होती, अकाल भूखमरी अधिक बढ़ती।
ग्लेशियर पिघलते बाढ़ भी आती, समुद्र का जल-स्तर भी बढ़ता।।(8)

भूकंप आता सुनामी बनता, जन-धन का भी विनाश होता।
ओजोन परत में छेद भी होता, अनेक रोगों का प्रकोप बढ़ता।।(9)

पाप भी होता संताप बढ़ता, जीते जी ही नारकी बनते।
मरण उपरान्त नारकी बनते, तीर्थंकर अतः इसे पाप बताते।।(10)

अतएव मानव संतोषी बनो, परिग्रह तृष्णा कभी न करो।
संयमी बनो सदाचारी बनो, 'कनक' चाहे धार्मिक बनो।।(11)

वाचनिक सत्य एवं परम सत्य

(चाल : शत-शत वन्दन.....छोटी-छोटी गैंया...)

विद्यमान कथन ही न होता सत्य, देखा सुना कहना भी न होता सत्य।
प्रिय वचन ही न होता सत्य, सत्य होता है स्व-पर-हित।।(1)
शुचि भाव युक्त स्व-परहित, अमित कठोर भी होता है सत्य।
हित-मित-प्रिय सामान्य सत्य, अमित कठोर गुरु के सत्य।।(2)
देखा-सुना भी मत्स्य का स्थान, धीवर को न कहना सत्य।
चोरी हेतु रास्ता न बताना सत्य, विघ्नकारी सत्य न कहना सत्य।।(3)
सद्गुरु वचन होता है सत्य, हित अमित व कठोर सत्य।
दोष दूरकारी अनुशासन योग्य, अधिक वचन प्रबोधन के सत्य।।(4)
कलहकर वचन नही है सत्य/(सत्य भी कलहकर नहीं है सत्य)
प्रलाप चुगलखोरी नहीं है सत्य।
निरर्थक असम्बद्ध नहीं है सत्य, उद्दण्ड वचन न होता है सत्य।।(5)
हिंसा चोरी व वाणिज्यकारी वचन, सत्य नहीं तिरस्कारपूर्ण वचन।
आरम्भ-परिग्रह कृषि हेतु वचन, सत्य भी असत्य अरतिकर वचन।।(6)
मीठे वचन भी नहीं होते हैं सत्य, ठग चापलूस के मीठे वचन।
बहेलिया वैश्या के प्रिय वचन, प्रलोभनकारी प्रिय नहीं है सत्य।।(7)
वचन सत्य होता है भाव सत्य से, भाव सत्य होता है शुचि भाव से।
राग-द्वेष-मोह से रहित शुचि, सत्य समता सहित होती है शुचि।।(8)
सर्वज्ञ ज्ञानगम्य है परम सत्य, वचनातीत होता है परम सत्य।
शुद्धात्म तत्त्व होता है परम सत्य, 'कनकनन्दी' का स्व-आत्म तत्त्व।।(9)

सुखी एवं दुःखी होने के कारण

(दुःखी की विकृत भावना)

हे दुःखी देश इंडिया सुखी बनने का उपाय करो!

(खुशी के पैमाने पर भारत का स्थान 90वें स्थान पर पृथ्वी में)

(एक अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी रिपोर्ट पर आधारित)

तर्ज : (1. है यही समय की पुकार...2. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों....)

सुनो इंडियन! सुनो दुःखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इसे सुनकर निवारण कर दुःखों के कारण हर प्रकार।।...
तुम हो आध्यात्म देश भारत, विश्व गुरु भी कहलाते थे।...2
अक्षय अनन्त निर्वाण सुख तुम्हारे पूर्वज पाते थे।।...2
इस सुख हेतु चक्रवर्ती का भी भोग-वैभव त्यागते थे।
आत्मा के शोध-बोध-प्राप्ति से परम सुख को पाते थे।।(1) सुनो इंडियन...
तुम तो तुम्हारे पूज्य पुरूषों से विपरीत काम करते हो।।...2
इसलिए तो खुशीस्तर पर 90वें स्थान को पाते हो।।...2
लक्ष्य तुम्हारा भौतिक हुआ खाना-पीना मजा करना।
इसी लक्ष्य से चमड़ी, दमड़ी, पढ़ाई, बढ़ाई में मस्त रहना।।(2) सुनो इंडियन...
इसलिए न्याय-अन्याय व करणीय-अकरणीय न मानते।।...2
भ्रष्टाचार व मिलावट तथा धोकाधड़ी पाप करते।।...2
अकल बिना नकल करते स्वयं को सुपर मानते हो।
फैशन-व्यसन बाह्य दिखावा में शक्ति सम्पत्ति गंवाते हो।।(3) सुनो इंडियन...
आलस्य, प्रभाव, कामचोरी में समय व बुद्धि गवाँते हो।...2
जिसके कारण स्वास्थ्य हानि व आत्मिक पतन करते हो।।...2
फैइम-नेइम मनी गेइन हेतु हर काम तुम करते हो।
शिक्षा, व्यापार, राजनीति, सेवा धर्म भी करते हो।।(4) सुनो इंडियन...
दूसरों के गुण विकास से भी ईर्ष्या-द्वेष-घृणा करते हो।...2
दुःखी रोगी दीन, गरीब का घृणा से सहयोग न करते हो।।...2
गुण-ग्रहण का भाव न रखते, निन्दक गुण द्वेषी बनते हो।
गुण हीन व सदोषी होते भी स्वयं को महान् जताते हो।।(5) सुनो इंडियन...
सादा जीवन उच्च विचार हीन कृत्रिम जीवन ढ़ोते हो।...2
सात्विक पौष्टिक ताजा भोज्य छोड़ तामस भोजन करते हो।।...2
माता-पिता की सेवा न करते संयुक्त परिवार न भाता है।

संकीर्ण-स्वार्थ व स्वच्छन्द जीवन तुमको अधिक सुहाता है।।(6) सुनो इंडियन...
प्रदूषण व गन्दगी फैलाना तेरा जन्म सिद्ध अधिकार।...2
जाति धर्म भाषा क्षेत्र हेतु भेद भाव तुझे प्रियकर।।...2
मन में कुछ, वचन में कुछ और काया से कुछ करते हो।
धर्म शिक्षा व कानून, कार्य में एक रूप न लाते हो।।(7) सुनो इंडियन...
अति लालसा तृष्णा हेतु अन्याय से भी धन कमाते।....2
जन्म-मृत्यु-विवाह पार्टी में फिजूल खर्च भी करते।।...2
इसके हेतु ऋण भी लेते, ब्याज से धन हानि करते हो।
खेल-खिलाड़ी, नट-नटी हेतु फिजूल खर्च भी करते हो।।(8) सुनो इंडियन...
अन्नदाता किसान हेतु सरकार न धन खर्च करती...2
माँस, मद्य व खेलादि हेतु प्रचुर धन भी खर्च करती।।...2
कानून तुम्हारा अति खर्चीला शीघ्र भी न्याय न मिलता है।
राजतंत्र अतिभ्रष्ट तंत्र जंगली राज भी चलता है।।(9) सुनो इंडियन...
इत्यादि कारण तनाव, अशान्ति रोग से पीड़ित होते हो।....2
डिप्रेशन फोबिया आदि से आत्म हत्या तक करते हो।।...2
इन कारणों से तुम्हारी खुशी का स्तर भी घट जाता।
खुशी ही नहीं तो आत्मिक शान्ति का आनंद तू कहाँ पाता।।(10) सुनो इंडियन...
सुख यदि चाहो कुप्रवृत्ति त्यागो करो हे! सत प्रवृत्ति।...2
''कनकनन्दी'' की पवित्र भावना पाओ हे आत्म संतुष्टी।।...2
सुनो इंडियन! सुनो दुःखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इसे सुनकर निवारण कर दुःखों के कारण हर प्रकार।।(11) सुनो इंडियन...

दान, मित्र, अलंकार, भूषण

किं दानमनाकांक्षें किं मित्रं यन्निवर्तयति पापात्।
कोऽलंकारः शीलं किं वाचामण्डनं सत्यम्।।(14)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)
आकांक्षा रहित होता है दान, पाप से बचावे सो ही मित्र।

शील होता है जीवों का अलंकार, सत्य कथन होता है भूषण।।1
समीक्षा-
आकांक्षा रहित उदारता सहित, जो होता दान सो सही दान।
ख्याति पूजा लाभ निदान रहित, शक्ति अनुसार होता सही दान।।2
पाप से बचाना व धर्म में लगाना, ये होते हैं मित्रों के काम।
इससे विपरीत होते है कुमित्र जो होते है स्वार्थसाधक(व) पाप कारक।।3
शील होता है जीवों का अलंकार, फैशन व गहने नहीं अलंकार।
शील होता है सदाचार-सुविचार, शीलवन्त हेतु अलंकार बेकार।।4
हित-मित-प्रिय-वचन है भूषण, इससे विपरीत वचन दूषण।
स्व-पर हितकारी वचन भूषण, शील सत्य रिक्त भूषण दूषण।।5

दान-सेवा-परोपकार से सुख व स्वास्थ्य
(वैज्ञानिक व धार्मिक दृष्टि से)

(चाल : (1) छोटी-छोटी गैंया...(2) शत-शत वन्दन)
सहयोग दान परोपकार जो करता है सो करता है स्व-परोपकार।
इसी से स्वयं को खुशी मिलती है, मिलता है स्वास्थ्य व पुण्य प्रचुर।।
ग्रन्थों (धर्म) में पहले से ही यह वर्णन हुआ, शोध हुआ अभी विज्ञान में भी।।
ऑक्सीटोसिन हार्मोन का होता उत्सर्जन, जिससे बनता है उदारमन।।
जिससे प्रेम-सहयोग-सम्बन्ध बढ़े, सामंजस्य बढ़ता परस्पर में।
मस्तिष्क का वह भाग (भी) सक्रिय होता, जो भाग खुशी भरोसा से सम्बन्धित।।
स्वास्थ्य भी अच्छा होता आयु बढ़ती, तनाव दूर रहे रक्त चाप सामान्य।
विश्वास-सहयोग-सम्बन्ध दृढ़ होते, समाज में मिले आदर व सम्मान।।
बढ़ती कृतज्ञता व सकारात्मकता, चैन-रिएक्शन होता है परस्पर में।
दान-सेवा-करते अन्य भी प्रेरित होते, उदार-सहयोग का होता संचार।।
ऐसा ही दयालु व विनम्र होना, प्रशंसा सान्त्वना व प्रिय बोलना।
अभिवादन करना आशीर्वाद देना, वात्सल्य प्रेम से मुस्कुराना।।

आहार औषधि ज्ञानदान देना, अभय वसतिका उपकरण देना।
वैयावृत्ति करना व उपसर्ग हरना, साधु हेतु सर्वोत्तम दान देना।।
इससे पुण्य-ज्ञान-आरोग्य बढ़े, तीर्थंकर प्रकृति का (भी) होता बन्ध।
अन्त में मोक्ष शाश्वत सुख मिले, 'कनक' का लक्ष्य है पाना निर्वाण।।

भीख-दान-त्याग

(चाल : तुम दिल की धड़कन...)

दीन-हीन/(भिखारी) को भीख देना (है) कर्त्तव्य।
सुपात्र को दान देना है धार्मिक-कर्त्तव्य।।
मोक्ष के हेतु त्याग है कर्त्तव्य उत्तर-उत्तर-श्रेष्ठ तीनों है कर्त्तव्य।।
माँगने पर भीख/(भिक्षा) होता है प्रदान स्वेच्छा आंशिक-त्याग होता है दान।।(1)
स्वेच्छा से सर्व विसर्जन है त्याग अंतरंग-बाह्य-परिग्रहों का त्याग।।
भीख है दयादत्ति अभयदानमय दान है शुभभाव धार्मिक भावमय।।(2)
त्याग करे है मुमुक्षु वैराग्यमय शुभ से शुद्ध संयममयभाव।।
समर्थ-सुपात्र न होते भिक्षा योग्य दान त्याग करो 'कनक' करे त्याग।।(3)

त्याग धर्म दिवस के उपलक्ष्य में

भोग से पतन तो त्याग से उत्थान

(चालः छिप गया कोई रे....)

त्याग धर्म महान् है, रागी नहीं करते। भोग-उपभोग हेतु, परिग्रह धारते।
इसी हेतु राग द्वेष मोह तृष्णा करते, हिंसा झूठ कुशील व चोरी आदि करते।
फैशन-व्यसन व आडंबर करते, शोषण मिलावट भ्रष्टाचार करते।
असि-मसि कृषि वाणिज्य सेवा करते, आरंभ-उद्योग व शिल्प कला करते।
आक्रमण युद्ध व लूट-पाट करते, डकैत हत्या व बलात्कार करते।
शोषक-शोषित मालिक-मजदूर बनते, अन्याय-अत्याचार व कुपोषण बढ़ते।

इसी से असंतोष विप्लव रोष बढ़ते, तोड़-फोड़ गृहयुद्ध भेद-भाव बढ़ते।
अतएव करो त्याग अथवा करो दान, परस्पर उपग्रह सेवा सहयोग दान।
त्याग करो अंतरंग-बहिरंग परिग्रह, श्रमण बनकर करो ध्यान व अध्ययन।
ख्याति पूजा लाभ त्यागो, धारो समताभाव, कषाय क्षय करो पाओ शुद्धात्मा भाव।
जिससे बनोगे सच्चिदानंदमय, इसी हेतु 'कनक' त्यागा सर्व विभाव।

निःस्वार्थ-स्वैच्छिक दान से बढ़ती है शांति संपत्ति

(धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से)

(रागः छोटी-छोटी गैया....., भातुकली....)

सेवा-दान/(परोपकार) जो स्वेच्छा से करते, सुख संपत्ति सह विकास करते।
पुण्य-बंध व पाप दूर करते, रोग-शोक-तनाव से दूर रहते।।
संकीर्ण स्वार्थी व भोगी जो होते, दुःख व तृष्णा से सहित होते।
संताप सहित (वे) पापबंध करते, अतृप्त इच्छा से असंतोषी होते।
धर्म में यह सब वर्णन हुआ है, विज्ञान ने अभी शोध भी किया है।
संकीर्ण-स्वार्थी व भोगी जो होते, डोपामाइन का स्त्राव करते।।
जिससे तीव्र तृष्णा की जागृति होती, इच्छा से इच्छा की जागृति होती।
जिससे संतोष व सुख न मिलते, रोग-शोक व तनाव बढ़ते।।
कार्य करने की क्षमता भी घटती, शांति संपत्ति की न समृद्धि होती।
सेवादान जो स्वेच्छा से करते, ऑक्सीटोसीन का वे स्त्राव भी करते।।
डोपामाइन का भी होता संतुलन, सुख-संपत्ति का भी होता संवर्धन।
ऐसा ही होता (है) जो होते है दयालु, प्रसन्नचित्त व होते जो प्रेमालु।।
बिना माँगे जो देते है दान, क्षमा सहिष्णुता से जो होते सम्पन्न।
सत्ता-संपत्ति व प्रसिद्धि डिग्री से, प्राप्त न होता (सो) मिलता दान से।।
दया-दान-सेवा करो हे! मानव, 'कनक' चाहे सदा पावन भाव।

अशुभ (पाप)-शुभ (पुण्य)-शुद्धोपयोग (मोक्ष) के फल

(दुःख-अभ्युदय सुख-आत्मिक सुख)

(चालः यमुना किनारे....., रघुपति राघव....., शत-शत वंदन.....)

अशुभ-शुभ व शुद्धोपयोग, पाप-पुण्यमय व आत्म-स्वभाव।
क्रमशः फल है अनंत-दुःख, अभ्युदय सुख व आत्मिक-सुख।।-घृ
मिथ्यात्व-कषाय-प्रमत्त-भाव, पंच-पाप सप्त-व्यसन अशुभ।
आर्त्त-रौद्र परिणाम अशुभ, संक्लेश-अशांति भाव अशुभ।।
अशुभ-भाव से बंधता पाप, घातिकर्म सहित एक सो पाप।
स्थावरादि दश अप्रशस्त कर्म, नरक-तिर्यंच व असाता कर्म।। (1)
सर्वत्याग से सर्वज्ञ होता, परिग्रह से नारकी होता,
परिग्रह के कारण जीव-2, बन जाता भ्रष्टाचारी रे।।...
वनस्पति के त्याग के कारण, जिन्दा रहता मानव धरती पर,
अनाज फल दवा आदि से, वृक्ष करता महोपकार रे।।...(2)
दूध, घी, मट्ठा, मलाई आदि, दुधारु मादा से पाता मानव,
वस्त्र, लकड़ी तेल सुगन्धी-2, वनस्पति से पाता मानव रे।।...
त्यागी का सदा होता सम्मान, शोषक का होता अधःपतन,
त्याग से बादल होता ऊपर-2, ग्रहणकर्त्ता नीचे सागर रे...(3)
गति होती है त्याग पूर्वक, बिना त्याग से नहीं है गति,
प्रगति होती त्याग सहित-2, बिन त्याग से प्रगति नहीं रे।।...
सर्वस्व उत्सर्ग होता है त्याग, दान होता है आंशिक त्याग,
संभव न यदि सर्वस्व त्याग, दान तो सदा मानव करो रे।।...(4)
तन मन धन समय श्रम से, त्याग अथवा दान करो रे,
दोनों के बिना हे मानव-2, वृक्ष से भी तू अति हीन रे।।...
विकास उपाय त्याग या दान, ग्रहण करो तू मानव रे,
''कनकनन्दी'' करे आह्वान-2, त्याग से बन जाओ भगवान् रे।।...(5)

ज्ञानदान है महान् दान

तर्जः दिल जाने जिगर...दुनियाँ में रहना है तो...

(1 छोटी छोटी गैया....., 2 सायोनारा....., 3 शत-शत वंदन)

हित मित प्रिय वचन बोलो, योग्य व्यक्ति काल/(क्षेत्र) में बोलो...
पूर्ण ग्रहण करे या अपूर्ण करे, स्व-पर हितकर वचन बोलो....(स्थायी)
इसे भी कहते हैं ज्ञानदान, सभी दानों में श्रेष्ठदान...
तीर्थंकर भी यह दान करते, आचार्य उपाध्याय भी दान करते...
गृहस्थ/(श्रावक) करते चतुः विध दान, तीर्थंकर आदि करते/(हैं) ज्ञानदान...
ज्ञानदान होता है सर्वश्रेष्ठ दान, पाप रहित जो निरवद्य दान...(1)...
इसीलिए ज्ञानदाता होते महान्, अतएव वे होते है गुरु महान्...
अन्य दानी नहीं होते गुरु समान, अन्य दानी होते हैं दानी महान्....
ज्ञान से अज्ञान होता है दूर, हिताहित विवेक होता प्रचुर...
हितग्रहण होता अहित त्याग, जीवन में होता सुख संयोग...(2)...
आहार से एक बार क्षुधा मिटती, अभयदान से एकदा मृत्यु टलती...
औषधि से एक बार रोग मिटता, वसतिका में अल्पावधि निवास होता...
पुनः पुनः क्षुधादि होती रहती, ज्ञानदान से तो मुक्ति मिलती...
मुक्ति से क्षुधादि विनष्ट होती, समस्त समस्याएँ दूर हो जाती...(3)
ज्ञानदाता का ज्ञान बढ़े विशेष, सतिशय पुण्य बन्ध होता विशेष...
गणधर तीर्थंकर केवली होते, सर्व कर्म नष्ट कर सिद्ध भी होते...
अतएव ज्ञानदान करो हे! भव्य, सभी के हित के हो सद्भाव...
स्वार्थ व संकीर्णता करके त्याग, 'कनकनन्दी' चाहे ज्ञान वैभव...(4)...

परोपजीवी से समस्या तथा परस्परोपग्रह से समाधान

(रागः शत-शत वंदन....., शायद मेरी....., सायोनारा.....)

परोपकारी सकलजन वे होते, जो स्वकर्त्तव्य नहीं करते।
आलस्य प्रमाद युक्त भ्रष्टाचार से, जो जिविका निर्वाह करते हैं।।

चोर ठग मिलावटी व कामचोर, शोषक संग्रहक/(जमाखोर जो) भी होते हैं।
वे भी सब परोपजीवी होते हैं, जो अनीति से धन कमाते हैं।
इन दुर्गुणों से युक्त सेठ-साहूकार, नेता-अभिनेता मंत्री भी।
उद्योगपत्ति व राष्ट्रपत्ति होते हैं, परोपजीवी व पूँजीपति।।
अध्यापन बिना शिक्षक, आत्म साधना बिना साधु जन।
जनसेवा बिना सांसद, परोपजीवी मंत्रीगण।।
काम किये बिना कर्मचारी, सुशासन बिना प्रशासन।
न्याय किये बिना न्यायाधीश, होते हैं परोपजीवी याचक।।
अन्नदाता होते हैं किसान, सहयोगी होते है श्रमिक गण।
परोपजीवी न होते हैं कर्त्तव्यनिष्ठ, जो सदाचारी न्याय संयुक्त।।
आत्मसाधक साधु होते आदर्श, वे होते हैं सही शिक्षक।
स्व-पर-विश्वहितकारी वे होते, उनसे उपकृत सभी होते।।
उनकी सेवा करणीय वरेण्य, तथाहि माता-पिता वृद्ध व रुग्ण।
इस अपेक्षा से त्याग महान्, साक्षात् मोक्ष के कारण जान।।
सर्व से पूजनीय होता है त्यागी, पूजक सेवक दानीराजन।।
वन्दे तद्गुण लब्धये पूजा के भाव, अरिहन्त सिद्ध या स्वर्गीय जीव।
पूजनीय वे होते है विशेषतः, जीवन्त पूज्य होते उपेक्षित।।
जीवन्त पूज्य की पूजा आरती से, अधिक करणीय सेवा दान है।
इससे त्याग की प्रवृत्ति जागे, त्याग से निर्वाण पदवी पावे।।

निःस्वार्थ सेवादि का सुफल

(चालः छोटी-छोटी गैया...., तुम दिल की....)
पद प्रतिष्ठा स्वार्थ सुविधा, सभी अधिकार चाहते हैं।
सेवादान परोपकार त्याग, शुचिता न चाहते हैं।।(1)
पद प्रतिष्ठा चाहने वाले, राग-द्वेष युक्त होते हैं।
सेवा दानादि करने वाले, राग-द्वेषादि त्यागते हैं।।(2)

राग-द्वेषादि त्याग बिन न सच्चा सेवादि होते हैं।
पद प्रतिष्ठा हेतु सेवादि न सही सेवादि होते हैं।।(3)
पद प्रतिष्ठा की इच्छा बिना, जो सेवा दानादि करते हैं।
पद प्रतिष्ठादि स्वयं मिलते, स्वर्ग-मोक्ष भी मिलते हैं।।(4)
निःस्वार्थ-पावन भाव से जो, सेवा दानादि करते हैं।
शान्ति-सन्तुष्टि प्राप्त करते, सातिशय पुण्य बाँधते है।।(5)
तन-मन आत्मा स्वस्थ होते, सर्वोदय भी होता है।
विघ्न-बाधा दूर होते, सर्व विकास भी होते हैं।।(6)
मृत्यु परे स्वर्ग-मोक्ष प्राप्त कर, शाश्वत सुख पाते हैं।
'कनकनन्दी' तो ऐसे सेवादि को, आदर्शमय मानते है।।(7)

सर्वोपलब्धि के उपायः स्वात्मोपलब्धि

(रागः ओडिशी-नृत्याभिनय सहित....., सावन का महीना...., मेरे गुरुदेव आये....)
शान्ति प्राप्ति के मुख्य द्वार है, निज आत्मदर्शन।
भेद-विज्ञान का मूल है, शुद्ध निज दर्शन।।
आत्मविश्वास का सूत्र है, निज शक्ति दर्शन।
सत्य दर्शन की चक्षु है, निज स्वयं का ज्ञान।।
मोह विनाश के अस्त्र है, निज आत्म चिन्तन।
सत्य ज्ञान का सूर्य है, शुध्द आत्म विज्ञान।।
कषाय नाश के शस्त्र है, निज आत्म का ध्यान।
सदाचरण का मार्ग है, निज आत्म रमण।।
तनाव नाशक शक्ति है, निज आत्मिक शान्ति।
आनन्द प्राप्ति के स्रोत है, निज आत्मा की प्रीति।।
धर्म का सार स्वरूप है, निज आत्मा की प्राप्ति।
सच्चिदानन्द की प्राप्ति है, शुद्ध स्वात्मोपलब्धि।।

''वचन की विशेषताएँ''

(हित-मित-प्रिय कथन एवं दोषवादे च मौनम्)

(राग: यमुना किनारे श्याम....., सायोनारा-सायोनारा.....)

हित-मित-प्रिय कथन करो...'दोषवादे च मौनं' धारण करो।
अधिक सुनो तथा कम भी बोलो...गुण ग्रहण का भाव भी धरो।।(1)
अहितकर कथन कभी न करो...हितकर वचन सदा ही बोलो।
प्राणी वधकर या मिथ्यावचन....कभी न कहो है निन्दावचन।।(2)
हित सहित तथा मित भी कहो...अनावश्यक अधिक कभी न कहो।
द्रव्य क्षेत्र काल (भाव) योग्य कम ही कहो... मनमाना अपलाप कभी न करो।।(3)
हित-मित सहित प्रिय भी बोलो...अप्रिय कठोर बोली कभी न बोलो।
विद्वेष कलहकारी कभी न बोलो...विनम्र मधुर वचन बोलो।।(4)
इसी हेतु भाव को पावन करो...राग-द्वेष-मोह से रहित करो।
माया-तृष्णा-ईर्ष्या से रहित करो...समता-शान्तिमय भावना करो।।(5)
भाव से कथन प्रेरित होता...भावानुसार कथन होता।
भाव से भावित वचन होता...हित भाव से हित कथन होता।।(6)
मनसंयम से मित कथन होता..समता से मनसंयम होता।
मौन भी इसी के कारक होता...वाद-विवाद तनाव जब न होता।।(7)
मैत्री प्रमोद व समता भाव....करुणा सत्यग्राही विनम्र भाव।
प्रियवचन हेतु होते कारक...प्रियवचन होते मृदुपरक।।(8)
इसी हेतु सत्य महाव्रत भी होता...श्रावक योग्य अणुव्रत भी होता।
सत्य धर्म पालन वचनगुप्ति...इसी हेतु है भाषा समिति।।(9)
इसी से मानसिक शान्ति मिलती...अनेक समस्याएँ दूर भी होती।
कलह वाद-विवाद-द्वेष न होते...'कनकनन्दी' अतः कम बोलते।।(10)

''विवाद-विसंवाद से सत्य व शान्ति अप्राप्त''

(राग: सायोनारा....., शायद मेरी शादी....)

वाद-विवाद नहीं करणीय, हठाग्रह दूराग्रह त्यजनीय।

सनम्र सत्याग्रह भजनीय, संकीर्ण पूर्वाग्रह त्यजनीय।।(1)
सरल सहज भाव करणीय, पाखण्ड व दंभ त्यजनीय।
प्रज्ञा श्रद्धा न त्यजनीय, दीन-हीन भाव न वरणीय।।(2)
सत्य समता शान्ति भजनीय, विवश भय न वरणीय।
प्रेम एकता न खण्डनीय, वैर विरोध न करणीय।।(3)
विवाद से/(बहस से) समाधान नहीं होता, विवाद/(बहस) है संकीर्ण मानसिकता।
पराजित या विजयी दानों, वैचारिक समाधान नहीं पाते।।(4)
विवाद से समय नष्ट होता, सौहार्द्र समन्वय नष्ट होता।
कलह विसंवाद द्वेष बढ़ते, समाधान सत्य नहीं पाते।।(5)
धैर्य से सही करणीय, कर्त्तव्य से सत्य सिद्धनीय।
'सत्यमेव जयते' यह सत्य, विवाद नहीं है हित/(प्रिय) सत्य।।(6)
अनेकान्त स्याद्वाद सेवनीय, प्रमाण नय भी भजनीय।
समता शान्ति रक्षणीय, 'कनकनन्दी' को यह प्रिय।।(7)

यथार्थ से शत्रु-मित्र

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल: मन रे! तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., भातुकली....(मराठी)....., सोयानारा.....)

जिया रे! शत्रु-मित्र न कोईऽऽऽ
अनंत भव में हर जीव सेऽऽऽ संबंध हुए हैं तेरेऽऽऽ...(ध्रुव)...
अनंत काल से अनंत भव मेंऽऽऽ अनंत हुए (पञ्च) परिवर्तनऽऽऽ
सूक्ष्म निगोदिया से देव तक मेंऽऽऽ अनंत हुए जन्म-मरणऽऽऽ
संसार चक्र भी यहीऽऽऽ जिया रे...(1)...
चतुर्गति रूपी संसार मध्य मेंऽऽऽ चौरासी लक्ष योनि मध्य मेंऽऽऽ
पञ्च परिवर्तन अनंत हुएऽऽऽ संबंध अनंतानंतऽऽऽ
संसार भ्रमण यहीऽऽऽ जिया रे...(2)...

भाई-बंधु-सखा-माता-पिता-सुताऽऽऽ पत्नी व पुत्रादि रूप मेंऽऽऽ
संबंध हुए है अनंत बारऽऽऽ शत्रु व मित्र रूप मेंऽऽऽ
अपना-पराया न कोईऽऽऽ जिया रे...(3)...

शत्रु भी अनेक बार मित्र बने हैंऽऽऽ मित्र भी बन गये शत्रुऽऽऽ
तथाहि भाई-बंधु आदि में भीऽऽऽ ऐसे हुए परिवर्तन भीऽऽऽ
शत्रु-मित्र न कोईऽऽऽ जिया रे...(4)...

इसीलिए कोई न अपना-परायाऽऽऽ जानो तू निश्चय सेऽऽऽ
स्व-आत्म तत्त्व ही होता है अपनाऽऽऽ अन्य होता व्यवहार सेऽऽऽ
निश्चय से स्व को जानोऽऽऽ जिया रे...(5)...

आत्म कल्याण हेतु तेरा ही स्वभावऽऽऽ होता है अपना स्व-जनऽऽऽ
तेरे ही राग-द्वेष-काम-क्रोध आदिऽऽऽ होते निश्चय से पर जन ऽऽऽ
आत्म-स्वभाव भज रेऽऽऽ जिया रे...(6)...

लौकिक भाई बंधु शत्रु मित्र प्रतिऽऽऽ जो होते राग-द्वेष-मोहऽऽऽ
ये ही तेरे शत्रु (स्व) स्वभाव ही मित्रऽऽऽ अतः त्यज ये राग-द्वेषऽऽऽ
बनो तू साम्य स्वरूपऽऽऽ/(बन तू शुद्ध स्वरूपऽऽऽ) जिया रे...(7)...

रत्नत्रय सह दशविध धर्मऽऽऽ समता-निस्पृहता व शांतिऽऽऽ
ये ही प्राप्य ये ही तेरे मित्रऽऽऽ जिससे मिले मोक्ष सुखऽऽऽ
'कनक' शुद्ध-बुद्ध बनऽऽऽ जिया रे...(8)...

चाटुकार (चापलूस) की आत्मकथा-आत्मव्यथा

(चालः आत्मशक्ति....)

हम (मैं) है चाटुकार सबसे निराले, सबसे निराले हमारे काम!
स्वार्थ हेतु दीनभाव से, दुर्गुणी की भी झूठी प्रशंसा (करना) काम।।-ध्रुव
मेरी अनेक उपाधियाँ हैं स्तुति पाठक/(वंदी) चापलूस, भाट, मायाचारी।
मेरे अनेक प्रसिद्ध उदाहरण है, शकुनी जयचंद मिरजाफर आदि।।
मेरी और भी अनेक उपाधियाँ हैं हर स्वार्थी दीन-हीन-कायर लोग/(जीव)।

मेरे ही विशाल परिवार में होते हैं, अनेक चम्मचागिरी के लोग/(जीव)।।(1)
हम (वे) सभी अन्य को ठगने हेतु, करते हैं चापलूसी अनेक विध।
नृत्य-गाना-वचन-अभिनय आदि से, करते हैं चापलूसी अनेक विध।।
जाति-मत-पंथ-संप्रदाय, भाषा-व्यापार, राजनीति-देश में।
मेरा सद्भाव रहता है सर्वत्र, राजतंत्र से लेकर लोकतंत्र में।। (2)
मोही रागी दंभी स्वार्थी तो मुझे, अच्छा मानते व स्वयं चापलूस होते।
सत्ता-सम्पत्ति-सुंदरता-डिग्री, प्रसिद्धि की प्रशंसा करके चापलूस बनते।।
नैतिक-आध्यात्मिक गुण-गुणी की, हम तो नहीं प्रशंसा करते।
अष्टमद को हम उत्तम मानते, उसकी प्रशंसा कर हम चापलूस बनते।।(3)
जब हमें सद्गुरु से ज्ञात हुआ, ये सब मोह-मद-माया-मिथ्याचार।
नैतिक व आध्यात्मिक गुण-गुणी, प्रशंसा यथार्थ से धर्माचार।।
तब से हमें स्व-कृतकर्म पर, हो रही है अभी आत्मव्यथा।
चापलूसी को छोड़कर हम कर रहे, गुण व गुणी की प्रशंसा।।(4)
''सद्वृत्तानां गुणगुण कथा दोषवादे च मौनं'' को अपना रहे हैं।
देवशास्त्रगुरु व गुणगुणी प्रशंसा, करने हेतु सूरी 'कनक' भी कह रहे है।।(5)

अनर्थफल, सुख स्रोत सर्व दुःख नाशक

किमनर्थं फलं मानसमसङ्गतं का सुखावहा मैत्री।
सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः सर्वथा त्यागः।।(15)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

मानसिक आकुलता है अनर्थफल, मैत्री होती है सुख का स्रोत।
सर्व दुःख नाशन हेतु कौन (है) दक्ष, अन्तरंग-बहिरंग सर्वथा त्याग।।(1)

समीक्षा-

मानसिक आकुलता से होता पाप बंध, ध्यान-अध्ययन में होती बाधक।
शान्ति-समता कार्य क्षमता नशती, अतएव मानसिक आकुलता अनर्थफल।।(2)
मैत्री भावना से उदारता आती, सेवा दया परोपकार की होती प्रवृत्ति।

ईर्ष्या-घृणा-भेदभाव नशते, जिससे सुख की होती उत्पत्ति।।(3)
सर्व दुःख क्षय हेतु चाहिये मोक्ष, समस्त बन्धनों से रहित (होता) मोक्ष।
अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह (है) बन्धन, अतएव सर्व त्याग से दुःख विनाश।।(4)

कुछ कमी तो है प्रसन्नता मापने के फॉर्मूले में

डॉ.महेश भारद्वाज, स्वतंत्र टिप्पणीकार

वर्ष 2018 की वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट जारी होने के साथ ही फिर से दुनिया भर में प्रसन्नता को लेकर बहस शुरु हो गई है। इधर, दिल्ली सरकार ने स्कूलों में प्रसन्नता को एक विषय के रूप में पढ़ाने को लेकर कवायद पिछले महीने से ही शुरु की है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड भी बच्चों के कंधो पर बोझ कम करने के प्रति गंभीर है। स्कूली हिंसा की बढ़ती वारदातों ने प्रसन्नता की जरूरत को ओर भी गंभीर बना दिया है।

प्रसन्नता को लेकर संयुक्त राष्ट्र भी 2012 से गंभीर है। इसमें संयुक्त राष्ट्र के सलाहकार जेम इलीन का प्रमुख योगदान रहा है। उन्हीं के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र ने जून 2012 में प्रस्ताव पारित करके खुश रहने की जरूरत को 'मानव अधिकार और मूलभूत मानवीय लक्ष्य' के रूप मे स्वीकार किया। तभी से हर साल 20 मार्च को हैप्पीनेस डे या प्रसन्नता दिवस मनाया जाता है और संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों के कतिपय मानदंडों के आधार पर प्रसन्नता के स्तर को मापने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। 'विश्व प्रसन्नता सूचकांक' तैयार करने में जिन मानदंडों का ध्यान रखा जाता है, उनमें जनता को उपलब्ध सामाजिक और संस्थागत समर्थन, अनुमानित स्वस्थ्य आयु, सामाजिक आजादी, समाज में एक-दूसरे के प्रति उदारता व भरोसा और उस देश में भ्रष्टाचार के बारे में लोगों की राय जैसे जीवन की गुणवत्ता से जुड़े विषय शामिल है।

इन मानदंडों के हिसाब से 2013-15 में हम 118 वें पायदान पर, 2017 में 122 सवाल उठ रहें है, आखिर ऐसा क्या हो गया कि प्रसन्नता को लेकर विश्वव्यापी चिंता होने लगी है। भारत के इस क्षेत्र मे पीछे होने के अपने कारण है। कुछ कमी तो प्रसन्नता को मापने के फॉर्मूले में भी है। इसमें रखे गए मानदंड विकसित

देशों की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर निर्धारित किए गए हैं। ऊपरी पायदान वाले देशों में संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव नहीं है जिसे भारत जैसे विकासशील देशों में प्रमुखता से देख जा सकता है। जहां फिनलैंड कुदरती सुरक्षा, बच्चों की देखभाल, अच्छे स्कूल और मुफ्त चिकित्सा सुविधाओं की वजह से अव्वल नंबर पर है वहीं अमरीका आमदनी बढ़ने के बावजूद मोटापे, ड्रग्स की लत, हताशा के कारण 4 स्थान फिसलकर 18वें स्थान पर पहुंच गया है।

हमारे यहां अभी तो आबादी के बड़े हिस्से को पेट भर भोजन और पीने का स्वच्छ पानी तक मय्यसर नही हो पा रहा है। ऊपर से राजधानी नई दिल्ली सहित देश के बड़े शहरों में साफ हवा तक को लेकर हो रही चिंता ने तो प्रसन्नता के विचार के होश ही उड़ा दिए हैं। हां, आबादी की अनुमानित औसत आयु अवश्य बढ़ी है लेकिन स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर हालत में कोई खास बदलाव नहीं आया है। भ्रष्टाचार तो राष्ट्रीय चिंता का विषय बरसों से है।

खुशी में कमी की जड़ है संसाधनों की कमी, जिससे कहीं पहले वाली पीढ़ियों ने तो कहीं मौजूदा पीढ़ी ने जीवन में अभाव देखे और लोगों में संचय की भावना तीव्र होती गई, जो बाद में सामाजिक मूल्यों के रूप में स्थापित हो गई। नतीजतन लोग तीन पीढियों की चिंता में रहते है, भले ही खुद का जीवन कितना ही नारकीय क्यों न बना रहे।

अनुभवपरक मनोवैज्ञानिक व आध्यात्मिक शोधपरक कविता

मन के अस्थिर एवं स्थिर होने के कारण

(चालः तुम दिल की धड़कन....., छोटी छोटी गैया....., सायोनारा.....)

मन होता है अति चञ्चल...बिजुली समान अति चपल...
संकल्प-विकल्पात्मक मन...राग-द्वेष सहित जो मन...
क्षायोपशमिक होता मन...द्रव्य मन तथा भाव मन...
संज्ञी जीव ही होते सम्यक्त्वी...असंज्ञी जीव सभी मिथ्यात्वी...(1)...
मन चञ्चल के कारण सुनो...राग-द्वेष-मोह-कामादि मानो...
इनके अभाव से मन स्थिर...समता शुचि से होता स्थिर...

इन्द्रियों की प्रवृत्ति से भी अस्थिर... दोषों के कारण से मन चञ्चल होता...
वाद-विवाद व विकथाओं से...फैशनी-व्यसनी-दुर्जन संगति से...(2)...
पवन से जल में होता कलोल...पवन शांत से होता स्थिर...
अग्नि से जल में (यथा) उबाल आता... अग्नि शांत से उबाल शांत होता...
तरल जल में तरंगें आती...ठोस जल (बर्फ) में तरंगें नहीं उठती...
तथाहि राग-द्वेषादि रहित मन...शांत-स्थिर होता अचल मन...(3)...
ध्यान-अध्ययन व आत्मज्ञान से...आत्मविश्वास युक्त श्रेष्ठ लक्ष्य से...
सादा जीवन सह उच्च विचार से...मन स्थिर होता है साम्य भाव से...
धैर्य सहिष्णुता व संतोष से...क्षमा मृदुता व सरलता से...
निर्मल भाव व व्यवहार से...स्थिर मन होता है निर्दोष भाव से...(4)...
ईर्ष्या तृष्णा व घृणा रहित से...दीन-हीन-अंहकार रिक्त से...
निस्पृह निराडम्बर शुचि भाव से...स्थिर मन होता वीतरागता से...
लंद-फंद व द्वंद रिक्त से...पर निन्दा अपमान शून्य भाव से...
सु द्रव्य क्षेत्र व काल भाव से...'कनक' स्थिर होता मन आत्मध्यान से...(5)...

आखिर आपका मूड क्यों खराब रहता है?

अगर आपका मूड कभी खराब और कभी ठीक रहता है तो इसका मतलब है कि आपको भी मूड डिसऑर्डर है। इसे मूड स्विंग भ्रमित न हों, मूड स्विंग में बिना वजह मूड खराब रहता है लेकिन मूड डिसऑर्डर में स्थिति ज्यादा गंभीर होती है।

-रेखा देशराज

कब समझें खतरे के संकेत : इस बात में कोई दोराय नहीं है कि ऑफिस में बॉस की डांट से किसी का भी मूड खराब हो जाता है। अपने पार्टनर की बेवफाई, रिलेशनशिप में गड़बड़ी यह सभी अचानक पैदा होने वाली ऐसी समस्याएं है, जो दिमाग में विस्फोट पैदा करके हमें चिड़चिड़ा और गुस्सैल बनाती हैं। शरीरिक और मानसिक थकान इस आग में घी का काम करती है।

खुशी, तनाव, डर, डिप्रेशन और भय इन सभी मनोंभावों का सीधा संबधं

हमारे मस्तिष्क से होता है। हमारा मस्तिष्क न्यूरोट्रांसमीटर जैसे कैमिकल को छोड़ता है। मूड डिसऑर्डर से पीड़ित व्यक्ति में इन्हीं न्यूरोट्रांसमीटर यानी सेरोटिन, डोपामाइन, नोरपेनीफ्राइन के स्त्राव में गड़बड़ी हो जाती है। कई बार ऐसा मौसम बदलने पर भी होता है। जैसे सर्दी के दिनों में धूप कम निकलने से और दिन रात के तापमान में परिवर्तन होने से सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर हो सकता है, जिसका हमारे दिल और दिमाग पर बुरा असर पड़ता है। इसके अलावा लगातार काम का प्रशेर, काम के लंबे घटें, नाइट शिफ्ट्स के कारण भी मूड डिसऑर्डर हो सकता है।

इसे सामान्य समझें: इन न्यूरोट्रांसमीटर यानी हार्मोन्स के असंतुलन से उपजे मूड डिसऑर्डर के लिए कई दवाईयां और थैरेपी बाजार में हैं लेकिन इसमें डाइट यानी पोषण का स्तर सबसे महत्वपूर्ण चीज है। कुछ लोग इस कर्फट फूड भी कहते हैं। उदाहरण के तौर पर परेशानी में चॉकलेट या मीठा मूड को दुरुस्त करता है। मीठी कैंडिज और काबोहाईड्रेटयुक्त भोजन सेरोटिन के स्तर में वृद्धि करता है और इससे हमें अच्छा महसूस होता है। लेकिन हमेशा खुश रहने के लिए हमें इन चीजों का सहारा नहीं लेना चाहिए, न ही ज्यादा खाना चाहिए। हरी पत्तेदार सब्जियाँ, केला और दूसरी अन्य चीजों को अपनी डाइट का हिस्सा बनाना चाहिए। मूड डिसऑर्डर से तुरंत आराम पाने के लिए फ्रूट, सूप या सलादा अच्छे विकल्प हैं।

कॉफी, चाय और दूसरे एल्कोहयुक्त ड्रिंक्स कम मात्रा में लेने चाहिए। यदि एक या दो पैक लेने से आपका बिगड़ा मूड सही हो जाता है तो अच्छी बात है, इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन इसे न तो रोज की आदत बनायें और न ही ज्यादा पीयें। बार-बार मूड खराब न हो इसके लिए एक्सरसाइज भी एक बेहतर विकल्प है। क्योंकि एक्सरसाइज से शरीर में सेरोटिन और डोपामाइन हार्मोन्स में वृद्धि होती है। पैदल चलें और किसी को साथ लें ताकि अपनी समस्याओं को दूसरों के साथ शेयर करने से मूड ठीक हो जाये। अब अगली बार अगर आपका मूड खराब हो तो थोड़ी देर बैठकर आराम करें, चॉकलेट खाएं। अपने दोस्त को फोन करें और उनसे गुफ्तगु करें जिनसे आप प्यार करते हैं।

विकल्प-संकल्प-संक्लेश नाश हेतु मेरी साधना

(विकल्प से संकल्प व संक्लेश (दुःख-चिन्तादि))

(चालः मन रे! तू काहे न धीरे-धरे....., सायोनारा.....)

जिया रे! तू काहे विकल्प करे ऽऽऽ
विकल्प से संकल्प-संकल्प से संक्लेश ऽऽ चैनरियेक्सन से चलेऽऽऽ...(ध्रुव)...

सुखी-दुःखी हूँ या हर्ष-विषाद (या)ऽऽ मन में उत्पन्न नाना समस्याएँ ऽऽ
क्या होगा या क्या न होगा रूपीऽऽ विभिन्न विषम कल्पनाएँऽऽ
त्यज ये विकल्प ज्वालाएँऽऽ
लीन हो समता शांति मेंऽऽ...जिया...(1)...

अनात्म तत्त्व को अपना माननाऽऽ होता है संकल्प या कामनाऽऽ
तन-मन-धन-नाम-मान आदिऽऽ राग द्वेष मोह काम क्रोध तृष्णाऽऽ
इन्हें स्व मानना संकल्प-कामनाऽऽ
इन्हें त्याग हेतु करो दृढ़ संकल्प/(प्रतिज्ञा)ऽऽ...जिया...(2)...

संकल्प-विकल्प से होता है संक्लेशऽऽ संक्लेश है मलिन-परिणामऽऽ
चिन्ता-तनाव व उदासीनता-भयऽऽ राग द्वेष मोह से क्षोभित परिणामऽऽ
कर्मबंध के ये प्रमुख कारणऽऽऽ
समस्त दुःख इसी से जायमानऽऽ...जिया...(3)...

तू तो चेतन स्वतंत्र व मौलिकऽऽ स्वयंभू-स्वयंपूर्ण-अविनाशीऽऽ
अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमयऽऽ अनंत वैभवधारी अविभागीऽऽ
स्व-स्वरूप में बनो विश्वासीऽऽ...जिया...(4)...

अनुभव भी तेरे हो रहे अनेकऽऽ तीनों के त्याग से लाभ अनेकऽऽ
समता-शांति-निस्पृहता बढ़तीऽऽ साधना व होती प्रभावनाऽऽ
भक्त शिष्यों की बढ़ती भावनाऽऽ
सेवा दान में बढ़ती भावनाऽऽ...जिया...(5)...

विकल्प-संकल्प-संक्लेश त्यागकरऽऽ निर्विकल्प स्व-संकल्पी तू बनऽऽ

निस्पृह-निराडम्बर-निष्कम्प निर्भयऽऽ आत्मनिर्भर-स्वावलंबी तू बनऽऽ
शुद्ध-बुद्ध-आनंद घनऽऽ
'कनक' स्वयं में बनो परिपूर्णऽऽ...जिया...(6)...

उजाले की ओर

प्रसन्नता किसी पुष्प की सुगंध की तरह प्रसारित होकर सारी अच्छी चीजों को आपकी ओर आकर्षित करती है। **-महर्षि महेश योगी**

प्रत्येक मिनट प्रेम, गरिमा और कृतज्ञता के साथ जीने का आध्यात्मिक अनुभव है प्रसन्नता। **-डेनिस वेटली, मोटिवेशनल स्पीकार**

प्रतिदिन के जीवन के सारे विवरणों मे गहरी दिलचस्पी लेने में ही प्रसन्नता का सच्चा रहस्य छिपा हुआ है। **-विलियम मॉरिस, टेक्सटाइल डिजाइनर**

नैतिकता इस बात का सिद्धांत नहीं है कि हम खुद को कैसे प्रसन्न रखें बल्कि यह इस बात का सिद्धांत है कि हम कैसे खुद को प्रसन्नता का हकदार बनाएं।

-एमेन्युएल कांट, दार्शनिक

प्रसन्नता सरल-सा-दिन-प्रतिदिन का चमत्कार है, जैसे पानी और हमें इसका पता ही नहीं हैं। **-निकोस कंजांत्जकिस, लेखक**

जीवन में प्रसन्नता के लिए तीन चीजें जरूरी हैं-करने के लिए कुछ काम, प्रेम करने के लिए कोई और, किसी चीज के लिए उम्मीद।

-जोसेफ एडिसन, निबंधकार

यदि जो मिला है उसके प्रति किसी के मन में कृतज्ञता नहीं है तो पता नहीं वह किस कारण ऐसा सोचता है कि अधिक मिलने पर उसे प्रसन्नता मिलेगी।

-रॉय टी बेनेट, राजनेता

प्रसन्नता कोई स्टेशन नहीं है जहां आप पहुंचते है बल्कि यह तो यात्रा का तरीका है। **-मागरिट ली रनबेक, लेखक**

समाज की प्रसन्नता यानी सरकार का अंत।

-जॉन ऐडम्स, अमेरिका के दूसरे राष्ट्रपति

यह पता चलना कि क्या संभव है, प्रसन्नता की शुरुआत है।

-जॉर्ज संतायाना, दार्शनिक

प्रसन्नता कर्तव्य निभाने का स्वाभाविक पुष्प है। **-फिलिप ब्रुक, बिशप**

ईर्ष्या के रूपान्तरण से विकास

(रागः चौपाई....., नरेन्द्र छन्द.....)

रूपान्तरण कर ईर्ष्या भाव का, अग्नि का यथा खाना बनाने का।
दुर्भावना के ईर्ष्या अहितकर, सुभावना से करो रूपान्तर।।
स्वयं का मूल्यांकन स्वयं ही करो, निष्पक्ष भाव से यथार्थ करो।
दूसरों से ईर्ष्या कभी न करो, दूसरो से आगे बढ़ते चलो।।
दूसरों की प्रगति से शिक्षा लो, उनसे भी आगे बढ़ते चलो।
दूसरों को पीछे मत धकेलो, दूसरों की प्रगति भी करते चलो।
ईर्ष्या रूपी अग्नि का कर रूपान्तर, उससे करो हो स्व-दोष दहन।
उससे स्वशक्ति जागृत होगी, प्रगति के हेतु सहयोगी बनेगी।।
दूसरों के अच्छे गुण देखा भी करो, दूसरों की प्रशंसा सुना भी करो।
उनसे भी श्रेष्ठ गुणी बनते चलो, प्रशंसनीय कार्य किया भी करो।।
स्वयं के गुण जब अधिक होंगे, अधिक प्रशंसनीय जब बनोगे।
श्रेष्ठ ज्येष्ठ आदर्श जब बनोगे, अन्य प्रति ईर्ष्या भाव न होंगे।।
क्षुद्र संकीर्ण व्यक्ति ईर्ष्या करते, ज्वलनशील ही ईंधन बनते।
अमूर्तिक आकाश न कभी जलता, महान् व्यक्ति ईर्ष्या नहीं करता।।
वन्दे तद्गुण लब्धये भाव सहित, आध्यात्मिक विकास लक्ष्य से युक्त।
महान् व्यक्तियों के गुणानुराग, विकास हेतु है शुभानुराग।।
इससे बनते महान् व्यक्ति मानव, साधु संत व साधक जन।
शुभ से शुद्ध प्राप्त महान् गुण, इस हेतु 'कनक' करे प्रयास।।

पावन भावना एवं व्यवहार

(रागः अच्छा सिला दिया....)

''सत्यमेव जयते'' का गान गायेंगे, सदाचरण को सदा पालेंगे।
''परस्पर उपग्रहों'' काम करेंगे, वैर-विरोध ईर्ष्या नहीं करेंगे।।(ध्रुवपद)।।
''अहिंसा परमोधर्म'' हम पालेंगे, पर्यावरण सुरक्षा हम करेंगे।
''हित-मित-प्रिय'' हम बोलेंगे, अन्यथा मौन हम पालेंगे।।(1)
''जीओ और जीने दो'' काम करेंगे, वैश्विक शान्ति हम लायेंगे।
''विद्या ददाति विनय'' हम पढ़ेंगे, विनम्र भाव से हम बढेंगे।।(2)
''यथा बोया तथा पाया'' हम मानेंगे, पुरुषार्थ से हम भाग्य पायेंगे।
''आत्मदीप परदीप'' हम बनेंगे, तम विनाश/(अन्धेरा नाश) हेतु ज्योति बनेंगे।।(3)
''लोभ पाप का बाप'' हम मानेंगे, शोषण भ्रष्टाचार नहीं करेंगे।
''सन्तोष परम सुख'' हम मानेंगे, भोग लालसा तृष्णा नहीं करेंगे।।(4)
''भाव से भाग्य निर्माण'' हम करेंगे, स्वर्ग-नरक-मोक्ष हम मानेंगे,
''वस्तु स्वभाव धर्म'' हम मानेंगे, समता भाव से हम जीयेंगे।।(5)
''विश्वगुरुत्व अनेकान्त'' को मानेंगे, उदार-सहिष्णु हम बनेंगे।
''स्याद्वादमयी वाणी'' बोलेंगे, पूर्वाग्रह-दुराग्रह हम त्यजेंगे।।(6)
गुरु गुणी जनों को हम मानेंगे, अनक्षरी ज्ञान (पाठ) हम पढ़ेंगे।
तोतारटन्त पाठ नहीं पढेंगे, वाचन-पाचन-अनुभव करेंगे।।(7)
सत्य समता शान्ति हम पायेंगे, आदर्शमय जीवन हम जीयेंगे।
''नहि ज्ञानेन सदृश्यमिह विद्यते'', आध्यात्म ज्ञानमय हम बनेंगे।।(8)
''प्रमत्तभावमय हिंसा'' छोडेंगे, आध्यात्मिक विकास हम करेंगे।
ढोंग-पाखण्ड आडम्बर त्यजेंगे, सरल-सहज-पावन बनेंगे।।(9)
सात्विक भोजन हम करेंगे, फैशन-व्यसन नहीं करेंगे।
सनम्रसत्यग्राही हम बनेंगे, अन्धानुकरण नहीं करेंगे।।(10)
स्व-पर उपकारी हम बनेंगे, विश्वमैत्री भाव हम धरेंगे।

उदार पवित्र भाव हम धरेंगे, 'कनक' की भावना मोक्ष वरेंगे।।(11)

अन्धा, बधिर-गूँगा

कोऽन्धो योऽकार्यरतः को बधिरो यः श्रृणोति न हितानि।
को मूको यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानति।।(16)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

अकार्यरत होता है अन्धा, जो न हित सुने वह बधिर।
सही समय में जो प्रिय न बोले, वह होता है मूक निश्चय।।(1)

समीक्षा-

हिताहित विवेक रहित है अन्धा, जो अहित में होता प्रवृत्त।
अन्धा तो न देखता बाह्य वस्तु, अकार्य रत न जानता हिताहित।।(2)
हित सुनने वाला होता है श्रोता, श्रोता होता है शिष्य व श्रावक।
ऐसा जीव होता अकार्य से दूर, इससे विपरीत होता है बधिर।।(3)
प्रिय वचन से सुख उपजता है, होता है भावों का सही सम्प्रेषण।
जिससे होता है स्व-पर उपकार, अन्यथा होता मूक समान।।(4)

यथार्थ सत्य-तथ्य व ढ़ोग-पाखण्ड-आडम्बर

-आचार्य कनकनन्दी

(चालः छू लेने दो नाजुक होंठों को....)

शुद्ध नहीं निज भावना...धार्मिक हुए तो क्या हुए!?...
जाना नहीं निज आतमा...ज्ञानी हुए तो क्या हुए!?...(टेक)...
समता नहीं है भाव में...श्रमण/(साधु) हुए तो क्या हुए!?...
तृष्णा की कमी नहीं हुई...तपस्वी हुए तो क्या हुए!?...
पूज्य के गुण अपनाते नहीं...पूजा करने से क्या लाभ है!?...(1)...
शोषण-अहंकार न कम हुआ...दान करने से क्या लाभ है!?
ग्राम/(नगर) में तो धर्म नहीं करते...तीर्थ यात्रा से क्या लाभ है!?...

पावन भाव-व्यवहार नहीं...पर्व मनाने से क्या लाभ है!?...(2)...
दान-दया-सेवा नहीं करते...धार्मिक ढ़ोंग से क्या लाभ है!?...
संस्कार-सदाचार रिक्त होते...शिक्षित होने से क्या लाभ है!?...
प्रगतिशील-उदार नहीं बने...आधुनिक होने से क्या लाभ है!?...(3)...
राष्ट्र की सेवा तो नहीं करते...नेता बनने से क्या लाभ है!?...
सत्यनिष्ठा व दया नहीं...न्यायधीश होने से क्या लाभ है!?...
निःस्वार्थ भाव से सेवा नहीं...(सामाजिक) कार्यकर्त्ता हुए तो क्या हुए!?...(4)
गौरवशील भाव-व्यवहार नहीं...गुरु होने से क्या लाभ है!?...
विनम्र-गुणग्राही-योग्य नहीं...शिष्य/(छात्र) होने से क्या लाभ है!?...
निःस्वार्थ भावना भक्ति नहीं...भक्त होने से क्या लाभ है!?...(5)...
परम सत्य को जाना नहीं...वैज्ञानिक हुए तो क्या हुए!?...
आत्मा का दर्शन तो किया नहीं...दर्शनिक हुए तो क्या हुए!?...
मननशील व उदार नहीं...मानव हुए तो क्या हुए!?...(6)...
नैतिक गुण-कोमलता नहीं...कलाकार(अभिनेता) हुए तो क्या हुए!?...
शान्ति-संतुष्टि व न्याय नहीं...धनी/(उद्योगपति) हुए तो क्या हुए!?...
'कनक' ने संक्षिप्त वर्णन किया...अनुकरण बिना क्या लाभ है!?...(7)...

मरण, अमूल्य, शल्य

किं मरणं मूर्खत्वं किं चानर्घ्यं यदवसरे दत्तम्।
आमरणात्किं शल्यं प्रच्छन्नं यात्कृतमकार्यम्।।(17)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

मरण क्या है मूर्खत्व दुर्गुण, अमूल्य क्या है योग्य अवसर में दान।
छिपकर किया गया जो दुष्कार्य, मृत्यु पर्यन्त होता है शल्य।।(1)

समीक्षा-

मरण सम कष्टप्रद है मूर्खत्व, हिताहित विवेक रहित से।
स्व-पर हितकर काम न होते, स्व-पर अहितकर काम होते।।(2)

योग्य अवसर में दिया हुआ दान, स्व-पर हितकर होता है।
स्वर्ग मोक्ष दायक होते सुदान, अतएव सुदान अमूल्य होता है।।(3)

छिपकर जो करते हैं कुकार्य, निन्दा-गर्हा-प्रायश्चित्त रिक्त।
उनका पाप काटे सम कष्ट देता, यथाहि छिपा हुआ कांटा दे कष्ट।।(4)

प्रयत्न, उपेक्षा

कुत्र विधेयो यत्नो विद्याभ्यासे सदौषधे दाने।
अवधारणा क्व कार्या खल परयोषित्परधनेषु।।(18)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

सदा ही प्रयत्न विधेय है, विद्याभ्यास औषध दान में।
उपेक्षा भाव करणीय है दुष्ट पुरुष, पर स्त्री व पर धन में।।(1)

समीक्षा-

केवलज्ञान होने पर होता सम्पूर्ण ज्ञान अन्यथा सभी अपूर्णज्ञान।
जब तक न होता है केवलज्ञान, तब तक विद्याभ्यास करणीय।।(2)
औषधदान भी सदा करणीय, स्व-पर रोग दूर करने हेतु।
माध्यस्थ भाव करणीय दुर्जन-पर स्त्री व पर धन ग्रहण हेतु।।(3)
तीनों से राग-द्वेष मोह न करणीय, समता-शान्ति धर्म हेतु।
''माध्यस्थ भाव विपरीत वृत्तौ'' आर्त्त रौद्र ध्यान त्यजने हेतु।।(4)

कार्य से पुरुषार्थ श्रेष्ठ

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ की मीमांसा

(चालः तुम दिल की धड़कन...., छोटी-छोटी गैया....)

पुरुषार्थ व कार्य होता एक समान...दोनों में अन्तर होता जानो महान्...
आत्मा के लिए होता पुरुषार्थ महान्...सांसारिक प्रयोजन में होता है कार्य...(स्थायी)...
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र युक्त...होता है पुरुषार्थ व मोक्ष निमित्त...
असि मसि कृषि वाणिज्य व शिल्प...नौकरी आदि होते है संसार निमित्त...

'पुरुष' होता 'आत्मा' व 'अर्थ' है 'प्रयोजन'...आत्मार्थ प्रयोजन वह होता पुरुषार्थ...
आत्मविशुद्धि आत्म-उपलब्धि के लिए...ध्यान-अध्ययन तप (त्याग) आत्मा के लिए...(1)
संसार दुःख परे जो सुख में धरे...वही होता 'धर्म' जो आत्मा ही वरे...
इसी धर्म हेतु होते चारों पुरुषार्थ...धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-पुरुषार्थ...
'धर्म' 'मोक्ष' रहित 'काम' व 'अर्थ'...नहीं हो सकते यथार्थ से पुरुषार्थ...
यथा कुलटा अश्लील चोर डाकू भ्रष्टाचारी...नहीं होते हैं 'काम' व 'अर्थ' पुरुषार्थी...(2)...
'यतिजनयतु' अर्थे काम को सेवते...'गृहस्थाश्रम' हेतु अर्थ को सेवते...
अर्थ व काम सेवन तो होता ही पाप...अणुव्रत सेवन से होता है पुरुषार्थ...
चारित्र मोह क्षीण से (पंच) महाव्रत पालते...सर्व सन्यासी बनकर श्रमण होते...
'अर्थ' 'काम' सेवन पूर्णतः त्यागते...आत्म-प्रयोजन में दोनों बाधक होते...(3)
पढ़ाई से लेकर सभी राजकार्य सहित...कृषि से लेकर उद्योगपति सहित...
नट-नटी-खिलाड़ी प्रतिस्पर्द्धाजयी...उक्त कारणों से न होते सही पुरुषार्थी...
इन्हें कहते अध्यवसायी-कार्यकर्त्ता...यह है भारतीय संस्कृति की महानता...
तीर्थंकर गणधर आचार्य पाठक श्रमण...यथार्थ से करते हैं पुरुषार्थ महान्...(4)
राजा-महाराजा-चक्री-सेठ साहूकार...विद्वान् लेखक कवि व विविध कलाधर...
अर्थ-काम त्याग से वे बने श्रमण...'कनकनन्दी' इसी हेतु बना है श्रमण...(5)

मनन-चिन्तन स्मरणीय योग्य

(चालः तुम दिल की धड़कन....)

मनन-चिन्तन स्मरणीय..आत्मतत्त्व सदा वरणीय।
राग-द्वेष-मोह त्यजनीय...सत्य समता वरणीय।।

मनन से मन होता शान्त...शान्ति से ज्ञान होता प्रगट।
जिससे आनन्द होता प्रगट...जिसे चाहते हैं जीव अनन्त।।(1)
चिन्तन से चिन्ता होती नष्ट...जिससे दुःख होता शान्त।
जिससे सुख होता प्रगट...हर जीवों को जो है इष्ट।।
स्मरण से स्मृति शक्ति बढ़े...आत्म स्मृति से शान्ति बढ़े।

सतत स्व आत्म स्मरण से...ध्यान समाधि सुख बढ़े।।(2)
जिससे आत्मा की प्राप्ति होती...अनन्त शक्ति प्रगट होती।
यह ही सच्चिदानन्द स्वरूप...सत्य शिव सुन्दर निज स्वरूप।।
यह ही परम उपलब्धि रूप...अक्षय अनन्त वैभव रूप।
नर सुर मुनि वन्दित रूप...'कनकनन्दी' का शुद्ध स्वरूप।।(3)

विद्या तेरी धारा अमृत

(चाल: गंगा तेरा पानी अमृत....)

विद्या तेरी धारा अमृत, झर झर बहती जाए
युगों युगों से भारत जनता तुझसे अमृत पाए...विद्या तेरी धारा...(टेक)
तीर्थेश हिमालय से तू निकसी, गणधर प्रवाहित धारा
ऋषि मुनि पाठक सूरी सेवित निर्मल धाराऽऽऽ
ज्ञानी-विज्ञानी-प्रजाजन भी तुझसे जीवन पाए...विद्या तेरी धारा...(1)
अध्यात्म तेरी मुख्य धारा, नद प्रवाहित मंदाकिनी
भिन्न भिन्न नदी प्रवाहित धारा, भाषा व गणितमयीऽऽऽ
विज्ञान शिल्पी आयुर्वेदमयी संगीत विभिन्न धारा..विद्या तेरी धारा...(2)
संस्कार संस्कृति दया उदारता पवित्र बहती धारा
अनन्त हुए संतृप्त तेरे द्वारा, पावन हुए अनन्ता ऽऽऽ
तुझसे भारत हुआ विश्वगुरु, पूजित सभ्य संसार...विद्या तेरी धारा...(3)
तेरी पवित्र धारा में अब, बहती विकृति धारा
संकीर्ण स्वार्थ व भौतिकता की बहती गटर धाराऽऽऽ
परस्पर भेद विद्वेष बान्ध से, रुकी तुम्हारी धारा...विद्या तेरी धारा...(4)
पुण्य पुरुषार्थी भागीरथी जागो, करो हो विकृति दूर
स्वयं तृप्त हो, तृप्त भी कराओ, भारत सन्तान साराऽऽऽ
विश्व सन्तान को तृप्त हेतु तुम, विस्तार पवित्र धारा...विद्या तेरी धारा...(5)

दूसरों से प्रभावी हुआ न करो

(दूसरों से अप्रभावी रहने की कला)

(तर्ज-यमुना किनारे श्याम जाया न करो...)

दूसरों से प्रभावी हुआ न करो। (अप्रभावी हुआ ही करो)
दूसरों के कुभाव को त्याग ही करो...(स्थायी/टेक)
छोटे-खोटे (खोटे-छोटे) भाव वाले होते बहुसंख्य रे,
दूसरों के अनुसार जीया न करो रे
कौआ के समान क्या कोयल होता है,
बक के समान क्या हंस होता है...दूसरों...(1)
नीम के समान क्या चन्दन भी होता है,
बबूल के समान क्या आम भी होता है
गीदड़ के समान क्या शेर भी होता है,
डूँगर के समान क्या सुमेरु भी होता है...दूसरों...(2)
पापी के समान क्या पावन भी होता है,
संसार के सम क्या मोक्ष भी होता है
नाना जीव नाना कर्म संसार में होते हैं
नाना कर्म अनुसार भाव भी होते हैं/(घनेरे)...दूसरों...(3)
कोई सम्यक् दृष्टि कोई मिथ्यादृष्टि होता है
कोई तो वैरागी कोई भोगी भी होता है
कोई राजा कोई रंक त्यागी होता है,
शरीर के हर अंग सम नहीं होते हैं...दूसरों...(4)
संसार में समभाव असम्भव होता है,
नवम गुणस्थान से पहले न होता है,
मोक्ष अवस्था में पूर्ण समभाव होता है,
सर्व निगोद में नहीं समभाव सदा है...दूसरों...(5)
विषमता से ही संसार परिभ्रमण होता है,
समता से ही भ्रमण विनाश होता है

दूसरों से विषमता भाव न करो रे,
दूसरों के कारणों से दुःख न वरो/(भरो) रे...दूसरों...(6)

दूसरों के मरण से मरा न करो रे,
मोक्ष के लिए तुम मरण वरो रे
दूसरों के हेतु मरा अनन्त बार रे
स्वयं के उद्धार हेतु मरण वरो रे...दूसरों...(7)

''कनकनन्दी' ने बहुत अनुभव किया रे,
विषमता के मध्य में समता में जीया रे
गिरगिट के सम छद्मवेश/(रूप) घनेरे
चित पट दोनों में मायाचारी घने रे
सत्य साम्य पथ में दृढ़ता से चलो रे,
अविकारी ज्ञानानन्द स्वरूप को वरो रे...दूसरों...(8)

अनुचिन्तन, प्रेयसी

काहर्निशमनुचिन्त्या संसारासारता न च प्रमदा।
का प्रेयसी विधेया करुणादाक्षिण्यमपि मैत्री।।(19)

पद्यभावानुवाद-: (चाल : आत्मशक्ति....)

संसार की असारता अहर्निश चिन्तनीय न कि पर-प्रमदा।
करुणा दाक्षिण्य व मैत्री को बनाना विधेय स्व-प्रेमिका।।1

समीक्षा

संसार-शरीर-भोग की असारता चिन्तनीय है दिन रात।
जिससे ज्ञान-वैराग्य होगा उत्पन्न जिससे उत्पन्न वितराग।।2
पर स्त्री चिन्तन से होगा अशुभध्यान जिससे होगा पापबन्ध।
करुणा-दाक्षिण्य व मैत्री को प्रेमिका बनाने से होगा पुण्य बंध।।3

सुभाव से जीवन निर्माण एवं निर्वाण

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज - चौपाई...)

(जीव है जिनवर सम, जिनवर है जीव समान।
एक है भूत अवस्था, दूजी भावी (आगामी) जान।) (दोहा)
बीज में वृक्ष होता सुप्त-गुप्त, चतुष्टय प्राप्त से होता वृक्ष।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव सु जान, चतुष्टय वृक्ष होता महान्।।(1)
तथाहि भाव में जिन है सुप्त, चतुष्टय प्राप्त होता प्रगट।
आध्यात्मिक क्रमविकास के द्वारा, होते आत्मगुण प्रगट सारा।।(2)
चतुष्टय में भाव प्रधान जान, बीज की शक्ति यथा है जान।
पृथ्वी जल वायु बाह्य कारण, बीज की शक्ति अन्तरंग कारण।।(3)
भाव से भाग्य भावी निर्माण, जीवन निर्माण व निर्वाण।
भाव करना स्व-आत्म आधीन, बाह्य कारण पर द्रव्य आधीन।।(4)
इसलिये सुभाव करो सुजान, जिससे सहज हो विकासमान।
कभी भी कुभाव न करो सुजान, जिससे अवरूद्ध हो विकासमान।।(5)
क्रोध मान माया लोभ को त्याग, जिससे बनेगा उत्तम भाग्य।
पुरुषार्थ करो सुभाग्य सहित, जिससे होगा आत्मा का हित।।(6)
आत्म-विकास ही श्रेष्ठ विकास, जिससे मिले अनन्त सुखवास।
इसे ही कहते निज अवस्था, जिन अवस्था ही निज अवस्था।।(7)
'कनकनन्दी' सदा प्रयासरत, अन्य प्रयास तो आनुसंगिक।
प्रत्येक जीव करे आत्मप्रयास, जिससे मिलेगा मोक्ष निवास।।(8)

करुणा! तेरी अमृतधारा

(अहिंसा (करुणा) का विश्व रूप)

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल : गंगा तेरा पानी अमृत...)

करूणा! तेरी अमृतधारा...झर-झर बहती जाये।

विश्वभर के हर जीव मात्र...तुझ से प्लावित हो जाये।।(स्थायी)
तुम तो उदार पावनमय, वैश्विक तेरा प्रभाव।
सूक्ष्म जीव से सिद्ध जीव तक, तेरा होता है निवास।।
अपना-पराया भेद-भाव रिक्त, तू बरसाये आशीष।।...करुणा...(1)
हर जीव में मैत्री भाव रूप में, गुणी जीव में प्रमोद।
दुःखी जीव प्रति कृपा भाव में, विपरीत में माध्यस्थ।
दया दान सेवा परोपकार रूप में, तेरा (ही) सर्वत्र निवास।।...करुणा...(2)
वात्सल्यमय भी तेरा ही रूप, समता शांति उदारता।
क्षमा मार्दव आर्जव शौचमय, सत्य संयम अपरिग्रह।
तप त्याग व ब्रह्मचर्यमय, आकिंचन्य तेरा ही रूप।।...करुणा..(3)
आत्मविशुद्धि ही तेरा स्वरूप, पर्यावरण रक्षा (भी) तेरा रूप।
विश्व शांति व विश्व मैत्री भी, तेरा ही है विभिन्न रूप।
चोरी मिलावट शोषण रहित, भ्रष्टाचार आतंक (वाद) रिक्त।।....करुणा...(4)
ईर्ष्या द्वेष घृणा रहित रूप, निन्दा अपमान रिक्त रूप।
संकीर्ण पंथ-मत परे स्वरूप, जाति भाषा राष्ट्र उपरत।
आकाश सम सीमा रहित, सर्व व्यापक विश्व रूप।।...करूणा...(5)
तेरे लिए ही है धर्म आचरण, पूजा आराधना व प्रार्थना।
ध्यान अध्ययन व आत्म विश्लेषण, तेरे लिए ही तप साधना।
तेरा ही है परम उत्कृष्ट रूप, शुद्ध बुद्धमय परम आत्मा।।...करूणा...(6)
तेरे बिना न कोई धर्म होता, कानून राजनीति संविधान।
व्यक्ति-समाज व्यवस्था से लेकर, वैश्विक व्यवस्था तक।
तू ही जीव का मूल स्वभाव, 'कनक' का शुद्धात्म भाव।।..करूणा...(7)

चिन्ता त्याग कर (के) आत्म चिन्तन से सुखी बनो!

(राग : तुम दिल की धड़कन....)

मनन करो चिन्तन करो...स्मरण करो आत्मदेव को।

चिन्ता को त्यागो संक्लेश छोड़ो...बन्धन तोड़ो भव-भव के।।ध्रु.।।
आत्मदेव ही है आराध्य तेरा...शरण-दाता-तारण हार।
चिन्ता ही तेरी चिता समान...संक्लेश तेरा भव-बन्धन।।
पूजा आराधना जप-तप सब...आत्मदेव की प्राप्ति हेतु ही।
चिन्ता या संक्लेश भव बन्धन है...दुःख संताप प्राप्ति हेतु ही।।(1)
आत्मदेव का चिन्तन ही है...परम चिन्तामणि ब्रह्माण्ड की।
संक्लेश-चिन्ता परम चिन्ता.... तन-मन-आत्मा जलाने की।।
आत्म-चिन्तन से आनन्द मिले...आनन्द से कर्म बन्धन टूटे।
संक्लेश-चिन्ता से अशान्ति मिले...अशान्ति से कर्म-बन्धन बढ़े।।(2)
आनन्द-अशान्ति तेरे आधीन...तथाहि बन्धन-मोक्ष भी।
तू ही कर्त्ता भोक्ता इन्हीं के..तेरे ही आधीन तू भी।।
स्वाधीन बनो स्वतंत्र बनो...स्व-आत्मदेव को स्वयं में पाओ।
यह ही तेरा परम सत्य...'कनकनन्दी' तू स्वयं को पाओ।।(3)

पराधीन-अविधेय

कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्यात्मा नो समर्प्यते जातु।
मूर्खस्य विषादस्य च गर्वस्य तथा कृतघ्नस्य।।(20)

पद्यानुवाद :- (चाल : आत्मशक्ति...)

कण्ठगत होने पर भी प्राण किस के आधीन अविधेय।
मूर्ख-विषाद व गर्व-कृतघ्न के आधीन होना अविधेय।।1

समीक्षा-

मूर्ख के आधीन से होते गुणनाश जो मृत्यु से भी अहितकर।
विषाद से न कोई होता लाभ, बल-बुद्धि गुण होते नाश।।2
गर्व से सम्यक्त्व ही होता नाश जिससे धर्म का होता नाश।
जिससे संसार में होता भ्रमण जिससे मिले अनन्त दुःख।।3

कृतघ्न में न होते सद्गुण उपकार को भी वह भूल जाता।
ऐसे जीव के आधीन होने से, स्व सुगुण भी विनाश हो जाता।।4
धर्म सहित मरण होने से स्वर्ग-मोक्ष तक का सुख मिलता।
किन्तु मूर्खादि के आधीन होने से, इह पर लोक में दुःख मिलता।।5

''उपेक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा रहित विकास''

(तर्ज : इह विधि ठाड़ौ होय के...)

उपेक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा बिना, होता हैं सच्चा विकास,
तीनों से युत सहयोगमय, स्वावलम्ब पुरुषार्थ...(टेक)
किसी जीव व उपाय मात्र की, कभी न करो उपेक्षा,
द्रव्य क्षेत्र व काल सुभाव की, करो है सही समीक्षा...(1)
परावलम्बी कभी न होना, अपेक्षा रहित है भाव,
अन्धानुकरण रहित भाव, अपेक्षा रहित भाव...(2)
ईर्ष्या से युक्त प्रतिस्पर्द्धा, विकास के प्रतिबन्ध,
द्वन्द्व-प्रतिद्वन्द्व रहित भाव से, होता सच्चा विकास...(3)
प्रतीक्षा न करो प्रमाद युत, शीघ्र करो शुभारम्भ,
हर कार्य होता वर्तमान में, शेष काल नहीं व्यक्त...(4)
भूतकाल अप्राप्य है, भावी अभी से सम्भव,
वर्तमान भाव त्रैकाल में, शेष काल अभाव...(5)
प्रध्वंस अभाव भूतकाल है, भावी तो प्राग् अभाव
अतएव वर्तमान में, करो है सच्चा उद्योग...(6)
वर्तमान का भाव तुम्हारा, भविष्य का होगा भाग्य,
भाव भाग्य पुरुषार्थ से, होता है सर्व संभाव्य...(7)
उपेक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा रहित, करूँ मैं सत्य साधना,
''कनकनन्दी'' तो तीनों के द्वारा, करे आत्म आराधना...(8)

मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बने न कि कृतघ्न

वनस्पति से लेकर पशु-पक्षी भी वैज्ञानिक एवं उपकारी

(वृक्ष से लेकर पशु-पक्षी से भी अपकृत है मानव)

(रागः- शायद मेरी....)

पशु-पक्षी नहीं अज्ञानी-जड़...नहीं होते अपकारी
वे भी होते हैं ज्ञानी-विज्ञानी...होते बहु उपकारी...स्थायी...
मानव पूर्व भी अस्तित्व उनका...विज्ञान ऐसा है माना
मानव समान उनका अस्तित्व..अनादि से धर्म माना
पशु-पक्षी भी पञ्चेन्द्रिय होते...होते भी हैं मन सह
सम्यक्त्व सहित तीनों ज्ञान युक्त...होते अणुव्रत युक्त (1)
वनस्पति से कीट व पतंग...स्व-योग्य इन्द्रिय युक्त
मतिज्ञान व श्रुतज्ञान युक्त...भले न होता सम्यक्त्व
वनस्पति से प्राण वायु मिले...अनाज फूल व फल
औषधि लकड़ी छाया शीतलता....प्रदूषण दोष हर (2)
मधुमक्खी आदि कीट पतंग से...परागण आदि हुए
जिससे अनाज फल प्राप्त हुए...गीत-नृत्य मन मोहे
गाय बकरी व ऊँटनी भेड़ से...दूध मिले गुणकारी
विहंगम हमें संगीत सुनाये...बहुविध नृत्य करी (3)
विविध आसन संगीत के स्वर...पशु-पक्षी से ही बने
वैज्ञानिक शोध-बोध के निमित्त...इनसे भी शिक्षा मिले
वैज्ञानिक शोध-बोध के पहले...करोड़ों वर्षों के पूर्व
इन्हीं जीवों ने आविष्कार किये...विज्ञान जन्म के पूर्व (4)
कागज का आविष्कार (तो) हुआ है...दो हजार वर्ष पूर्व
ततैया इसका निर्माण करता...करोड़ों वर्षों के पूर्व
सोनार यन्त्र का प्रयोग करती...डॉलफिन है विशेष
मानव निर्मित सोनार से पूर्व...हुआ है लाखों वर्ष (5)

न्यूटन का प्रतिक्रिया सिद्धान्त...स्कूइट करे विशेष/(निष्णात)
करोड़ों वर्षों से प्रयोग करता...जेट विमान सिद्धान्त
गन्ध से आग को जानने का यन्त्र/(अंग)...बिटल/(झिंगुर) करे प्रयोग
इसे तो मानव अब जान पाया...कृत्रिम यन्त्र के संग (6)

सुरक्षा के हेतु एयर बैग का...केनेड पक्षी जो करे
उसका निर्माण विज्ञान ने किया...कुछ ही दशक पहले
शब्द रहित उल्लू तो उड़ते...लाखों वर्ष पहले
निशब्द विमान निर्माण हुआ...अभी तो वर्षों पहले (7)

तैराकी पोषाक मानव बनाया...कुछ ही वर्षों पहले
मिको शार्क तो करोड़ों वर्षों से...करती आयी पहले/(शान से)
केको/(छिपकली) चढ़ती है काँच की दीवार...वैक्यूम सिद्धान्त द्वारा
अभी तो मानव सीख रहा है..केको की पद्धति द्वारा (8)

फ्रिजम के द्वारा बुलफ्रक/(मेंढक) तो...स्वयं की सुरक्षा करता
यह काम अभी विज्ञानी द्वारा भी...सरल में नहीं होता
लंगफिश तो चार साल तक...सूखे में जिन्दा रहती
महाप्रलय व बमविस्फोट से...कंकरोच नहीं मरती (9)

जन्म के बाद भी बच्चादानी में...कंगारु भ्रूण पालती
ध्रुवीय भालू की शीत निद्रा तो...महीनों जारी रहती
इत्यादि अनेक पशु-पक्षी में भी...होती है विचित्र क्षमता
दूरश्रवण व दूरदर्शन या...दूर घ्राण की क्षमता (10)

इसीलिए तो इनके द्वारा भी...होता भविष्य ज्ञान
भूकम्प वर्षा सुनामी आदि का...विज्ञानी से ज्यादा/(श्रेष्ठ) ज्ञान
वनस्पति स्वयं भोजन बनाता...प्राण वायु हमें देता/(की है देन)
इत्यादि का अभी वैज्ञानिक द्वारा...नहीं हो पाया है ज्ञान/(काम) (11)

अतः हे मानव! घमण्ड न करो... न करो उन्हें संहार
तुम्हें जीना हैं तो उन्हें जीने दो...'कनकनन्दी' का विचार।।(12)

''हे मानव! वन गिरि का कृतघ्न न बन!''
पर्यावरण सुरक्षागीत

(राग : बंगला-ओडिसी....)

हे वनगिरि! हे लतागिरि...तुम्हारा उपकार भारी
तुमसे मिले फल औषध उपकारी
विविध सुमन की सुगन्धी मनोहारी
प्राणवायु भी मिले...शीतल छाया भारी...(स्थायी)...

तुमसे भी जीवित पशु व नर-नारी
कीट व पतंग समस्त वनचारी
पर्यावरण शुद्ध तुमसे अतिभारी
नीलकण्ठ के सम तुम हो विषहारी...हे वनगिरि..(1)

तुम्हारी गोद में वसे हैं वनचारी
तुम्हारे कारण होती है वर्षा भारी
तुम्हारे कारण मृदा की रक्षा भारी
तुम्हारे कारण पृथ्वी हरी भरी...हे वनगिरि...(2)

कृतघ्न मानव बना है अपकारी
तुम्हारा संहार करता अतिभारी
जिसके कारण आती आपदा अतिभारी
ग्लोबल वार्मिंग प्रदूषण भी भारी...हे वनगिरि...(3)

स्वर्णअण्डा लोभी के सम व्यवहारी
दोहन से अधिक शोषण करे भारी
प्रतिक्रिया फल से मानव हाहाकारी
दूरदृष्टि हीन से आपदा महामारी...हे वनगिरि...(4)

अभी तो मानव कृतज्ञ तुम बनो
तीर्थंकर बुद्ध का सत् उपदेश मानो

वैज्ञानिक सत्य को तुम तो अभी मानो
जीना है तो तुम्हें वनों को जीने दो...हे वनगिरि..(5)

'कनकनन्दी' का आह्वान तुम सुनो
अहिंसा असंग्रह परोपकार करो
तृष्णा को त्यागकर आवश्यक से चलो
आवश्यक से चलकर आत्महित करो...हे वनगिरि...(6)

पूज्य, निर्धन, विजयी

कः पूज्यः सदत्तः कमधनमाचलते चलितवृत्तम्।
केन जितं जगमेतत् सत्यतितिक्षवता पुंसाम्।।(21)

पद्यभावानुवाद - (चाल : आत्मशक्ति...)

सदाचारी होते हैं पूजनीय, व्रत भ्रष्ट होते हैं निर्धन,
कौन जीता है इस जगत् को, सत्यनिष्ठ क्षमावान् होना विजेता,

समीक्षा-

आचरण जिसका होता सदाचार, उनके चरण होते पूजनीय।
स्व-व्रतों से जो होते है विचलित, वे होते है निर्धन निश्चित,
परमसत्य है अनन्त शक्तिमान, सत्य में प्रतिष्ठित पूर्ण विश्व।
सत्यनिष्ठ में होती सत्य की शक्ति, सत्यनिष्ठ अतः बने विश्वविजेता।।
तथाहि क्षमा है आध्यात्मिक गुण, आत्मा में होती अनन्त शक्ति।
अतः क्षमावान् बने अनन्तशक्तिमान्, क्षमावान् अतः बने विश्वविजयी।।
इसके उत्कृष्टतम उदाहरण तीर्थंकर, तथाहि केवली से ले गणधर।
पार्श्वनाथ गजकुमार, सुकौशल मुनि, तथाहि अनन्तानन्त अरिहंत सिद्ध।।

''वन्दे तद्गुण-लब्धये''

आध्यात्म गुण-गुणी के स्मरण-भजन-अनुकरण ही पूजा, प्रार्थना, वन्दना, आराधना, आरती आदि पूजा-प्रार्थना आदि के रहस्य, स्वरूप एवं फल
(राग : शत-शत वन्दन..., यमुना किनारे श्याम....)

पूजा प्रार्थना का स्वरूप जानो...'वन्दे तद्गुणलब्धये' रहस्य मानो।
भाव की विशुद्धि पूजादि मानो...जड़ात्मक क्रिया नहीं है जानो।।ध्रु.।।
पूजा-प्रार्थना-आराधना.(वन्दना)/(प्रशंसा) भक्ति...याग यज्ञ विधान संस्तुति।
पर्यायवाची शब्द पूजा के जानो...मन-वचन-काय से पूजा है मानो।।
स्तुति है पुण्य गुणोत्कीर्तिः...स्तोता है भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्टितार्थो है भवां स्तुत्यः...फल है नैश्रेयस सुखम्।।(1)
गुण-गुणी के भाव./(मन) में स्मरण... वचन में हो तथाहि
उच्चारण/(कीर्तन)/(भजन)
काय में हो तथाहि वन्दन...जीवन में हो गुणानुकरण।।
पूजक का भाव प्रसन्न होता...गुणानुस्मरण से प्रमुदित होता।
मोह-राग-द्वेष क्षीण करता...पूज्य पुरुष के गुणों को ग्रहता।।(2)
तब ही पूजक यथार्थ होता...शुभभाव से पाप को नाशता।
सातिशय पुण्य अर्जन करता...इह परलोक सुख को पाता।।
इससे रहित जो पूजादि होती...यथार्थ पूजा वह नहीं होती।
भाव शून्य क्रिया/(पूजा) फल न देती...जड़ क्रिया से भक्ति/(पूजा) न होती।।(3)
ख्याति-पूजा-लाभ निमित्त...राग-द्वेष-मोह-काम से युक्त।
रूढ़ि-परम्परा व अज्ञान युक्त...पूजा-प्रार्थना होती है अनर्थ।।
भावसहित वचन-तन से...द्रव्य-क्षेत्र व साधन क्रियाएँ।
स्तुति/(पूजा) से मिलता है यथार्थ फल...कृतकारित अनुमत से फल।।(4)
पवित्र भावना महान् कर्म...दानदया-सेवा यथार्थ धर्म।
गुण-गुणी सम्मान यर्था पूजा...'कनकनन्दी' रचे ऐसी ही पूजा।।(5)

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धियुक्त न्यायदाता भी परमज्ञान सुख हेतु बनते हैं साधु!

(भगवान् शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ से प्राप्त शिक्षाएँ)
(चाल : शत-शत वन्दन....,यमुना किनारे...)

शान्ति कुन्थु अरहनाथ थे, तीर्थंकर चक्रवर्ती व कामदेव।
तीन ज्ञान व दो कल्याणक युक्त, तथापि वे साधु बने विरक्त।।टेक।।

इसी से मुझे यह शिक्षा मिलती, सत्ता-सम्पत्ति से न मिले सुख।
ख्याति पूजा लाभ भोग विलास, न मिलता है अनन्त सुख।।
राज्य विस्तार या प्रजा पालन से, नहीं मिलता है परम-सुख।
परिवार स्त्री देव-मानवों से, नहीं मिलता है आत्मिक -सुख।।(1)

शासन-प्रशासन आज्ञा आदेश से, नहीं मिलती है आत्मिक-शक्ति।
न्याय-निर्णय दण्ड-विधान से, नहीं मिलती है परम-शान्ति।।
परिवार पालन विवाह बन्धन, जन्म-मरण से न मिले शान्ति।
युद्ध विजय शत्रु दमन, प्रशस्ति लेख से न मिले शान्ति।।(2)

तीन ज्ञान भी न परम ज्ञान, शरीर-सुन्दर न आत्म-वैभव/(सौन्दर्य)।
इसीलिए वे दीक्षा लेकर, आत्म-उपलब्धि हेतु वन-गमन।।
दीक्षा लेते ही चार ज्ञान व, चौसठ ऋद्धि से होते सम्पन्न।
तथापि मौन साधना से, अनन्त चतुष्टय हेतु करते ध्यान।।(3)

आत्मविशुद्धि द्वारा घाति क्षय से, जब वे बनते सर्वज्ञ देव।
तब ही विश्वकल्याण हेतु, उपदेश देते सर्वज्ञ देव।।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय, अनन्त चतुष्टय से होते सम्पन्न।
दोष अठारह रहित होने से, उनके उपदेश सत्य सम्पन्न।।(4)

उनके उपदेश ही परम मान्य, स्व-पर-विश्व कल्याण हेतु।
राग-द्वेष व काम मोह युक्त, अन्य के वचन नहीं कल्याण हेतु।।
तथाहि अन्य तीर्थंकर केवली, गणधर साधु बुद्ध संतादि।
स्व-स्व सत्ता सम्पत्ति त्यागकर, सुख प्राप्ति हेतु बने सन्यासी।।(5)

अतएव ज्ञान-विज्ञान-कानून, जो सत्य-तथ्य सहित होते।
वे ही मान्य अन्यथा नहीं, 'कनकनन्दी' यह शिक्षा लेते।।(6)

तीर्थंकर केवल मानवों के गुरु नहीं होते अपितु सम्पूर्ण विश्व के होते हैं

(चालः आत्मशक्ति से ओतप्रोत....,तुम दिल की धड़कन में....)

विश्व गुरु तीर्थंकर स्वामी...नहीं होते गुरु केवल मानवों के...
वे तो गुरु है पशु-पक्षी व देव...विद्याधर सभी भक्तों के....(1)
स्व-पर-विश्व कल्याणकारी...सोलह भावना से भावित होते...
जिससे वे तीर्थंकर बनकर...विश्व हितकारी उपदेश देते....(2)
जो भव्य अनंतानुबंधी कषाय व....मिथ्यात्व हनने से सम्यक्त्वी होते...
उनमें श्रद्धा-प्रज्ञा उपजती जिससे...(वे) तीर्थंकर के भक्त बनते...(3)
स्व-शक्ति अनुसार उपदेश से...आत्म विकास हेतु प्रयास करते...
कोई सम्यग्दृष्टि तो कोई श्रावक...श्रमण बनकर (आत्म) कल्याण करते...(4)
धर्म आत्म का स्वभाव होने से....यह न प्राप्त होता अन्य से...
भौतिक वस्तु समान धर्म का...आदान-प्रदान न होता अन्य से...(5)
स्व-शक्ति से बीज अंकुर होता...भले मृदा जलादि होते सहायक...
तथाहि धर्म तो जीवों में निहित...भले तीर्थंकर बनते सहायक...(6)
तीर्थंकर भी धर्ममय बनकर करते...(जैन) धर्म का प्रचार-प्रसार...
अतः वे धर्म तीर्थ प्रवर्तक...अतएव उन्हें कहते तीर्थंकर...(7)
भले सभी तीर्थंकर होते क्षत्रिय...तो भी जैन धर्म न क्षत्रियों का (ही)...
पञ्च परमेष्ठी भी होते हैं मानव...तो भी जैन धर्म न मानवों का (ही)...(8)
तथाहि जैन धर्म न कैद होता है...किसी भी संकीर्ण जाति भाषा में...
तथाहि संकीर्ण रूढ़ि-परम्परा....भेद-भावपूर्ण पंथ व मत में...(9)
जैन धर्म तो वस्तु-स्वभावमय...अतः हर वस्तु है जैन धर्ममय...
वस्तु स्वभावमय विश्व होने से...जैन धर्म व्यापक वैश्विकमय...(10)

हर वस्तु का वर्णन तीर्थंकर ने...किया है अपनी दिव्य ध्वनि से/(में)...
जीव-पुद्गल-धर्म-अधर्म...आकाश-कालादि पूर्ण रूप से...(11)
निगोद से लेकर सिद्ध तक का...अणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक का...
तीर्थंकरों ने वर्णन किया है...शुद्ध-अशुद्ध व पुण्य-पाप का...(12)
सत्य-तथ्य व परमार्थ का जो...विश्वास ज्ञान आचरण करता...
अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्य...अपरिग्रह का पालन करता...(13)
कषाय-इन्द्रिय-मन व कर्म पर...जो वश करता वह जैन...
अनेकान्तमय भाव-व्यवहार करे...वह होता यथार्थ से जैन...(14)
इन सर्व गुणों के परम स्वरूप...होते है सर्वज्ञ तीर्थंकर देव...
जघन्य से उत्कृष्ट तक होते है...सुदृष्टि श्रावक श्रमण सिद्ध...(15)
जैन धर्म का यह संक्षिप्त स्वरूप...वर्णन किया श्रमणाचार्य 'कनक'...
सविस्तार ज्ञान प्राप्त हेतु कर...अध्ययन सभी चारों ही अनुयोग...(16)

आध्यात्म रहस्यवादी गुरुवन्दना

आध्यात्म गुरु की वन्दना

(राग: बिन गुरु ज्ञान नहीं है...., जब निज आतम अनुभव आवे....)

चरण कमल वन्दूँ गुरुराई ऽऽ....
जाकी कृपा मोहतम नाशे सत्य तथ्य दरसाई...
मन्दमति ज्ञानी पतित पावन भ्रष्ट बने सद्राही...
सच्चे शिष्यगण/(जन) तेरी कृपा पर बार बार शिरनाई...टेक...

तू ही कृपासिन्धु दीनबन्धु आत्मज्योति प्रगटाई...
अनाथ के नाथ पतित पावन ज्ञानदाता गुरुराई...
तुम ही माता पिता तुम्हीं हो भाई बन्धु सखा तोई...
तेरी कृपा से दिव्यज्योति मिली मोहमाया विनसाई...चरण कमल...(1)

आत्मज्ञान मय तुम परमात्मा ज्ञानामृत प्राप्त तोही...

तुमारी वन्दना सेवा से मिले है, मोक्षलक्ष्मी सुखदाई...
आत्म गुरु बिन और कोई जन, तुम सम शान्ति न देई...
तेरी प्राप्ति हेतु तुम्हारी वन्दना भेदभाव बिना तो ही...चरण कमल...(2)

'कनकनन्दी' का सर्वस्व तुम्हीं हो, पूज्य पूजा सब तोही...
हर दशा दिशा आशा तुम्हीं हो, कर्त्ता-धर्त्ता सब तोही...
तुम्हें सदा वन्दूँ तुम्हें सदा भजूँ तुम्हें ही सदा मैं पाऊँ...
आत्म रसिक तुमको पहिचाने मैं भी तव गुण गाऊँ...चरण कमल...(3)

गुरु का स्वरूप

(तर्ज: ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला...)

ऊँचे-ऊँचे लक्ष्य धारे है, ये गुरुवर हमारे।
ये गुरुवर हमारे है, जग से ये न्यारे।।(टेक)....

तुमने राग को आग समझा, वैभव को वैर समान जो माना।
काम भाव को कालकूट माना, अर्थ का भी अनर्थ है जाना।।
अलौकिक आचरण वाले हैं ये गुरुवर हमारे।। ऊँचे-ऊँचे...

सत्य साम्यभाव अमृत पीते, ज्ञान रूपी ज्योति फैलाते।
उदार भाव श्रृंगार जो करते, विश्वमैत्री का नियम पालते।।
वसुधैव कुटुम्ब वाले हैं ये गुरुवर हमारे।। ऊँचे-ऊँचे...

अहिंसा व्रत का जो पालन करते, ज्ञान विज्ञान का शोध भी करते।
संतोष जल से स्नान जो करते, क्षमा भाव का ढाल हैं धरते।।
आध्यात्मिक रसिक निराले है ये गुरुवर हमारे।।ऊँचे-ऊँचे...

धनी-गरीब में भेद न करते, ऊँच-नीच का भाव न धरते।
हानि-लाभ में समता रखते, शत्रु-मित्र का भेद न रखते।।
कर्म शत्रु हनने वाले हैं, ये गुरुवर हमारे।। ऊँचे-ऊँचे...

आत्म कल्याण का लक्ष्य जो रखते, उसके हेतु ही साधना करते।

अन्य भाव का त्याग जो करते, ख्याति पूजा को छाया समझते।।
अनेकान्त, सिद्धान्त वाले हैं ये गुरुवर हमारे।। ऊँचे-ऊँचे...
ऐसे गुरु भगवान् हैं बनते, आकिंचन्य से ईश्वर बनते।
ब्रह्मचर्य से ब्रह्मत्व पाते साधक से हैं सिद्ध जो बनते।।
सत्य शिव, सुन्दर वाले हैं ये गुरुवर हमारे।। ऊँचे-ऊँचे...
''कनकनन्दी'' के आराध्य तुम हो, भव्य कमलों के सूरज तुम हो।
भक्त मधुप के मकरन्द तुम हो, तुम ही माता-पिता बन्धु हो।।
विश्व गुरुत्व धारे हैं, ये गुरुवर हमारे।। ऊँचे-ऊँचे...

गुरुवर से प्रार्थना एवं शुभ आकाक्षाएँ

(तर्जः शांति के सागर अरू...)

जय जय गुरुवर जय है यतिवर, आशीष दे दो गुरु पवित्र हो अंतर।।(टेक)
न माँगू धन मान न माँगू इन्द्र न माँगू दारा पुत्र न माँगू कलेवर।
केवल माँगू हे गुरु पावन हो अन्तर।। आशीष...(1)

दे दो हे गुरुवर मुझे हे ज्ञानवर, आत्मा से परमात्मा बनने का।
अन्य है तुच्छ वस्तु पाया अनंतबार।। अशीष...(2)

कृपयाकर मुझे दे दो हे श्रेष्ठवर, आपके सम बनूँ त्याग के घर-द्वार।
विषय वासना व आसक्ति भयंकर।। आशीष...(3)

ख्याति व पूजा लाभ वैषम्य आडम्बर, निर्धन धनी व कट्टर पंथाचार।
सम्पूर्ण संकीर्णता विभेद करूँ दूर।। आशीष...(4)

पावन भाव धरूँ सौम्यता सदाचार, हित व मित बोलूँ प्रिय हो सहचर।
संकल्प विकल्प से होऊँ मैं सदा दूर।। आशीष...(5)

सत्य के पथ पर चलूँ मैं मोक्षपुर, उत्तम क्षमा शौच नम्रता निर्विकार।

''क्षमा माँगे बिना भी मैं क्षमाभाव धरूँ''
(निर्दोषी के क्षमा माँगने पर मैं देता हूँ...शुभाशीर्वाद)

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज : छोटी-छोटी गैंया....)

अक्षमाभाव मैं कभी नहीं रखता, क्षमाभाव सहित मैं सदा ही रहता।
मैत्री-प्रमोद-माध्यस्थ करूणासह, उदार पावन भाव सदा रखता।।
कोई क्षमा माँगे या न माँगे क्षमा, क्षमाभाव मैं सदा धारण करूँ।
इसी से मेरा कर्मबंध न होगा, संक्लेश-कलह-रोग से दूर रहूँगा।।(1)
क्षमा माँगने पर यदि मैं क्षमा करूँ, नहीं माँगने पर क्रोध में रहूँ।
इसी से तो मेरा कर्मबंध होता रहेगा, संक्लेश कलह रोग भोगा करूँगा।।
क्षमा माँगने पर ही क्षमा करना, भिखारी को भिक्षा देना समान होगा।
दाता तो बिना माँगे दान करता, तथाहि मैं क्षमादान सदा करता।।(2)
दाता तो सदा सर्वदा महान् होता, स्व-पर उपकार सदा करता।
तथाहि मैं स्व-पर उपकारी बनता, स्व-उपकार सह परोपकार करता।।
मोह-क्षोभ विहीन है मेरा स्वभाव, मोह-क्षोभ रहित है आत्म-स्वभाव।
मोह-क्षोभ विहीन है परम-चारित्र, धर्म का निश्चय रूप शुद्ध चारित्र।। (3)
अन्य के कारण यदि मैं संक्लेश करूँ, अन्य के कारण मैं दासता करूँ।
अन्य से परिचालन होता रहूँगा, कर्म बाँधकर मैं दुःख भोगूँगा।।
सज्जन सेवाभावी दानदाताओं को, शुभाशीर्वाद शुभकामनाएँ मैं दूँ।
गुरुजन-साधु-साध्वियों को मैं, नमोऽस्तु, प्रतिनमोऽस्तु, आशीर्वाद मैं दूँ।।(4)
इसी हेतु ही मैं सदा क्षमा ही करूँ, माँगू भी क्षमा नवकोटि से।
निश्चय व व्यवहारनय सहित, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सहित।।
आत्मानुशासी स्वावलंबी मैं बना, समता साधक मैं श्रमण बना।
आत्मविशुद्धि द्वारा सिद्ध मैं बनूँ, 'कनक' सच्चिदानन्दमय मैं बनूँ।।(5)

संदर्भ-खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु में।
मेत्ति मे सव्वभूदेसु, वैरं मज्झं ण केणवि।।
हिन्दी-सभी जीव को मैं क्षमा करता हूँ, सभी जीव मुझे क्षमा भी करे।
सभी जीव में मेरी मैत्री भावना, किसी से भी नहीं है वैर भावना।।

समस्त सीमातीत है : आध्यात्मिक

(चाल : तुम दिल की धड़कन....,सायोनारा....)

आकाश यथा भिन्न होता है, काला-पीला-लाल-सफेद आदि रंग से।
तथाहि आध्यात्मिक भिन्न होता है, समस्त प्रतीक व भौतिकता से।।

इसी प्रकार ही मानवकृत समस्त, संकीर्ण-पंथ-मत-परंपरा से।
वाद-विवाद व तर्क-वितर्क परे, नियम-कानून-संविधान से परे।।

आत्मा का शुद्ध स्वरूप होता है, आध्यात्मिक सत्य शिव सुंदर भी।
स्वयंभू-स्वयंपूर्ण-चिदानन्दमय, अमूर्तिक-अनंतगुणगणमय भी।।

यथा आकाश किसी से भी बाधित न होता, तथाहि न सीमा में आबद्ध भी।
तथाहि आध्यात्मिक होता अबाधित, सीमातीत अखण्ड भी।।

कर्मजनित चौरासी लक्ष्य योनिया, मानवकृत समस्त भेदभाव भी।
आध्यात्मिक में न होते सम्पूर्ण भाषा, राष्ट्र धनी-गरीब छोटा बड़ा भी।।

समस्त प्रतीक व शब्द से परे, रीति-रिवाज व पूजा-पाठ भी।
कल्पना व अनुमान बुद्धि से भी परे, धार्मिक मूर्ति मंदिर ग्रंथ चिह्न भी।।

इसलिए आध्यात्मिक संत न होते, राष्ट्रीय या पंथ-मत-भाषा के।
वे भी उपरोक्त भाव सहित होते, भले वे होते शरीर से किसी देश के।।

कर्मरहित व भौतिक रहित होना ही, लक्ष्य होता है आध्यात्मिक जनों के।
प्रतीक आदि तो चिह्न मात्र है, इसी से परे लक्ष्य होता आध्यात्मिक।।

वे इसे अनुभव करते संवेदना, व आध्यात्मिक-भाव से।

अन्य इसे कोई न समझ पायेगा, बौद्धिक स्तर या भौतिक दृष्टि से।।

अतः आध्यात्मिक जन होते, परम उदार समताधारी शांत स्वभावी।
निस्पृह निराडम्बर होते वीतरागी, 'कनक' भी बनना चाहे आत्मस्वभावी।।

देवों के द्वारा भी वन्दनीय, भय योग्य

कस्मै नमः सुरैरपि सुतरां क्रियते दयाप्रधानाय।
कस्मादुद्विजितव्यं संसाराण्यतः सुधिया।। (22)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)
देवों के द्वारा भी वन्दनीय होते हैं, दया प्रधान महापुरुष।
संसार रूपी अरण्य से भयभीत होते है ज्ञानवान् पुरुष।। 1

समीक्षा-
दया प्रधान महापुरुष में होते हैं आध्यात्मिक गुण।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र युक्त अतः वे होते देवों से पूजीत।।2
सप्त भय से रहित होते जो श्रद्धा-प्रज्ञा से होते युक्त।
तथापि ऐसे निर्भय ज्ञानी भी, संसार से होते भयभीत।।3

दया ही पावन अमृत धारा

(राग : गंगा तेरा पानी अमृत....)
करुणा (दया)! तेरी धारा है पावन, सर्वत्र बहती जाए।
क्षुद्र जीव से श्रेष्ठ जीव तक, तुझसे अमृत पाए...दया...(ध्रुव)
तेरा निर्गम स्थान है सदा, निर्मल आत्म प्रदेश
जिससे तेरी धारा पावन अमृत जीव अशेषऽऽ
तू ही पावन अमृतमय, अन्य नहीं है अमय...करुणा...(1)
तेरी पावन धारा में, बने हैं तीर्थस्थान
उसी तीर्थ में जो स्नान करे, पाते हैं उच्च/(पुण्य) स्थान

सत्ता सम्पत्ति मात्र से कोई न, पाते उच्च/(पुण्य) स्थान...करुणा...(2)

दान सेवा परोपकार, कोमल मधुर स्वभाव
क्षमा मार्दव आर्जव शौच, संयम तप भावऽऽ
उदार सहिष्णु संवेदना, वे हैं तीर्थ स्थान...करुणा...(3)

मेरे तीर्थ में स्नान बिना जो, करते नाना धर्म
वे कभी न होते पावन, वे करते अधर्मऽऽऽ
समस्त धर्म पुण्य जननी, अन्य तो पाप कर्म/(कुधर्म)...दया...(4)

तुझसे ही जन्म लेते, तीर्थंकर बुद्ध संत
तेरे कारण से ही बनते, मानव गुणवंतऽऽ
तेरा अमृत 'कनकनन्दी' पीकर बना है सन्त...दया...(5)

धार्मिक जन के लक्षण

(राग : वैष्णव जन...)

धार्मिक जन तो तेने कहिये, जो सम्यक समता अपनाये हैं।।(रे)।
भाव पवित्रता सहित सोचे, कथन व्यवहार करे हैं (रे)

मन वचन काय कृतकारित से, निर्दोषी को न सताये रे।
नवकोटि से यथाभक्ति भी, परोपकारी बने रे।।

क्रोधमान माया लोभ को त्यागे रे, इन्द्रिय संयम करे रे।
मनको अपना वश में करे हैं, हितमित प्रिय बोले रे।।

सरल सहज सादा जीवन जीए, उदार भाव धारे रे।
अपना पराया भेद न करे, वैश्विक कुटुम्ब धारे रे।।

परनिन्दा पर अनादर त्यागे, गुणग्रहण ही करे रे।।
मैत्री प्रमोद कृपा माध्यस्थ भी, सुयोग्य भाव धारे रे।।

आध्यात्म चिंतन सतत करे, स्वदोष को परिहारे रे।
कोमल मधुर विनम्र बने, ढोंग पाखंड न करे रे।।

ईर्ष्या प्रतिस्पर्द्धा प्रसिद्धि प्रपंच, नवकोटि से न करे रे।
पंच पाप सर्व व्यसन त्याग करे, 'कनक' धार्मिक पूरे रे।।

सबके-स्वामी, स्थित-योग्य

कस्य वशे प्राणिगणः सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।
क्व स्थातव्यं न्यायेपथि दृष्टादृष्टलाभाय।।23

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति...)

सत्यप्रियभाषी व विनयीपुरुष के सभी प्राणी होते वशीभूत।
दृष्ट-अदृष्ट लाभप्रद न्यायमार्ग में होने चाहिये सभी को स्थित।।1

समीक्षा-

तीर्थंकर केवली आदि जो होते हैं सत्यप्रियभाषी आदि गुण युक्त।
उनके वश में होते सभी व उनके बनते हैं भक्त शिष्य।।2
ऐसा ही जो जितने अंश में उक्त गुणों से होते सहित।
उनके भी वशवर्ती होते अन्य जीव, यथा आचार्य आदि के शिष्य।।3
न्यायमार्ग में चलने वालों को मिलता इह पर लोक सुख।
अन्याय से मिले इह पर लोक दुःख अतः न्याय पथ में ही स्थातव्य।।4

परम न्याय संविधान-राजनीति के सूत्र

(चाल : 1. दोहावली....,2. हाँ तुम बिल्कुल..., 3. सायानोरा..., 4. शत-शत वन्दन...., 5. आधा है चन्द्रमा (करता हूँ वन्दना), 6. दुनिया में रहना है तो..., 7. गजानना....।)

''धर्मेण रक्षति रक्षितः''...यह है (सच्चा) संविधान।
''धर्मेण हन्ति हन्तः''...यह सही दण्ड-विधान।।(1)
''परित्राणाय साधुना''...यह है (परम) रक्षा तंत्र।।
''विनाशायश्च दुष्कृतां'' ... यह है (परम) दण्ड तंत्र।।(2)

''जैसा बोओगे वैसा पाओगे''... यह है न्यायिक प्रक्रिया।।
''पश्चात्तापत् फलश्च्युति''...यह है क्षमा -याचना।। (3)
''समताचरण ही परम चरण''... यह है साम्यवाद।
''परस्पर उपग्रहो जीवानां''...यह है समाजवाद।।(4)
''प्रजा सुरक्षा तथा सम्वृद्धि ....यह है राज्यनीति/(राजशासन)।''
''आत्मानुशासन-संयमाचरण''.... यह है प्रशासन। (5)
''आत्मासाक्षी सही ज्ञान''....यह है साक्ष्य विधान।
''कर्मों के बंधन होना''...यह है बन्दी सदन। (6)
''कर्मानुसार भाव होना''...यह है अधिवक्ता।
''कर्म उदय से फल मिलना''...यह है न्याय कर्त्ता।।(7)
''अहिंसा सत्य अचौर्य...ब्रह्मचर्य (पालन) अपरिग्रह।''
''क्रोध मान माया लोभ''... सप्त-व्यसन परिहार।।(8)
इतने में (सर्व) संविधान है...तथाहि न्याय-विधान।
उल्लंघन कर्त्ता होता दोषी...अन्यथा निरपराध।।(9)
मन वच काय कृत कारित...तथाहि अनुमत में/(है)।
पालन या उल्लंघन से...निर्दोष-दोषी विधान।।(10)
आत्म विशुद्धि से कर्म विनाश...यह है बन्दी मुक्त/(दोष मुक्त)
सत्य शिव सुंदर बनना...यह है जीवन लक्ष्य।।(11)
अनेकांत है विचार पद्धति...स्याद्वाद है कथन।
राग-द्वेष-मोह रहित भावना...सर्वोदय नियम।।(12)
आत्म-विश्वास ज्ञान चारित्र...सम्यक् मोक्षोपाय।
ध्यान-अध्ययन धैर्य संयम...क्षमादि सहोपाय।।(13)
अहिंसा परमो धर्मः यह है...विश्वशांति उपाय।
पर्यावरण सुरक्षा/(इको सिस्टम) व...सर्वजीव अधिकार।।(14)

यह है परम न्याय संविधान...राजनीति वैश्विक।
इसी से सर्वोदय होता (है)....'कनक' मान्य विशेष।।(15)

''सद्गृहस्थ (श्रावक) के 35 गुण''

(राग : तुम दिल की धड़कन....)

सद्गृहस्थों (श्रावकों) के स्वरूप को जानो, पैंतीस (35) प्रकार लक्षणों को मानो।
गृहस्थ मोक्षमार्गी नैतिक मानो, इह पर हितकारी व्यक्तित्व जानो।।ध्रु.।।
'न्याय उपार्जित वित्त' सहित, 'शिष्टाचार प्रशासक' युक्त।
'विवाह-विवेक' सहित गृहस्थ, 'पापभीरू' देशाचार-पालक।।(1)

'पापनिन्दा रहित' 'सही गृह वास', 'सत्संगति युक्त' 'मातृ पितृ भक्त'।
'उपद्रव रहित स्थान (में) निवास', 'निंद्य प्रवृत्ति का त्याग' विशेष।।(2)

'व्यय की मर्यादा' गुण सहित, 'वित्तानुसार वेश' सहित।
'अष्ट गुण युक्त बुद्धि' सहित, 'सुश्रुता श्रवण ग्रहण' युक्त।।(3)

'धारण तर्क अपोह' सहित, 'अर्थ विज्ञान तत्त्वज्ञान' सहित।
'प्रतिदिन धर्म श्रवण' युक्त, 'अजीर्ण व भोजी' 'सुयोग्य भुक्त युक्त'।।(4)

'अबाधित त्रिवर्गसाधन' युक्त, 'दान-दया-दत्ति' गुण सहित।
'पद अवहेलना/(अभिनिवेश) दोष रहित, 'गुण पक्षपाती' गुण सहित।।(5)

'अयोग्य देश-काल का त्याग', 'स्व-पर बलाबल सुज्ञात।'
'ज्ञानी-गुण-साधु पूजत' रत, 'पोष्य-पोषक'-(परिवार पोषण) गुण सहित।।(6)

'दीर्घदर्शी'-विशेषज्ञ 'कृतज्ञ', 'लोकप्रियता' 'सलज्जता' युक्त।
'दयालु' 'सौम्य' 'परोपकार' युक्त, 'अंतरंग षड्वैरियों' का त्याग।।(7)

'इन्द्रिय विजयी' सद्गृहस्थ, और भी अनेक गुण सहित।
'सप्त व्यसन' 'अष्टमद' त्याग, 'कनक' मान्य है सद्गृहस्थ।।(8)

''अठारह (18) पाप स्थान''

(राग : चौपाई-जय हनुमान...)

पाप स्थान अट्ठारह जानो, पाप बंध के कारण मानो।
नवकोटि से परित्याग करो, परम्परा से मोक्ष को वरो।।(1)

प्राणातिपात हिंसा को कहते, नवकोटि से इसे जो करते।
पर्यावरण की क्षति करते, पाप बंध से नरक में जाते।।(2)

मृषावाद है असत्य कथन, प्रमाद सहित जो होता कथन।
सत्य विपरीत जो होता कथन, कर्कश कलहकारी जो वचन।।(3)

अदत्तादान चोरी को कहते, भ्रष्टाचार मिलावट भी होते।
कालाबाजारी व शोषण होते, चोरी के अंतर्गत ये सब आते।।(4)

अब्रह्मचर्य को मैथुन कहते, अश्लील कामुक भी मैथुन होते।
दोनों प्रकार हिंसा भी होती, समस्या बीमारी आ घेरती।।(5)

मूर्च्छा से परिग्रह होता, अंतरंग बहिरंग भी होता।
शोषण भ्रष्टाचार भी होते, विभिन्न प्रदूषण भी होते।।(6)

क्रोध से विवेक नष्ट होता, क्षमा स्वभाव भी नष्ट होता।
कलह विसंवाद तनाव होते, तनमन आत्मा अस्वस्थ होते।।(7)

अष्ट प्रकार मान होता, सम्यग्दर्शन नाश करता।
विनय भाव नहीं उपजता संयम तप ज्ञान नाशता।।(8)

छल-कपट माया होती, सरल भाव को नाश करती।
प्रामाणिकता नहीं रहती, तिर्यंच आयु का बंध करती।।(9)

लोभ पाप का बाप बखाना/(कहते), अनेक पाप उत्पन्न होते।
परिग्रह संचय इससे होता, परिग्रहजन्य पाप भी होता।।(10)

लोभ माया से राग होता, राग तो आग समान होता।
राग से कर्म बंधन होता, संसारवर्द्धन काम करता।।(11)

क्रोध-मान से द्वेष होता, जिससे द्वंद्व उत्पन्न होता।
कलह-झगड़ा-वैर होते, अनेक अनर्थ उत्पन्न होते।।(12)

कलह से वाद-विवाद होते, द्वंद्व विग्रह उत्पन्न होते।
समता शान्ति से काम न होते, ताड़न-मारन-हनन होते।।(13)

अभ्याख्यान है दोष लगाना, दोषारोपण झूठा कहना।
दोनों को उद्घाटित करना, पैशून्य-पाप से सहित होना।।(14)

पर-परिवाद को निंदा कहते, इससे कलह तनाव होते।
पाप स्वरूप है रति-अरति, धर्म में अरुचि अधर्म में रुचि।।(15)

माया मृषावाद है पाप स्वरूप झूठ बोलना है पाप स्वरूप।
मिथ्यादर्शन शल्य है पाप, विपरीत श्रद्धान सहित रूप।।(16)

दुःखमेव है पाप स्वरूप, त्याग करना सुख स्वरूप।
त्याग हेतु यह वर्णन किया, 'कनकनन्दी' को पाप न भाया।।(17)

चपल, सत् पुरुष

विद्युत्विलसितचपलं किं दुर्जनसङ्गतं युवतयश्च।
कुलशैलनिष्प्रकम्प्याः के कलिकालेऽपि सत्पुरुषः।।24

पद्यानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

विद्युत् चमत्कार सम चंचल होती है दुर्जन संगति व युवतियाँ।
कलिकाल में भी कुलाचल सम, निष्कम्प होते हैं सत्पुरुष।।1

समीक्षा-

दुर्जन संगति युवती प्रीति होती है विद्युत् सम चंचल।
इन से न मिलता है चिर सुख चंचलता से न मिलता सुख।।2
सत् पुरुष होते सत्यनिष्ठ अतः वे कलिकाल में भी निष्कम्प।
समता-शान्ति-धैर्य-संयम-अनुशासनादि से होते सहित।।3

हाय रे! मानव संकीर्ण वाला...!?

(चाल : 1. बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत...2. सायोनारा...)

हाय रे! मानव संकीर्णवाला...कट्टर-दुराग्रह-अनुदार वाला...ऽऽ
भाव-व्यवहार व वचन वाला...धर्म से ले राजनीति वाला...ऽऽ
स्व-संकीर्णता से (ही) सभी मानने वाला...अन्य सभी को मिथ्या मानने वाला...ऽऽ
कूपमण्डुकता व भेड़चाल से भी परे....अधिक कट्टरता व दुराग्रह तेरे...ऽऽ
तुमने महापुरुषों को मूर्ख माना...उन्हें अपमानित किया प्राण हरा...ऽऽ
सभ्यता-संस्कृति व आध्यात्मिकता...नीति-नियम-सदाचार को मारा...ऽऽ
व्यापकता-उदारता को तुम नाशते...प्रगतिशीलता को तुम रौंदते...ऽऽ
शोध-बोध-प्रयोग के हंतार...भाव प्रदूषण का भी तुम कर्त्ता...ऽऽ
जो कुछ देखते (हो) सुनते-पढ़ते...धार्मिक-नैतिक उपदेश सुनते...ऽऽ
सभी को स्वसंकीर्णता से मानते...अन्य सभी को तू अग्राह्य करते...ऽऽ
तुम्हारा वर्णन भी हुआ है शास्त्रों में...हठाग्रही-दुराग्राही-मिथ्यात्वी रूप में...ऽऽ
कुशिष्य या कुश्रोता रूप में...मंथरा-शकुनी (आदि) उदाहरणों में...ऽऽ
चालनी भग्नघट-शिला रूप में...बगुला-तोता-मच्छर-जोंक रूप में...ऽऽ
महिष-सर्प-गिली मिट्टी रूप में...अगुणग्राही-गुणद्वेषी रूप में...ऽऽ
तेरा विश्व रूप सर्वत्र व्याप्त...धर्म राजनीति-भाषा पर्यंत...ऽऽ
शिक्षा-सभ्यता-संस्कार-संस्कृति...तेरे कारण सर्वत्र होती विकृति...ऽऽ
यदि कोई शब्द प्रसिद्धि किसी क्षेत्र में...उसे भी प्रयोग न करते (हो) अन्यक्षेत्र में...ऽऽ
योनि-लिंग-वीर्य आदि व्यापक शब्द...केवल अश्लीलता में करते प्रयोग...ऽऽ
ऐसा ही भाव-व्यवहार वचन आदि...जो होते अति व्यापक प्रयोग...ऽऽ
उसे भी स्व-संकीर्णता से करते प्रयोग...अन्य-धर्म-विषयों को न करते प्रयोग...ऽऽ
अन्य धर्म के पावन व्यक्ति या काम...भोजन-नियम या सदाचरण...ऽऽ
शब्द से लेकर नाम अथवा स्थान...तेरे लिए अयोग्य व अग्रहणीय......ऽऽ
संकीर्ण स्वार्थ या परवंचना हेतु...प्रयोग करते हो अन्य को मारने हेतु...ऽऽ

यथा चोर-ठग-आतंकवादी हत्यारे...रावण सम (व्यवहार) करते सीता हरण हेतु...ऽऽ
इस हेतु अन्य की भाषा बोलेंगे...वेश-भूषा व हाव-भाव करेंगे...ऽऽ
मुँह में प्रभु नाम बगल में छूरी सम...गोमुख व्याघ्र या बक भक्त सम...ऽऽ
गिरगिट या आक्टोपस के समान छद्मवेशी बनते हो शिकारी समान...ऽऽ
किन्तु वास्तविक में रहते हो संकीर्ण...संकीर्णता त्याग हेतु 'कनक' का आह्वान...ऽऽ

खेदजनक, प्रशंसनीय, उदारता, सहनशीलता

किं शोच्यं कार्पण्यं सति विभवे किं प्रशस्यमौदार्यम्।
तनुतरवित्तस्य तथा, प्रभविष्णोर्यत्सहिष्णुत्वम्।।(25)

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

सम्पत्ति होने पर भी कृपण होना यह है खेदजनक।
विभूति होने पर भी उदारता होना यह है प्रशंसनीय।।

निर्धन होने पर भी उदारता होना यह है प्रशंसनीय।
प्रभावशाली की सहनशीलता यह है प्रशंसनीय।।

सन्दर्भः-

अन्य के दोष प्रकट कर देने पर वह लज्जित होकर दुःखी होगा अथवा आत्मघात कर लेगा, या क्रुद्ध होकर रत्नत्रय को ही छोड़ देगा तथा उस आचार्य ने अपनी आत्मा का त्याग किया, गण का त्याग किया, संघ का त्याग किया। इतना ही नहीं उसके मिथ्यात्व की आराधना का दोष भी होता है।

दोष कथन से मिथ्यात्व की आराधना क्यों?

जदि धरिसणमेरिसयं करेदि सिस्सस्स चेव आयरिओ।
धिद्धि अपुट्ठधम्मो समणोत्ति भणेज्ज मिच्छजणो।।(496)

यदि आचार्य अपने शिष्यों के ही इस प्रकार दोष प्रकट करके दोषी करते हैं तो इन अपुष्ट धर्म वाले श्रमणों को धिक्कार है ऐसा मिथ्यादृष्टि लोग कहेंगे।

इच्चेवमादिदोसा ण होंति गुरुणो रहस्सधारिस्स।

पुट्ठेव अपुट्ठे वा अपरिस्साइस्स धीरस्स।।(497)

जो आचार्य पूछने पर अथवा बिना पूछे शिष्य के द्वारा प्रकट किये दोषों को दूसरों से नहीं कहता वह रहस्य को दूसरों से नहीं कहता वह रहस्य गुप्त रखने वाला अपरिश्रावी होता है और उसे ऊपर कहे दोष भी नहीं छूते।

मैं प्रशंसनीय गुणी बनूँ व गुण-गुणी की प्रशंसा करूँ

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तुम दिल की....,छोटी-छोटी गैया....)

प्रशंसनीय गुणी मैं भी बनूँ, गुण गुणी की प्रशंसा भी करूँ।
वात्सल्य प्रमोद भाव मैं धरूँ, स्वयं को प्रसन्न व अन्य को करूँ।।

धर्म में इसे कहते अनुमोदना, गुणानुराग स्तुति (प्रार्थना) वंदना।
पूजा आरती या अर्चना सम्मान, विनय बहुमान गुण कीर्तन।

पूजनीय प्रति होती प्रार्थना वंदना, पूजा आरती या स्तुति अर्चना।
अन्य गुणी सत्कर्मी प्रति होती प्रशंसा, सभी सत्कर्म में अनुमोदना।।

श्लोक-स्तुतिः पुण्य गुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्न धीः।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलंनैश्रेयसं सुखम्।। (सहस्त्रनाम)

स्तुति होती है पुण्य गुणों की कीर्ति, स्तोता होता है भव्य प्रसन्न बुद्धि।
निष्ठितार्थ पूज्य होते हैं स्तुत्य, फल मिलता है नैश्रेयस सुख।।

श्लोक-उच्चैर्गोत्र प्रणतेर्भोगो दानादुपासनात्पूजा।
भक्तेः सुन्दर रूपं स्तवनात्कीर्ति स्तपोनिधिषु।। (25 रत्नक.)

उच्चगोत्र मिले प्रणाम करने से भोग मिले है दान देने से।
पूजा होती है उपासना से सुंदर रूप भी मिले भक्ति से।।

कीर्ति मिलती है स्तवन करने से, तीर्थंकर प्रकृति बंधे वैयावृत्ति से।
ये सब फल मिले (हैं) गुरु भक्ति से, गुण प्रशंसा व अनुमोदना से।।

आहारदाता को जो फल मिलता, प्रशंसाकर्त्ता को भी (वह) फल मिलता।
आदिनाथ भगवान् के उदाहरण ज्ञेय, श्रेयांस-भरत के दृष्टांत ज्ञेय।।

अन्य गुण गुणी व सत्कर्मकर्त्ता की, प्रशंसा अनुमोदना करने की।
होते हैं लाभ स्व-पर अन्य के, प्रोत्साहन तथा प्रेरित होने के।।

प्रोत्साहनकर्त्ता भी बनते प्रसन्न, प्रफुल्लित होते तन व मन।
उन्हें भी मिलता है आदर सम्मान, सेवा सहयोग एकता बहुमान।।

प्रशंसनीय के भी बढ़े (है) आत्मविश्वास, नेगेटिव थिकिंग का होता है नाश।
प्रेरित व प्रोत्साहित भी वे होते, उत्तम कार्य हेतु प्रयास करते।।

तनाव भय से भी (वे) निवृत्त होते, सुखद अनुभव से समृद्ध होते।
कृतज्ञ व सहयोगी भी बनते, वैर-विरोध व ईर्ष्या भी त्यागते।।

इत्यादि होते हैं अनेक लाभ, इसलिए मैं करताँ हूँ सही तारीफ।
आशीर्वाद पुरस्कार भी मैं देता, 'कनकनन्दी' को गुण/(गुण) ही भाता।।

रायचन्द व चापलूस नहीं बनूँगा, हतोत्साहित भी नहीं करूँगा।
ठगना व प्रलोभन नहीं करूँगा, सच्चे-अच्छे प्रामाणिक बनूँगा।।

चार भद्र चिन्तामणि

चिन्तामणिरिव दुर्लभमिह ननु कथयामि चतुर्भद्रम्।
किंतद्वदन्ति भूयो विद्युत तमसो विशेषेण।।26
दानं प्रियवाक् सहितं ज्ञानमगर्व क्षमान्वितं शौर्यम्।
त्याग सहितं च वित्तं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम्।।27

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

भद्रलोक चार चिन्तामणि जो लोक में है दुर्लभम्।
यह कथन है उन महात्माओं का जिसने दूर किया स्व तम/(अज्ञान)
प्रियवचन सहित दान देना, गर्व रहित होता जो ज्ञान।
क्षमा सहित शौर्य से युक्त, त्याग सहित होता धन।।

आहार औषधि अभय ज्ञानदान

(आहारदान से श्रेष्ठ औषधिदान, औषधिदान से श्रेष्ठ अभयदान, अभयदान से श्रेष्ठ ज्ञानदान)

(चाल : भातुकली...,तुम दिल की धड़कन..., छोटी-छोटी गैंया...)

आहार औषधि अभय ज्ञान में...उत्तरोत्तर है दान महान्...
आहार से औषधि, औषधि से अभय...अभय से ज्ञानदान महान्...(स्थायी)...

आहार से क्षुधा रोग दूर होता..अतः आहारदान भी औषधिदान...
इससे अभयदान भी होता...जिससे सुपात्र करता ज्ञानार्जन...
अतः आहारदान में भी गर्भित...औषधि व अभयदान...
ज्ञानार्जन करते अतः सुपात्र...आहारदान भी है ज्ञानदान...(1)...

औषधि से सुपात्र निरोगी होकर...आहार करके पाता अभय...
जिससे वह ज्ञानार्जन करके...साधना से पाता परिनिर्वाण...
इसीलिये भी औषधिदान श्रेष्ठ...जिससे शरीर होता है स्वस्थ...
''शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्''... अस्वस्थ तन से न होती आत्मसाधना...(2)...

जीवित पात्र ही साधना करता...जिससे मिलता है परिनिर्वाण...
बिना जीव हेतु न होता आहारदान...तथा औषधि व ज्ञानदान...
आहार के बाद भी भूख लगती...होता है रोग व जन्म-मरण...
जीवित पात्र भी सुज्ञान बिना...नहीं प्राप्त कर पाता (परि) निर्वाण...(3)...

परिनिर्वाण हेतु सुज्ञान चाहिये...निर्वाण में नहीं भूख-रोग-मरण...
भूख रोग मरण विनाश हेतु चाहिये...सुज्ञान अतः ज्ञानदान महान्....
ज्ञानदाता ही है 'गुरु' होते...अन्य दानदाता न होते गुरु...
अरिहंत आचार्य पाठक साधु...अतएव होते हैं परम गुरु...(4)...

अरिहंत ज्ञानदाता होने से...सिद्ध से पूर्व उन्हें करते नमन...
ज्ञानदान ही है निरवद्य दान...जिसे करते चारों गुरु महान्...
आत्मकल्याण व ज्ञानवृद्धि हेतु...ज्ञानदाता होता महान् दान...

दोष निवारण-आत्मसाधना हेतु...ज्ञानदान देता महान् दान...(5)...

अज्ञानी मोही असंयमीजन नहीं...कर पाते ज्ञानदान महान्....
चतुर्थ-पञ्चम गुणस्थानवर्ती भी...ज्ञानदान हेतु न होते योग्यतम्...
हर साधु भी न ज्ञानदान कर पाते...इस हेतु चाहिये योग्यता महान्...
ज्ञानी अनुभव अध्यापन कुशल...वाग्मी प्रश्न सह अति मतिवान्...(6)...

अतएव योग्य ज्ञानदानी को...सुपात्र को ज्ञानदान विधेय/(करणीय)...
ख्याति पूजा लाभ विरहित...सत्य-तथ्य जो आगम प्रमाण...
ज्ञानदान से ज्ञान वृद्धि होता...सातिशय पुण्य बंध होता विशेष...
असंख्यातगुणी कर्म निर्जरा होती...केवली बनकर पाये निर्वाण...(7)...

प्रवचन देना गलती सुधारना...शिविर संगोष्ठी ग्रंथ प्रकाशन...
ये सब ज्ञानदान में गर्भित....'कनक' चाहे ज्ञानदान महान्...(8)...

आभरण रिक्त शोभा

इति कण्ठगता विमला प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम्।
ते मुक्ताभरणा अपि विभ्रान्ति विद्वत्समाजेषु।।28

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका जिस ने कण्ठ में किया धारण।
आभरण रहित होने पर भी वह विद्वत्समाज में होत सम्मान।।

ग्रन्थकर्त्ता का परिचय

विवेकात्त्यक्त राज्येन, राज्ञेयं रत्नमालिका।
रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलंकृतिः।।29

पद्यभावानुवाद- (चाल : आत्मशक्ति....)

विवेक से जिसने किया राज्य त्याग ऐसे अमोघवर्ष।
सुधिजनों को अलंकृत करने वाली रत्नमालिका किया वर्णन।।

रत्नमालिका का हिन्दी पद्यानुवाद किया है 'सुरी कनक'
स्व-पर-विश्व कल्याण हेतु आठ (8) दिन में हुआ पद्यानुवाद।।

सागवाड़ा : 23.3.2018 रात्रि 10:24 (8 दिन में पद्यानुवाद हुआ)

सुकवि-सुकविता व गुणग्राही-श्रोता का सुफल
(सुगुरु-प्रवचन व गुणग्राही श्रोता-शिष्य व कुगुरु-कुशिक्षा गुणद्वेषी-निन्दक का कुफल)

(चाल : तुम दिल की....)

धन्य हे! सुकवि धन्य हो तुम, कितनी कल्पना करते हो।
सत्य-तथ्य को कल्पना द्वारा, काव्यरस में बहाते/(लिखते) हो।
स्व-पर हित में कविता लिखते हो, उदार-गुणग्राही दृष्टि से।
सूक्ष्म-गूढ़-अमूर्तिक तत्त्व को भी, लिखते स्थूल दृष्टान्त से।।1

उपमा अलंकारादि रस ले, काव्य बनाते हो सरस।
गुणग्रहण-दोष हरण हेतु, गुणी-व पापीओं का भी करते वर्णन।
महान् पुरुष रूपी महानायक तो आप के होते प्रमुख पात्र।
वे तो होते सूर्य चन्द्र सम, राहु केतु होते आनुसंगिक पात्र/(पापी)।।2

मोक्षगामी व मोक्षपथ ही होता आप का प्रमुख विषय।
इसके सापेक्ष/(विपरीत) संसार-संसारी का भी वर्णन आवश्यक विषय।
इसे ही केन्द्रकर समस्त विष7य, प्रतीपादन करते सापेक्षता से।
द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ प्रतीपादन करते अनेकान्त दृष्टि से।।3

अतः पाप व पापीओं का भी, वर्णन हो जाती शिक्षाप्रद सुकथा।।
इससे विपरीत समस्त कथा (शिक्षा), हो जाती हानिप्रद विकथा।
तीर्थंकरों से अंजनचोर/(विद्युत्चोर) तक का, वर्णन करते स्वरचनाओं में।
वे सभी ही पूर्व के पापकर्मों को, नाशकर बने पावन भी।।(4)

चार गति चौरासी लाख योनियों का, वर्णन करते शिक्षा प्राप्ति हेतु।
प्रकृति चित्रण से ले आक्रमण युद्ध, हत्या-बलत्कार से शिक्षा प्राप्त हेतु।
इसे श्रवण करते हैं सुश्रोता से। (सुशिक्षा) स्वयं पावन हेतु नम्रता से,
गुणग्राही हो प्रमोद भाव से, एकाग्रचित हो सत्य जिज्ञासा से।।(5)

इससे विपरीत होते कुकवि काव्य श्रोता से शिष्य तक।
अंगुर को यथा मद्य बना व पीकर, होते नष्ट से ले भ्रष्ट तक।
सुकवि आदि ही सुयोग्य है, वे ही श्रवणीय व ग्रहणीय।
किसी भी देश-काल आदि में, कुकवि (आदि) न श्रवणीय न ग्रहणीय।।(6)

नैतिक से सामाजिक-राष्ट्रीय व, अन्तर्राष्ट्रीय व धर्म तक में।
सुकवि आदि के कारण होती, क्रान्ति से शान्ति जनगण में।
जहाँ न पहुँचे रवि जगत् में, वहाँ पहुँचते अनुभवी कवि।
जो क्रान्ति-शान्ति संभव नहीं अस्त्र-शस्त्र से उसे संभव करे सुकवि।।(7)

भारत में अभी अधिकतर, कुकवि आदि के अधिक प्रभाव।
जिससे विश्वगुरु भारत अभी, अनैतिक-भ्रष्टाचार के प्रभाव में।
उक्त सुगुण के प्रभाव हेतु व, कुगुणों को प्रभावहीन बनाने हेतु।
सुकाव्यों की रचना करे 'कनक सूरी' स्व-पर-विश्व हित हेतु।।(8)

''गुणगण कथा दोष वादे च मौनं'' मैं क्यों करता हूँ!?
(सद्वृत्तों का सुजस कहके दोष ढांकूँ सभी का)

(गुण प्रशंसा-प्रोत्साहन-अनुमोदना-कृतज्ञता-पूजा-प्रार्थना-आरती-वन्दना-विनय, सहयोग-समर्थन आदि से लाभ व इनसे विपरीतता से हानियाँ)

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल : आत्मशक्ति....)

गुण गुणी प्रशंसा व अनुमोदना से करो जिया अन्य को प्रोत्साहित।
इससे स्व-पर का होगा उपकार क्योंकि पुण्य होता है नवधा प्रकार।।1

शुभाशुभ होते नव कोटि से मन-वचन-काय-कृत-कारित अनुमत से।
गुणगुणी प्रशंसा व प्रोत्साहन से, पुण्य बन्ध तेरा होगा यथायोग्य से।।2

जिनके गुणों की होती प्रशंसा जिससे व होते प्रसन्न व प्रोत्साहित।
गुण बढ़ाते व दोष त्यागते अच्छे कार्य हेतु करते प्रयत्न।।3

इष्ट प्रार्थना में आचार्यों ने कहा ''गुणगण कथा दोष वादे च मौनम्''।
पूजा विसर्जन में कहा ''सद्वृत्तों का सुजस कह के दोष ढांकूँ सभी का''।।4

''गुणेषु प्रमोदं'' भाव रखने वाले, गुण गुणी की करते प्रशंसा।
यह ही यथार्थ पूजा-वन्दना-आरती-विनय-कृतज्ञता-प्रार्थना।।5

पंचपरमेष्ठी होते उत्कृष्ट गुणी, उनकी प्रशंसा होती उत्कृष्टतम।
अन्य गुणी की भी यथायोग्य प्रशंसा, करणीय ऐसा कहे आगम।।6

आंशिक गुणी की भी प्रशंसा शास्त्रों में पाई जाती है अनेक विध।
शिकारी-सुअर-चाण्डाल-कुत्ता-चोर-धीवर की प्रशंसा निबद्ध।।7

''दोषवादे च मौनं'' शास्त्रों में कहा, ''दोष ढ़ाकूँ सभी का'' माना।
इससे होते अपगूहन-स्थितिकरण व वात्सल्य तथा प्रभावना।।8

दोष कथन में इसमें दोष लगे, जिससे भाव भी होता मलीन।
ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-कलह होते जिससे होता पाप बन्धन।।9

इससे दोषी व दोष कथक में, मैत्री-प्रमोद-कारुण्य साम्य नशे।
तनाव-उदासीन-वैमनस बढ़े, प्रोत्साहन व कार्य क्षमता घटे।।10

प्रोत्साहन तो गुण ग्राहकता है तो निन्दा करना इससे विपरीतता।
स्व-पर प्रसन्न व प्रगति हेतु, 'सूरी कनकनंदी' करे गुण प्रशंसा।।11

दोष दूर हेतु व गुण वृद्धि हेतु, करो जिया अन्य को प्रोत्साहित।
किन्तु न करो अन्य की निन्दा, जिससे अन्य होते हतोत्साहित।।12

दानदाता हेतु देव पंचाश्चर्य करते, जय-जयकार से ले रत्नवृष्टि।
गुण प्रशंसा-पुरस्कार-उपाधि द्वारा, अन्य को तू करो प्रोत्साहित।।13

गुण ग्रहण-गुण प्रशंसा-प्रोत्साहन तो करते हैं सज्जन लोग।
दोष ग्रहण-दोष कथन-हतोत्साह तो करते हैं दुर्जन लोग।।14

बिना धन खर्च किये सज्जन लोग, प्रशंसा से करते पुण्यार्जन।
बिना प्रयोजन दुर्ज्जन लोग निन्दा से करते पापार्जन।।15

सागवाड़ा - 20.4.2018 रात्रि 9:00

सन्दर्भ-

मुनिराज तत्त्वचिंतक होते हैं

तच्चवियारणसीलो मोक्ख महाराहणा सहावजुदो।
अणवरयं धम्मकहा पसंगओ होइ मुणिराओ।।99।। (रयण.)

अर्थ : जिन मुनिराजों ने पूर्व में श्रुतज्ञान का अभ्यास किया है और वर्तमान में भी तत्त्वों का विचार करने में कुशल (चतुर) हैं, लीन है। मोक्षमार्ग की आराधना करने का जिन मुनिराज का स्वभाव हो जाता है और निरन्तर अपना समय धर्म कथा में ही व्यतीत करते हैं। सदा धर्मरत रहते हैं। वे ही यथार्थ मुनिराज कहते हैं। वास्तविक यही मुनिराजों का स्वरूप है।

मुनिराज की अनवरत चर्या

विकहाइ विप्पमुक्को आहाकम्माइ विरहिओ णाणी।
धम्मुदेसण कुसलो अणुपेहा भावणाजुदो जोई।।100

अर्थ : ज्ञानी योगीराज सतत धर्म ध्यान में और अध्ययन में लवलीन रहते हैं। स्त्री कथा, अर्थकथा, राजकथा, भोजन कथा, चोर कथा, वैर कथा, पाखण्डी कथा, देश कथा, स्वप्रशंसा संबंधी कथा, परनिन्दा प्रकट कथा, तथा आक्षेपिणी विपेक्षेणी कथा इन कुकथाओं से सर्वदा सर्वथा भिन्न रहते हैं।

सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की भावनाओं में कार्यकृति में लगते रहते हैं। तथा सतत धर्म का उपदेश देने वाले होते हैं। तथा बारह भावनाओं के द्वारा तत्त्वस्वरूप का विचार करते रहते हैं। ऐसे ज्ञानी भव्य नरोत्तम पुरुष जिनलिंग-नग्नमुद्रा निर्ग्रंथ दिगम्बर धारक मुमुक्षु मुनीश्वर यतीश्वर होते हैं।

विकल्प, द्वंद्व रहित मुनिराज

अवियप्पो णिद्दंदो णिम्मोहो णिक्कलंकओ णियदो।
णिम्मलसहाव जुत्तो जोई सो होइ मुणिराओ।।101

अर्थ : परमोत्कृष्ट मुनीश्वर का स्वरूप यह है कि जो यतीश्वर शुभ अशुभ संकल्पों से विकल्पों से रहित हैं, कोई द्वंद्व नहीं है, निर्मोह हैं, कलंक रहित हैं, अपने स्वरूप में स्थिर हैं, निर्मल है, निर्भय है, स्वच्छ आत्म स्वभाव सहित है वे ही मुनिनाथ है। स्व पर के हितकारी है।

मुनिराज कैसे होते हैं?

णिंदा वंचण दूरो परीसह उवसग्ग दुक्ख सहभावो।
सुहज्झाणज्झयण रदो गयसंगो होइ मुणिराओ।।102

अर्थ : जो निंदादिक गर्हित वचनों से रहित हैं अर्थात् कभी किसी की भी किसी भी प्रकार की निन्दा नहीं करते हैं। मायाचार कुटिलपना भावों को स्पर्श भी नहीं करते हैं। परिषहों और उपसर्ग के भयंकर दुःख को समभाव से सहते हैं। साम्यभाव के धारक हैं, शुभध्यान व अध्ययन में सदा तत्पर रहते हैं। तथा चौबीस प्रकार के परिग्रह से सर्वथा रहित नग्न-दिगम्बर निर्ग्रंथ प्रत्यक्ष हैं वे ही यतीश्वर होते हैं।

गर्हित वचन भी हिंसा

पैशून्य-हास, गर्भ, कर्कशमसमंजसं प्रलापितं च।
अन्यदपि यदुत्सूत्रं, तत्सर्वं गर्हितं गदित्तम्।।96

Garhita speech is said to be all that, which is back bitting, harsh, unbecoming, nonsensical, or otherwise uncannonical.

व्याख्या भावानुवादः तीन प्रकार के असत्य में से यहाँ गर्हित वचन का प्ररूपण करते हैं। जो वचन पैशून्य अर्थात् चुगलखोरी/अट्टहास से भरा है उसे गर्हित वचन कहते हैं। पुनः जो वचन कर्कश, कठोर, असमंजस, सन्देहात्मक, असभ्य, अयोग्य वचन हैं वे भी गर्हित वचन हैं। इसी प्रकार जो बकवास से भरा गप्पेबाज, अधिक बोलना, उत्श्रृंखल बोलना, भगवान् के प्रामाणिक वचन से बाह्य वचन बोलना ये सब वचन कुत्सित, गर्हित वचन हैं।

समीक्षाः- उपर्युक्त वचन में विशेषतः प्रमाद, कुटिलता, धूर्तता, कठोरता, मूर्खता आदि दुर्गुण पाये जाते हैं। इससे दूसरों को तो कष्ट पहुँचता ही है परन्तु स्वयं की शक्ति तथा समय का दुरुपयोग होता है। अन्तरंग से दूषित भाव से प्रेरित होकर यह वचन प्रयोग करने के कारण स्वयं को तो पाप बन्ध होता ही है तथा दूसरों के मन में संक्लेष परिणाम होने के कारण दूसरों के पापबन्ध का भी कारण बनता है। इतना ही नहीं उपर्युक्त वचनों से शब्द प्रदूषण होता है। कलह, तनाव, वैमनस्य बढ़ता है, फूट पड़ती है जिससे मानसिक, पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण प्रदूषित हो जाता है। प्रायः तुच्छ व्यक्ति उपर्युक्त वचन का प्रयोग करते हैं। मेरा स्वयं का अनुभव है भारत के अधिकांश व्यक्ति उपर्युक्त वचन में ही अधिक समय तथा शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। मन्दिर हो या स्कूल, धर्मसभा हो या संसद भवन, तीर्थस्थल हो या सामाजिक सार्वजनिक स्थल यत्र-तत्र सर्वत्र भारत में उपर्युक्त वचन का ही गरमागरम माहौल रहता है। महत्त्वपूर्ण और जरूरी विषय की चर्चा तथा चर्या को गौण करके उपर्युक्त विषय को ही मुख्यता देते हैं। अधिकांश अनुशासन भंग के लिये कारण उपर्युक्त कथन ही है। जो व्यक्ति बाल सुलभ बच्चों के शोर-शराबे को खराब मानकर डाँटेंगे वे ही व्यक्ति धार्मिक स्थल में, सार्वजनिक स्थल में यहाँ तक कि संसद भवन में असभ्य बर्बर व्यक्तियों के समान व्यवहार करेंगे।

सावद्य वचन रूपी हिंसा

छेदन-भेदन-मारण कर्षण-वाणिज्य-चौर्य वचनादि।
तत्सावद्यं यस्मात्प्राणिवधाद्याः प्रवर्तन्ते।।97

All speech which makes another engage in piercing cutting,

beating, ploughing, trading, stealing, etc. is savadya, sinful as it leads to destruction of life etc.

व्याख्या भावानुवाद : यहाँ पाप का स्वरूप कथन कर रहे हैं। जिससे प्राणी वध आदि होता है। वह सब सावद्य है अर्थात् पाप स्वरूप है। जिस वचन से प्राणी वध आदि होते हैं वे सब वचन सावद्य वचन हैं। जैसे कि छेद करो, काटो, भेदन करो, विदारण करो, मारो, प्राण से वियोग करो, कृषि करो, वाणिज्य करो, चोरी करो आदि वचन सावद्य वचन हैं। ऐसे वचन से प्राणी वधादि होते हैं इसलिये ऐसे वचन का त्याग करना चाहिये।

अप्रिय वचन रूपी हिंसा

अरतिकरं भीतिकरं खेदकरं वैरशोक-कलहकरम्।
यदपरमपि तापकरं परस्य तत्सर्वमप्रियं ज्ञेयम्।।98

Know all that as Apriya, which causes uneasiness, fear, pain, hostility, grief, quarral, or anguish of mind to another person.

व्याख्या भावानुवाद : निम्नोक्त समस्त वाक्य अप्रिय/अनिष्ट तथा हिंसात्मक है। जो वचन अरतिकर अर्थात् द्वेषकारक है तथा भीतिकर अर्थात् भयकारक है और भी जो खेद को करने वाला वैर को करने वाला, शोक को करने वाला, कलह को करने वाला है ये सब वचन अप्रिय वचन है। क्योंकि इन वचनों से दूसरे जीवों को ताप पहुँचता है, कष्ट पहुँचता है।

समीक्षाः- केवल अविद्यमान को विद्यमान कहना या विद्यमान को अविद्यमान कहना असत्यवचन नहीं है। परन्तु ऐसा सत्य वचन भी असत्य है जिससे कलह आदि होता है। वचन वस्तुतः सत्य या असत्य नहीं होता है परन्तु सत्य भाव या पवित्र भाव से प्रेरित वचन सत्य है और असत्य भाव से या दूषित भाव से कहा गया वचन असत्य है। कुछ लोग कलह आदि करने के भाव से या दूसरों को अपमानित करने के भाव से वचन बोलते हैं और कहते फिरते हैं कि ''मैं थोड़े झूठ बोला, जो मैंने देखा या सुना वहीं बोला''। परन्तु उनका भाव दूषित होने के कारण उनका वचन भी असत्य है। क्योंकि इससे दूसरों को कष्ट पहुँचता है, कलह आदि होते हैं। ऐसा कहने

वाले व्यक्ति अवश्य कुटिल, मायाचारी या झगड़ालु होते हैं। इनका काम शकुनि या मन्थरा के जैसा होता है। इन्हें लोग कलहप्रिय नारद कहकर पुकारते हैं। महाभारत या रामायण में यथार्थ रूप से कोई मंथरा या शकुनि हो या काल्पनिक पात्र हो परन्तु इनका मनोवैज्ञानिक सद्भाव अवश्य होता है। अभी तो प्रायः परिवार से लेकर समाज और राष्ट्र तक शकुनि एवं मंथरा की ही भरमार है। ऐसे लोग कारण या अकारण से दूसरों को लड़ाकर, ताली बजाकर, बिना बाजे से ही नाचते रहते हैं। दूसरों को बिना लड़ाये इनका भोजन ही नहीं पचता है। अनेक लोग आराधना स्थल में जायेंगे, व्रत, उपवास, करेंगे परन्तु कुत्तों के जैसे एक दूसरे पे गुर्रायेंगे, भौकेंगे, या काटेंगे। एक-दूसरे से मिलते ही बाजार हो या रास्ता या धर्मस्थल एक दूसरे की निन्दा, चुगली करने में नहीं चूकेंगे। परन्तु आचार्यश्री ने इस श्लोक में कहा है जो ऐसे वचन बोलते हैं वे बिना द्रव्य हिंसा किये भी हिंसक ही है।

झूठ वचन से हिंसा होती

सर्वस्मिन्नप्यास्मिन्, प्रमत्त योगैक हेतु कथनं यत्।
अनृत वचनेऽपि तस्मान्नियतं हिंसा समवतरति।।99

Pramatta Yoga, the one (Chief) cause (of Himsa) is present in all these (seeches) here. Therefore Himsa comes in, certainly in falsehood also.

व्याख्या-भावानुवाद : उपर्युक्त समस्त कथन से सिद्ध होता है कि समस्त अनृत वचन में प्रमत्त योग रूप प्राण व्यपरोपणात्मक हिंसा होने से समस्त असत्य वचन में हिंसा का अवतरण होता है।

अप्रमत्त परिणाम में हिंसा नहीं

हेत्तौ प्रमत्त योगे, निर्दिष्टे सकल वितथ-वचनानाम्।
हेयाऽनुष्ठानादेः अनुवदनं भवति नासत्यम्।।100

Pramatta Yoga having been stated to be the cause of all false speech a sermon preaching the renouncement (of vices) and the

performance of religious duties, would not be a falsehood, (even it if should be distasteful, or cause mental pain of the listener).

व्याख्या-भावानुवाद : प्रमत्त योग समस्त असत्य वचन के लिए कारण होने से हेय अनुष्ठान हिताहित का कथन करने पर असत्य नहीं होता है। यथा-मार्ग भ्रष्ट शिष्य को गुरु कठोर अनुशासनात्मक वचन बोलते हैं तथापि यह वचन असत्य नहीं है, हिंसात्मक नहीं है क्योंकि इसमें गुरु का भाव रहता है कि शिष्य कुमार्ग से हटकर सुमार्ग पर चले। ऐसी परिस्थिति में गुरु के भाव में प्रमत्त अथवा हिंसात्मक परिणाम न होकर शुभ परिणाम होता है। इसलिए ऐसे हितकर परन्तु कठोर वचन भी अहिंसात्मक वचन ही है।

समीक्षा : सामान्यतः हित मित प्रिय वचन को सत्य वचन कहा जाता है। परन्तु गुरु के लिए मित या प्रिय वचन की अनिवार्यता नहीं है। उनके लिए हित वचन की अनिवार्यता है। कहा भी हैः-

रूसउ वा परो मा वा, विसं या परियतउ।
मासियव्वा हिया भासा सपक्खगुण करिया।।

जिसे उपदेश दिया जाता है, वह चाहे रोष करे, चाहे वह उपदेश को विष रूप से समझे परन्तु उपदेशक को हितरूप वचन अवश्य कहना चाहिए।

न भवति धर्मः श्रोतुः सर्वस्यैकान्ततो हित श्रवणात्।
ब्रुवतोऽनुग्रह बुध्या वक्तुस्त्वेकान्ततो भवति।।

उपदेश सुनने वाले सभी श्रोताओं को पुण्य नहीं होता है। क्योंकि जो उपदेश अच्छी भावना से सुनता है उसे पुष्य होता है। जो शुभ भावना से नहीं सुनता है उसे पुण्य नहीं होता है। परन्तु जो परोपकार की भावना से अनुग्रह बुद्धि से हितकर उपदेश करता है उसे अवश्य ही पुण्य होता है।

धर्मनाशेः क्रियाध्वंसे सुसिध्दांतार्थ विप्लवे।
अपृष्टैरपि वक्तव्यं तत्स्वरूप प्रकाशने।।

जब जहाँ सत्य धर्म का नाश होता है, यथार्थ क्रिया का विध्वंस होता हो

समीचीन सिद्धान्त अर्थ का अपलाप/विनाश होता हो उस समय सम्यक् धर्म, क्रिया और सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार सुरक्षा के लिए बिना पूछे भी सज्जनों को बोलना चाहिए। क्योंकि इससे धर्म की रक्षा होती है जिससे स्व-पर, राष्ट्र, विश्व की सुरक्षा समृद्धि होती है।

भोगोपभोग-साधन-मात्रं सावद्यमक्षमा मोक्तुम्।
ये तेऽपि शेषमनृतं समस्तमपि नित्यमेव मुंचन्तु।।(101)

Those who are not able to give up such savadya untruth, as is unaviodable in arranging for articles of use, should renouce all the the other untruth, for ever.

व्याख्या-भावानुवाद : भोगोपभोग साधन को जुटाने में जो सदोष वचन का त्याग करने में अक्षम हैं वे भी अन्य समस्त झूठ वचन का नित्य त्याग करें। जिस वस्तु का पुरुष एक बार सेवन करता है उसको भोग कहते हैं। यथा भोजन, पानी आदि। जिस वस्तु का पुनः पुनः सेवन किया जाता है उसे उपभोग कहते हैं। यथा-स्त्री, वस्त्र, अलंकार आदि। ऐसे जो भोगोपभोग के लिये यत्किंचित् झूठ बोलना पड़ता है उसको छोड़कर अनावश्यक अन्य समस्त सावद्य वचन को छोड़ना चाहिये।

जो लोग दुनिया को बेहतर बना रहे हैं और आगे बढ़ा रहे है, वे आलोचना कम, प्रोत्साहित अधिक करते हैं।

-एलिज़ाबेथ हैरिसन

प्रोत्साहनः इसके बिना लोग कई बार स्वयं को जीवन के दलदल में फँसा हुआ पाते हैं। इसके बिना कंपनियाँ लड़खड़ाती हैं और दिवालिएपन की कगार पर दिन काटती हैं। यह सफलता का उत्प्रेरक है, प्रेरणा का इंजन है और महान् लीडर्स को तैयार करने वाला ईंधन है। जी हाँ, प्रोत्साहन में अद्वितीय शाक्ति होती है। यह मनोबल बढ़ाने वाले शब्द हो सकते है, सही तरीक़े से किया गया प्रोत्साहन हो सकता है या

किसी काम की प्रशंसा भी हो सकती है। सकारात्मक प्रोत्साहन में ऐसा कुछ होता है, जिससे ऊर्जा का प्रवाह होता है। लगभग हर मशहूर लीडर कहता है कि उसकी सफलता में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का हाथ था, जिसने प्रोत्साहन के दो शब्द बोलकर उसके सपने साकार करने में मदद की।

मेरी चापलूसी करेंगे, तो शायद मैं आपकी बात का विश्वास नहीं करूँगा। मेरी आलोचना करेंगे, तो शायद मैं आपको पंसद नहीं करूँगा। मुझे अनदेखा करेंगे, तो शायद मैं आपको क्षमा नहीं करूँगा। मुझे प्रोत्साहित करेंगे, तो मैं आपको कभी भूल नहीं पाऊँगा। **-विलियम आर्थर फ्रोर्ड**

यूसीएलए के बास्केटबॉल कोच जॉन वुडन खिलाडियों से कहते थे कि जब वे स्कोर करें, तो अच्छा पास देने वाले खिलाड़ी की ओर देखकर मुस्कराएँ, आँख मारें या हाथ हिलाएँ। टीम के एक सदस्य ने पूछा, ''अगर वह देख नहीं रहा हो, तो क्या करें?'' वुडन ने जवाब दिया, ''मैं गारंटी देता हूँ कि वह अवश्य देख रहा होगा'' यह सच है। हम सभी प्रोत्साहन की तलाश करते हैं और प्रोत्साहन देने वाले की ओर देखते हैं। उस प्रकार की लीडर बनना सीखें, जो नियमित रूप से और गंभीरता से दूसरों को प्रोत्साहित करता हो।

जब हम लोगों को उनके काम में प्रोत्साहित करने और सशक्त बनाने का समय निकालते हैं, तो देर-सबेर वे हमारे मित्र बन जाते हैं। अपने पिछले जीवन के बारे में सोचें। शायद आप उन्हीं लोगों का सबसे अधिक सम्मान करते होंगे, जिन्होंने आपको अपनी सर्वोच्च संभावना हासिल करने के लिए सशक्त बनाया। संवाद की कला के अपने रोमांचक अभियान में आगे बढ़ते समय यह आवश्यक है कि आप प्रोत्साहन की अविश्वसनीय शक्ति को भी अपने औज़ारों में शमिल कर लें। डॉक्टर जॉर्ज एडम्स को प्रोत्साहन इतना महत्पूर्ण लगा कि वे अक्सर इसे ''आत्मा की ऑक्सीजन'' कहते थे। यह न केवल लोगों की सफलता, बल्कि उनकी सेहत के लिए भी आवश्यक है।

बच्चे अपने माता-पिता की प्रशंसा के भूखे होते हैं।

एक सर्वेक्षण में बहुत सी माँओं से पूछा गया कि वे अपने बच्चों के प्रति जो भी टिप्पणियाँ करती है, उनमें सकारात्मक टिप्पणियों का प्रतिशत कितना है। उन्होंने स्वीकार किया कि वे 90 प्रतिशत बार आलोचना करती हैं। एक शहर के स्कूलों में तीन साल तक हुए सर्वेक्षण से पता चला कि अध्यापक 75 प्रतिशत समय नकारात्मक टिप्पणियाँ करते थे। अध्ययन से यह पता चला कि बच्चे पर नकारात्मक कथन का जो असर होता है, उसकी भरपाई करने के लिए शिक्षक के चार सकारात्मक कथनों की आवश्यक होती है। ये आँकड़े स्पष्टता से बताते हैं कि नकारात्मक टिप्पणियों में कितनी अधिक नकारात्मक शक्ति होती है।

किसी काम को अच्छी तरह करने के लिए अपने बच्चों की प्रशंसा करना बहुत आवश्यक है। इससे वे अगली बार उस काम को अधिक मेहनत से करने की कोशिश करेंगे। बच्चे अपने माता-पिता की प्रशंसा के भूखे होते हैं। आप अक्सर उनकी प्रशंसा करें और दिल से करें।

प्रशंसा संभवतः कर्मचारियों को प्रेरित करने का सबसे सस्ता और सबसे अच्छा तरीक़ा है। हाल में हुए सर्वेक्षणों में कर्मचारियों ने लगभग एक सुर में कहा कि उन्हें सबसे अधिक प्रेरणा अच्छे काम के बदले की गई प्रशंसा से मिलती है। प्रशंसा में कड़ी मेहनत के लिए कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाता है और इससे यह संभावना बढ़ जाती है कि वे भविष्य में गुणवत्तापूर्ण काम करेंगे।

यह साबित हो चुका है कि कार्यस्थल में प्रशंसा और प्रोत्साहन से यह होता हैः

- सकारात्मक संगठनात्मक संस्कृति प्रबल होती है।
- कंपनी के उद्देश्यों को समर्थन मिलता है और मनोबल बढ़ता है।
- शीर्ष प्रदर्शन करने वाले कर्मचारी कंपनी छोड़कर नहीं जाते।
- कार्यस्थल में प्रसन्न ही सकल मात्रा बढ़ती है।

इसी तरह कार्यस्थल में प्रशंसा की कमी का परिणाम अक्सर नकारात्मक मनोबल होता है। लोग उन लीडर्स के लिए काम करना पसन्द नहीं करते हैं, जो

उनकी कड़ी मेहनत की प्रशंसा न करते हों। अक्सर नकारात्मक माहौल में रहने वाले कर्मचारी संगठन के प्रति कम समर्पित होते हैं और यह लाभ से जुड़ी उत्पादकता में स्पष्ट झलकता है।

प्रशंसा करने के बारे में कुछ दिशानिर्देश :

1. दूसरों को उद्देश्य के साथ प्रोत्साहित करें

किसी कर्मचारी या परिवार के सदस्य की प्रशंसा करने का प्रबल उद्देश्य बनाएँ यह ध्यान रखें कि प्रशंसा का प्रमुख उद्देश्य उस व्यक्ति के मनोबल और आत्म-छवि को बढ़ाना है, उसकी हर संभावना पूरी करने में मदद करता है। प्रोत्साहन का उद्देश्य दूसरों को बरगलाना नहीं है, कि वे आपको पसन्द करने लगें। अपने समुचित लाभ के लिए प्रशंसा का प्रयोग न करें। प्रशंसा हमेशा मानने वाले के लाभ के लिए की जानी चाहिए। पुरस्कार तो आपको सह परिणाम के रूप में मिलेंगे, जैसे उत्पादकता बढ़ जाएगी या घर का माहौल अधिक खुशनुमा हो जाएगा।

2. प्रशंसा को केन्द्रित करें

जब आप किसी कर्मचारी, सहकर्मी या परिवार के सदस्य की प्रशंसा करें, तो उसकी विशेष उपलब्धियों का उल्लेख करें। ''आप बेहतरीन कर्मचारी है'', यह कहने के बजाय यह बताएँ कि आपको उनका कौनसा व्यवहार प्रशंसा योग्य लगा।

3. सार्वजनिक प्रशंसा करें

अगर कोई कर्मचारी शर्मिला न हो, तो उसकी प्रशंसा उसके सहकर्मियों के सामने करें। इससे आपके संगठन का मनोबल बेहतर होगा। किसी बैठक में हल्का सा उल्लेख, कंपनी के सूचनापत्र में एक वाक्य या खाने की मेज पर कोई विशेष टिप्पणी सार्वजनिक प्रशंसा के महान अवसरों जैसी है। हर व्यक्ति सार्वजनिक प्रशंसा पाना चाहता है।

आईबीएम के संस्थापक थॉमस जे. वाटसन सार्वजनिक मान्यता देने के लिए मशहूर थे। ये अक्सर अपनी चेकबुक लेकर दफ्तर में घूमते थे और जिन लोगों को अच्छा काम करता देखते, उन्हें पाँच, दस या बीस डॉलर का चेक काटकर पुरस्कार

में दे देते थे। वे अपने कर्मचारियों के अच्छे काम के बारे में सार्वजनिक टिप्पणी करना भी पसन्द करते थे। यहाँ धन महत्त्वपूर्ण नहीं था। महत्त्वपूर्ण तो सार्वजनिक सम्मान था। मि. वाटसन ने जिन कर्मचारियों को चेक दिए, उनमें से कुछ ने तो चेक भुनाने के बजाय उसे मढ़वाकर दीवार पर टाँग दिया। धन नहीं, बल्कि प्रशंसा ही सच्चा पुरस्कार थी।

प्रशंसा बनाम निन्दा

हम या तो निंदा (नकारात्मक प्रेरणाओं) का प्रयोग कर सकते हैं या फिर प्रशंसा (सकारात्मक प्रेरणाओं) का। प्रशंसा करने से दूरगामी पुरस्कारों का लाभ मिलेगा।

बहरहाल, हममें से कुछ लोगों के लिए दूसरों की प्रशंसा करना आसान नहीं होता। न्यूयॉर्क लाइफ़ के फ़ेड सीवर्ट को हमेशा अपने कर्मचारियों की सच्ची प्रशंसा करने में मुश्किल आई, जब तक कि उनके एक नए बॉस ने उनके सामने प्रशंसा की शक्ति प्रदर्शित नहीं कर दी। अपने नए बॉस को देखने और उनका अनुकरण करने के बाद सीवर्ट ने कहा, ''यह बहुत आसान है और इससे मिलने वाले परिणाम अविश्वसनीय हैं। मैं नही जानता कि मैंने हमेशा स्वंय को यह कहने से क्यों रोका, 'देखिए, मैं सचमुच आपकी सराहना करता हूँ। आपने जो किया है, उसके लिए आपको धन्यवाद। मैं जानता हूँ कि आपने बहुत अतिरिक्त समय दिया है और मेरी बात का विश्वास करें, मैंने इस पर ध्यान दिया है।''' सीवर्ट आगे कहते हैं, ''और यहाँ यह आवश्यक नहीं है कि टिप्पणियाँ ऐसी हों कि धरती हिल जाए।'' यदि कोई काम अच्छी तरह से किया गया है, तो उसकी प्रशंसा करके सम्मानित करें। अपने आस-पास के लोगों के जीवन में हो रही छोटी-छोटी चीज़ों पर ध्यान देने का प्रयास करें और उन्हें पूरे रास्ते प्रोत्साहित करने का संकल्प करें।

एक मील आगे तक चलने वाले लोग

माना कि लोग धन के लिए काम करते हैं, लेकिन प्रशंसा, प्रोत्साहन और मान्यता के लिए वे एक मील आगे तक जाएँगे। मुझे एक व्यक्ति की सच्ची कहानी याद

है, जिसने सुबह का समाचार-पत्र उठाने के लिए दरवाज़ा खोला और एक अजनबी कुत्ते के पिल्ले को देखकर हैरान रह गया, जिसके मुँह में अख़बार दबा था। अप्रत्याशित ''सेवा'' से खुश होकर उस आदमी ने पिल्ले की थोड़ी आवभगत की। अगली सुबह वह आदमी और भी हैरान रह गया, जब उसने उसी पिल्ले को अपने दरवाज़े पर दोबारा देखा। वह अपनी पूँछ हिला रहा था और उसके मुँह में आठ अलग-अलग पड़ोसियों के समाचार-पत्र दबे थे। कुत्ते को तो बस थोड़े से प्रोत्साहन की आवश्यकता थी और इसके बाद वह एक मील आगे तक जाने के लिए तैयार था। जब आप ''एक मील आगे तक जाने'' की मानसिकता विकसित कर लेते हैं, तो आप शेष लोगों की भीड़ से अलग हटने लगेंगे और सफलता के अधिक बड़े अवसर सुनिश्चित कर लेंगे।

प्रशंसा करना

मैं एक अच्छी प्रशंसा पर एक साल तक जीवित रह सकता हूँ।

-मार्क ट्वेन

हम सभी प्रशंसा के शब्द सुनना चाहते हैं। इसमें सराहे जाने की वह बुनियादी आवश्यकता शामिल है, जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके है। प्रशंसा दोनों तरह से काम करती है। जो व्यक्ति प्रशंसा करता है, वह अच्छा महसूस करता है कि उसने किसी दूसरे व्यक्ति को प्रोत्साहित किया और जिस व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है, वह प्रशंसा करने वाले व्यक्ति की ओर आकर्षित होता है। इससे एक तालमेल और बंधन बन जाता है, जो अधिक सकारात्मक संवाद की ओर ले जाता है।

प्रशंसा सुनना हर व्यक्ति पसंद करता है। इससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और हम दूसरों को पसंद करने लगते हैं। उदाहरण के तौर पर, अगर मेरी टाई की प्रशंसा की जाए, तो मैं इसे अगले महीने तक नहीं उतारूँगा। अगर लिंडा इसे सेक्सी कह दे, तो हो सकता है कि मैं इसे पहनकर सोने भी चला जाऊँ!

इस दुनिया के आनंद को बढ़ाने की शक्ति इसी समय बड़ी आसानी से आपके हाथ में आ सकती है। कैसे? किसी अकेले या हताश व्यक्ति को सच्ची

प्रशंसा के कुछ शब्द देकर। आपने आज जो अच्छे शब्द कहे हैं, हो सकता है कल आप उन्हें भूल जाँए, लेकिन सामने वाला उन्हें जीवन भर याद रखता है।

-डेल कारनेगी

पारस्परिक संबंधो पर हो रही एक गोष्ठी में हिस्सा ले रहे एक व्यक्ति को विश्वास हो गया कि उसे भी दूसरों की प्रशंसा करनी चाहिए। उसे लगा कि यह काम अपनी पत्नी से शुरू करना चाहिए। घर लौटते समय उसने लंबी डंडियों वाले एक दर्जन गुलाब और चॉकलेट्स का डिब्बा ख़रीद लिया। वह पत्नी को सचमुच हैरान कर देना चाहता था। वह रोमांचित था कि वह अपनी पत्नी को यह दिखाने वाला था कि वह उसकी कितनी प्रशंसा करता है।

उसने घर पहुँचकर घंटी बजाई और पत्नी के दरवाज़ा खोलने का इंतजार करने लगा। पत्नी उसे देखते ही रोने लगी। असमंजस में फँसे पति ने पूछा, ''क्या बात है, डार्लिंग?'' पत्नी ने सुबकते हुए कहा, ''ओह, आज का दिन इतना बुरा है। पहले तो टॉमी ने अपना डायपर टॉयलेट में फ़्लश कर दिया। फिर डिशवॉशर ख़राब हो गया। सैली जब स्कूल से घर लौटी, तो उसके पैर में खरोंचे थीं और अब तुम शराब पीकर घर आए हो!''

आपकी छवि कभी प्रशंसा न करने वाले व्यक्ति की बने, इससे पहले ही दूसरों की सच्ची प्रशंसा करने की आदत डालने का संकल्प करें। केन ब्लैंचर्ड ने अपनी बेस्टसेलिंग पुस्तक द वन-मिनट मैनेजर में ''एक मिनट की प्रशंसाओं'' का महत्व बताया है। बेहतरीन व्यक्ति बनने या ज़बर्दस्त काम करने के लिए लोगों को धन्यवाद दें। स्थायी संबंध विकसित करने में इसका बहुत महत्व है।

सच्ची प्रशंसा करें।

स्टीफ़न कवी ने अपनी पुस्तक द 7 हैबिट्स ऑफ़ हाइली इफ़ेक्टिव पीपुल में संबंधों में एक भावनात्मक बैंक खाता बनाने के बारे में बात की है। विचार यह है कि जिन लोगों से आप नियमित रूप से मिलते हैं, उनके खातों में सकारात्मक रक़म बनाए रखने का प्रयास करें। एक सच्ची प्रशंसा, एक उत्साहवर्धक शब्द, एक मिनट

की प्रशंसा- ये सभी भावनात्मक बैंक खाते में सकारात्मक ''डिपॉज़िट्स'' हैं। आलोचना, नीचा दिखाना और आरोप ये सभी उस खाते से ''विद्ड्रॉअल्स'' हैं। ईमानदार रहें, लेकिन नकारात्मक न बनें। सकारात्मक टिप्पणियाँ आलोचना से भिन्न होती हैं।

जब मैं भाषण देने के बाद मंच से उतरता हूँ, तो सबसे पहले लिंडा की तलाश करता हूँ। वह इतनी चतुर है कि हमेशा मेरी तारीफ़ करती है कि मैंने कितना बेहतरीन काम किया है, जबकि कई बार मैं जानता हूँ कि मैंने ऐसा नहीं किया है। वह मुझे सारे समय बताती है कि मैं कितना बेहतरीन पति हूँ और मैं हर समय इतनी अद्भुत पत्नी होने के लिए उसकी प्रशंसा करता हूँ। हम एक-दूसरे के सबसे मुखर प्रशंसक और मनोबल बढ़ाने वाले हैं और ऐसा ही होना चाहिए।

आशा की शक्ति

कोई भी प्रबंधक या लीडर आपको बता सकता है कि किसी समूह में आशा, उम्मीद और सकारात्मक दृष्टिकोण का संचार कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। अपने आस-पास के लोगों में आशा का संचार करना अच्छे संप्रेषक की एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। सकारात्मक संप्रेषण (शब्द, विचार और कार्य) संवाद की कला बुनियादी तत्त्व है। जब आप अपने आस-पास के लोगों को प्रभावित करें और उनके साथ संवाद करें, तो हताश करने के बजाय प्रोत्साहित करने के लिए सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करें। शंका के बजाय विश्वास जगाएँ। निराशा के बजाय आत्मविश्वास बढ़ाएँ। आपके भीतर आशावाद की ईश्वर-प्रदत्त चिंगारी है, जिसे निराश समाज में फैलाना आपकी ज़िम्मेदारी है। लेखक और प्रेरक वक्ता जॉन मैक्सवेल कहते हैं, ''यदि उम्मीद हो, तो लोग काम करते रहेंगे, जुझते रहेंगे और कोशिश करते रहेंगे। उम्मीद से मनोबल बढ़ता है। इससे आत्म-गौरव बेहतर होता है। यह लोगों को ऊर्जावान बनाती है। यह उनकी आशाएँ बढ़ाती है। ''

महान लीडर्स ने हमेशा निराशाजनक परिस्थितियों में आशावाद की शक्ति को समझा है। विन्स्टन चर्चिल ने नाज़ी बमबारी के सबसे दुरूह पलों के दौरान आशावाद

और उम्मीद के अद्भुत संदेश लंदन के रेडियो पर नियमित रूप से प्रसारित किए। उनके उत्साहवर्धक शब्दों से इंग्लैंड की जनता को शक्ति मिली और उन प्रेरक शब्दों के चलते ही उन्होंने अविश्वसनीय मुश्किलों को पार कर लिया। मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप लोगों को उनकी सर्वोच्च संभावना तक पहुँचाने के लिए प्रोत्साहन की कला का प्रयोग करें। **(संवाद का जादू)**

उजाले की ओर

- यदि रोज जिंदगी में हम मुस्कुरा सकें, खुश और शांति से भरे रहें तो न सिर्फ हम बल्कि हर किसी को इससे फायदा होगा। यह शांति का सबसे बुनियादी काम है।

  –थिक न्हात हान, वियतनामी बौध्द भिक्षु
- परम्परा हमारी सुरक्षा बन जाती है और जब मन सुरक्षित हो जाता है तो सड़ने लगता है। **–जिदू कृष्णमूर्ति, दर्शनिक**
- किसी राष्ट्र की महानता और इसकी नैतिक प्रगति इस बात से देखी जा सकती है कि वहां जानवरों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।**–महात्मा गांधी**
- मौत प्रकाश को ख़त्म करना नहीं है ; ये सिर्फ दीपक को बुझाना है, क्योंकि सुबह हो गई है। **–रवींद्रनाथ टैगोर**
- राजनीतिक तानाशाही की सामाजिक तानाशाही से कोई तुलना नहीं हो सकती। एक सुधारक जो समाज के खिलाफ चलता है वह उस राजनेता से अधिक साहसी व्यक्ति है, जो सरकार की अवमानना करता है।

  –डॉ.भीमराव आंबेडकर
- यदि कोई व्यक्ति निश्चितताओं से शुरूआत करता है, उसका अंत संदेह में होगा और यदि वह संदेह से शुरूआत करने को तैयार है तो अंत निश्चितता में होगा। **–फ्रांसिस बेकन, लेखक व वैज्ञानिक**
- ऐसा कहा जाता है कि धर्म के बिना आदमी उस घोड़े की तरह है जिसमें पकड़ने के लिए लगाम न हो। **–सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

- जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है आपको पता चलता है कि आपके दो हाथ हैं। एक खुद की मदद करने के लिए और दूसरा अन्य लोगों की मदद करने के लिए। **-ऑड्रे हेपबर्न, अभिनेत्री**
- दिल को शिक्षित किए बगैर मन को शिक्षित करना, तो कोई शिक्षा ही नहीं है।

  -अरस्तु, दार्शनिक
- जीवन में डरने जैसा कुछ भी नहीं है, इसे तो सिर्फ समझना है। अब ऐसा वक्त है कि हमें अधिक समझना होगा ताकि और भी कम डरें।

  -मेरी क्यूरी, वैज्ञानिक

त्यजनीय व ग्रहणीय

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : दुल्हे का सेहरा....)

बन्द आँखों से चाक्षुष भी न दिखता है।
अन्धश्रद्धा से स्व-आत्मा न दिखता है।।
यथा अन्धेरे में ग्रन्थ न पढ़ पाते।
तथा मोही स्वयं को न जान पाते है।।(बन्द)

जन्मान्ध यथा सूर्य न देखपाते।
मोहान्ध सत्य को न जानते हैं।।
भोजन भी सडने से विषाक्त होता है।
धर्म का दुरुपयोग विषमता लाता है।।(बन्द) (2)

आत्मश्रद्धान रहित जीव कुधर्मी।
समता रहित जीव होते अधर्मी।।
धर्मफल है शान्ति अधर्म अशान्ति।
धर्म स्वरूप आत्मविशुद्धि फल है शान्ति।।(बन्द) (3)

राग द्वेष मोह है अधर्म स्वरूप।
शुद्ध-बुद्ध-आनन्द धर्म स्वरूप।
धर्म पाना है तो रागद्वेष मोह त्यागो,
ईर्ष्या तृष्णा घृणा दंभ प्रपंच त्यागो।।(बन्द) (4)

आत्मविशुद्धि हेतु ही धर्म पालनीय,
इस हेतु बाह्य निमित्त भी ग्रहणीय।
तत्वचिन्तन शोध-बोध करणीय,
मैत्री प्रमोद कारूण्य साम्य वरणीय।।(बन्द) (5)

दिखावा-ढ़ोंग-आडम्बर-दंभ त्यजनीय,
शालीन-नम्र-उदार-धैर्य-धारणीय।
स्वतंत्र-स्वावलम्बन चर्या आचरणीय,
स्व-परिविश्व हित चिन्तन करणीय/(भावनीय) (बन्द)(5)

आत्मतृप्तिमय आत्म विकास करणीय,
अस्त-व्यस्त-संत्रस्त विकास त्यजनीय।
अन्त्योदय सें सर्वोदय तक भजनीय,
शुद्धात्मास्वरूप 'कनक' ग्रहणीय।।(बन्द) (6)

सागवाडा 23/4/2018 रात्रि 9.06

सन्दर्भ-

दुर्गति का पात्र कौन?

णाहि दाणं णहि पूया णहि सीलं णहि गुणं ण चारित्तं।
जे जइणा भणिया ते णेरइया हुंति कुमाणुसा तिरिया।।39।।

अर्थ : जिन जीवों ने मनुष्य पर्याय प्राप्त करके सुपात्र को दान नहीं दिया, श्री जिनेन्द्र भगवान् की पूजा नहीं की, शीलव्रत (स्वदारसंतोष-परस्त्रीत्याग) पालन नहीं

किया, मूलगुण और उत्तरगुण पालन नहीं किया चारित्र का पालन नहीं किया और श्री जिनेन्द्र देव की आज्ञा पालन नहीं की अर्थात् धर्म के आचरण तो नहीं किया। ऐसे वे मनुष्य मरकर परलोक में नारकी तिर्यंच अथवा कुमनुष्य होते हैं। ऐसा जिनेन्द्र देव ने कहा है।

हेयोपादेय से रहित जीव मिथ्यादृष्टि है

ण वि जाणइ कज्जमकज्जं सेयमसेयं च पुण्ण पावं हि।
तच्चमतच्चं धम्ममधम्मं सो सम्मउम्मुक्को।।40।। रयण.

अर्थ : जो मनुष्य कार्य अकार्य को, हित अहित को अर्थात् सेवन करने योग्य व असेवन करने योग्य क्या है, पुण्य क्या है और पाप क्या है, धर्म क्या है-अधर्म क्या है? तत्त्व क्या है, अतत्त्व क्या है, इसका विवेक नहीं है वह मनुष्य सम्यक्त्व से रहित है अर्थात् मिथ्यादृष्टि है।

हेयोपादेय रहित जीव के सम्यक्त्व कहाँ?

ण वि जाणइ जोग्गमजोग्गं णिच्चमणिच्चं हेयमुवादेयं।
सच्चमसच्चं भव्वमभव्वं सो सम्मउम्मुक्को।।41।।

अर्थ : जो मानव मूल्य अमूल्य ऐसे इस मानव देह को प्राप्त करके भी विवेक पूर्वक अब मेरे लिए क्या हेय-त्यागने योग्य है और उपादेय-ग्रहण करने योग्य क्या है, इस प्रकार हेय उपादेय के विवेक रहित प्रमादी मनुष्य निरन्तर पापों की प्रवृत्ति करता है। सत्यार्थ क्या है, असत्यार्थ क्या है, नित्य का अर्थ क्या है अनित्य का अर्थ क्या है भव्य कौन है? अभव्य कौन है, भव्य अभव्य क्यों कहते हैं, सम्यक्त्व मिथ्यात्व क्यों कहते हैं इनका लक्षण क्या है आदि का जिनको विवेक विचार ज्ञान नहीं है वह मनुष्य सम्यक्त्व से रहित है अर्थात् धर्म से तत्त्वज्ञान से रहित मिथ्यादृष्टि है।

लौकिक जनों की संगति योग्य नहीं

लोइय जणसंगादो होइ मइमुहर कुडिल दुब्भावो।
लोइय संगं तम्हा जोइ वि तिविहेण मुंचा हो।।42

अर्थ : लौकिक मनुष्यों की प्रवृत्ति अर्थात् मनुष्य अधिक बोलने वाले (वाचाल) बक्कड़ कुटिल परिणामी और दुष्ट भावों से अत्यन्त क्रूर विकृत परिणामी होते हैं इसलिये लौकिक मनुष्यों की संगति कभी नहीं करे। मन वचन काय से छोड़ देना चाहिये।

सम्यक्त्वरहित जीव का लक्षण

उग्गो तिव्वो दुट्ठो दुब्भावो दुस्सुदो दुरालावो।
दुम्मदरदो विरूद्धो सो जीवो सम्मउम्मुक्को।।43।।

अर्थ : उग्र प्रकृति वाले, तीव्र क्रोधादि प्रकृति वाले, दुष्ट स्वभाव वाले, दुर्भाव वाले, मिथ्या शास्त्रों के श्रवण करने वाले, दुष्ट वचन के कहने वाले, मिथ्याभिमान को धारण करने वाले, आत्मधर्म से विपरीत चलने वाले और अतिशय क्रूर प्रकृति वाले मनुष्य सम्यक्त्व रहित होते हैं।

क्षुद्र स्वभावी व दुर्भावना युक्त जीव सम्यक्त्व हीन हैं

खुद्दो रुद्दो रुट्ठो अणिट्ठपिसुणा सग्गत्थि असूयो।
गायण जायण भंडण दुस्सुणसीलो दु सम्मउम्मुक्को।।44।।

अर्थ : क्षुद्र प्रकृति वाले रौद्र परिणामी, क्रोधी चुगलखोर कामी, गर्विष्ठ, असहनशील वाले, द्वेषी, गायन करने वाले, याचना करने वाले, लड़ाई झगड़ा करने वाले, दूसरों के दोषों को प्रकट करने वाले, निंद्य पापाचारी और मोही मनुष्य धर्म तथा सम्क्यत्व से रहित होते हैं।

जिन-धर्म विनाशक जीवों के स्वभाव

वाणर गद्दह साण गय वग्घ वराह कराह।
पक्खि जलूय सहावणर जिणवरधम्म विणासु।।45।।

अन्वयार्थः (वाणर) बंदर (गद्दह) गर्दभ (साण) कुत्ता (गय) हाथी (वग्घ) व्याघ्र (वराह) शूकर (कराह) ऊँट (पक्खि) पक्षी (जलूय) जलोक (सहावणर)

स्वभाव वाले मानव (जिणवरधम्म विणासु) श्रेष्ठवर जिनेन्द्र भगवान् के कहे हुए धर्म का विनाश करने वाले होते हैं।

मिथ्यात्व से शुभ भाव, शुभ क्रिया, शुभगति, सुकुल, सद्गुण, धर्माचरण, स्वर्ग मोक्ष आदि सभी दूर होते हैं।

सम्यग्दृष्टि ही धर्मज्ञ है

देवगुरूधम्मगुण चारित्तं तवायार मोक्खगइ भेयं।
जिणवयणसुदिट्ठिविणा दीसइ किह जाणए सम्मं।।49।।

अर्थ : मनुष्य सम्यग्दर्शन के बिना देव गुरू धर्म क्षमादि गुण चारित्र तप मोक्षमार्ग तथा श्री जिनेन्द्र भगवान् के वचन को सही रूप से यथार्थरूप से नहीं जान सकते हैं।

मिथ्यादृष्टि की पहचान

एक्खु खणं ण विचिंतइ मोक्खणिमित्तं णियप्पसाहावं।
अणिसं विचित्तपावं बहुलालावं मणे विचिंतेइ।।50।।

अर्थ : मोही अज्ञानी संसारी प्राणी मिथ्यादृष्टि जीव एक क्षण मात्र भी अपने लिए मोक्ष प्राप्ति के लिए मोक्ष सिद्धि के लिए अपने आत्म स्वरूप का विचार चिंतवन मनन नहीं करता है, परन्तु दिन रात आरंभ परिग्रह आदि परवस्तु के पाप कार्यों का बारबार विचार व चिंता करता है।

साम्य भाव का घातक

मिच्छामइमय मोहा सवमत्तो बोलए जहा भुल्लो।
तेण ण जाणइ अप्पा अप्पाणं सम्म भावाणं।।51।।

अर्थ : मिथ्यामति-मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्याबुद्धि के अभिमान से मदोन्मत्त होकर मदिरापान करने वाले मार्ग भ्रष्ट भुल्लड मनुष्य के समान यद्वा तद्वा मिथ्या प्रलाप

करते हैं, और वे मोह के उदय से अपनी आत्मा को नहीं जानते हैं। तब अपनी आत्मा के समता भाव को कैसे जानेंगे? अर्थात् सर्वथा नहीं जानेंगे।

कर्मक्षय का हेतु सम्क्यत्व

मिहरो महंधयारं मरुदो मेहं महावणं दाहो।
वज्जो गिरिं जहाविय सिज्जइ सम्मे तहा कम्मं।।52।।

अर्थ : जिस प्रकार सूर्य अंधकार को तत्काल नष्ट करता है। वायु मेघ के समूह को नाश कर देती है। दावानल वन को जला देता है। वज्र पर्वतों का भेदन (चूर्ण) कर देता है। उसी प्रकार एक सम्यक्त्व भी समस्त कर्मों का नाश कर देने में समर्थ है।

भावार्थः- जिस प्रकार सूर्य का उदय होते ही रात्रि का अंधकार साथ ही साथ विनाश हो जाता है। हवा चलने पर मेघों के समूह विनष्ट हो जाते हैं। दावानल अग्नि महावन को जलाकर भस्म कर देता है। वज्र का आघात होने पर बड़े-बड़े पर्वत चकनाचूर हो जाते हैं। उसी प्रकार एक सम्यक्त्व असंख्य कर्मों के नाश करने में महासमर्थ शक्तिमान है।

सम्यग्दर्शन रूपी रत्न दीपक

मिच्छंधयाररहियं थियमज्झं मिव सम्मरयणदीव कलावं।
जो पज्जलइ स दीसइ सम्मं लोयत्तयं जिणुदिट्ठं।।53।।

अर्थ : जो धर्मात्मा अपने हृदय मंदिर में सम्यक्त्व रत्न रूपी दीपक प्रज्ज्वलित करता है उसको त्रिलोक के समस्त पदार्थ स्वयमेव प्रतिभासित होते है।

भावार्थः जहाँ पर सम्यक्त्व रूपी रत्नदीप प्रज्वलित होता है वहाँ पर मिथ्यारूपी अंधकार नष्ट हो जाता है तब सम्यक्त्व रूपी रत्न दीपक ज्योति से प्रकाशित तीन लोक को देख लेता है।

कर्मों का नाश, दुःख की निवृत्ति और सुख की प्राप्ति आत्मस्वरूप में परिणति, लवलीन, तल्लीन होने से प्राप्ति होती है। जब तक आत्मा का श्रद्धान, स्वानुभव नहीं है तब तक कुछ भी नहीं है। आत्मश्रद्धान के अलावा जिनलिंग को धारण करने पर भी कुछ लाभ नहीं है।

आत्मा की भावना बिना दुःख ही है

जाव ण जाणइ अप्पा अप्पाणं दुक्खमप्पणो तावं।
तेण अणंत सुहाणं अप्पाणं भावए जोइ।।81

अर्थ : जब तक अपनी आत्म का सत्यस्वरूप नहीं जाना जाता, तब तक आत्मा को कर्मजन्य दुःख का भार है।

जब आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप टंकोत्कीर्ण ज्ञायक स्वभाव आत्मा को जान लेता है, शुद्ध भावों को प्राप्त होता है, उसी समय अनंत सुख की प्राप्ति स्वयंमेव होती जाती है। इसलिए मुनिगण शुद्धस्वरूप, अपने आत्मस्वभाव का ही ध्यान करते हैं। अपने शुद्ध आत्म स्वरूप में तन्मय रहते हैं और मोक्ष सुख को प्राप्त कर लेते हैं।

सम्यक्त्व से निर्वाण की प्राप्ति

णियतच्चुबलद्धि विणा सम्मतु बलद्धि णत्थि णियमेण।
सम्मत्तुबलद्धि विणा णिव्वाणं णत्थि जिणुदिट्ठं।।

अर्थ : अपने आत्मस्वरूप की प्राप्ति के बिना सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं है और सम्यक्त्व के बिना मोक्ष की प्राप्ति सर्वथा नहीं है। यह श्री जिनेन्द्र भगवान का सुदृढ़ निश्चित सिद्धान्त है।

परमात्मा ध्यान का कारण-स्वाध्याय

पवयणसारब्भासं परमप्पज्झाण कारणं जाण।
कम्मक्खवणणिमित्तं कम्मक्खवणेहि मोक्खसोक्खं हि।।

अर्थ : भगवान् जिनन्द्रे देव प्रणीत प्रवचनसार का अभ्यास, परमात्मा का ध्यान के सिद्धि के लिए कारण बनता है। आत्मा के शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति का उपाय आत्मा का ध्यान ही है और ध्यान के लिए आगम शास्त्र का अभ्यास भी परब्रह्म परमात्मा के ध्यान का कारण बनता है। विशुद्ध आत्मा के स्वरूप का ध्यान ही कर्मों का नाश करने में समर्थ है और इसी से मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

परम पावन भाव-व्यवहार क्या व कैसे होते हैं!?

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : आत्मशक्ति)

परम से परम पावन है स्व शुद्धात्मा के गुणधर्म।
उसकी प्राप्ति हेतु जो भावना है वह ही परम पावन।
स्वः शुद्धात्मा के गुणधर्म है शुद्ध-बुद्ध व आनन्द।
राग द्वेष मोह काममद रिक्त सत्य समता ज्ञानानन्द।।(1)

यह ही जीवन की परम अवस्था जिसे कहते है परमात्मा।
तन-मन-इन्द्रिय से भी रहित सच्चिदानन्द शुद्धात्मा।
इस अवस्था में न कोई शत्रु-मित्र तथाहि अपना-पराया।
संकल्प विकल्प व संक्लेश परे जन्म-जरा-मृत्यु रिक्तता।।(2)

अनन्तज्ञानदर्शन सुखवीर्यमय स्वयं में पूर्णता व स्थिरता।
परम अहिंसा क्षमादि गुणयुक्त यह ही परम शुद्धता।
इस स्वरूप को स्वशुद्धात्मा मानना यह ही परम आस्तिक्य।
इससे युक्त होता आत्मज्ञान जिससे होता सही धर्म आचरण।।(3)

इससे युक्त होते जो भाव-व्यवहार वे ही सही धर्मध्यान।
इसके मनन-चिन्तन व शोध-बोध यथार्थ से आध्यात्मिक ज्ञान।
अन्यथा न संभव पावन भाव व्यवहार भले हो नैतिक आचरण।
नीति-नियम हो या सामाजिक तथाहि कानून संविधान।।(4)

ये सभी भी आवश्यक है तथापि ये न होते परम पावन।
इससे जीव न बन पाते शुद्ध-बुद्ध (आनंद) अतः ये व्यवहार काम।
परम पावन बनने हेतु तीर्थंकर भी बनते हैं श्रमण।
तीन-तीन पदवी के धारी शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ (इसके) प्रमाण।।(5)

मन्द कषायी शुभ लेश्या वाले होते हैं भद्र व शान्त।
तो भी उनके भाव-व्यवहार नहीं होते परम पावन।
केवल रुढ़ि-परम्परा पंथ-मत से न संभव पावन भाव।
कानून-संविधान-शिक्षा-राजनीति से न होता है पावन भाव।।(6)

पावन भाव से मिलती आध्यात्मिक शान्ति जो अन्य से असम्भव।
पावन भाव हेतु ही 'कनकनन्दी' करे सभी तप व त्याग।
लोग कहते अच्छे भाव करो, किन्तु न जानते इसका स्वरूप।
स्व सम्बोधन व अन्य के हित हेतु 'कनक' ने लिखा सही स्वरूप।।(7)

सागवाड़ा : 12.04.2018 रात्रि : 8:58

मनोविज्ञान

हमारे व्यवहार की छोटी-छोटी बातें हमारे रोज के जीवन को कठिन बना देती है। इन्हें आसान बनाना है तो इन कुछ बातों पर गौर कीजिए :-

- बार-बार आने वाले डरावने सपने से मुक्त होना है? वीडियो गेम खेलना शुरू कर दें। रात के सपने और वीडियो गेम दोनों वैकल्पिक वास्तविकता खड़ी करते हैं। वीडियो गेम की तरह आप अपने सपने भी कंट्रोल कर पाएँगे।
- लक्ष्य तय करने के बाद उसे लेकर उत्साह खत्म हो जाता है? दूसरों को उसके बारे में न बताएँ। शोध से पता चला है कि भविष्य की बातें करने से पूर्णता का अहसास दिमाग को इतना संतुष्ट कर देता है कि प्रेरणा ही खत्म हो जाती है। इसलिए अपने प्लान व लक्ष्य अपने तक ही रखें।

- किसी मुद्दे पर सहयोगी के साथ सकारात्मक चर्चा चाहते हैं? आमने-सामने बैठने की बजाय उसकी बगल में बैठकर बात करें। तब यह नहीं लगेगा कि दोनों किसी मुद्दे पर विरोधी स्थिति में है। दोनों कम स्पर्धा और आक्रामकता महसूस करेंगे।
- उस गाने से मुक्ति पाना चाहते हैं, जो पसन्द नहीं है पर बार-बार मुँह से निकल रहा है? उस गीत की अन्तिम पंक्तियों को सोचें। जिगार्निक इफेक्ट के मुताबिक हमारा दिमाग अधूरी रह गई चीजें बार-बार याद करता है। अंत सोचते ही आप गीत से मुक्ति पा जाएँगे।
- किसी से सच जानना चाहते हैं ? उसके बहुत थके हाने पर उससे बात करें। आमतौर पर हम सब थके होते हैं तो सच बताने की संभावना अधिक होती है। इसीलिए प्रायः लोग अपने गहरे राज रात के अंधेरे में बताते हैं।

मानव तू महामानव बन!

(चाल : 1.आ लौट के आ जा मेरे मीत....)

आओ! आओ रे! मानव आओ रे!ऽऽऽ तू स्व-गुण धर्म पहचानो रे! ऽऽऽ
तू नहीं भौतिक तन-मन रे! ऽऽऽ तू नहीं बन्दर की सन्तान रे! ऽऽऽ
/(तू नहीं बन्दर के वंशज रे! ऽऽऽ)....
...(स्थायी)...

तू जो चेतनामय जीव द्रव्य...ज्ञान-दर्शन-सुख-वीर्यमय....
तेरे पूर्वज थे मनु-राम-बुद्ध...तीर्थंकर-गणधर-सिद्ध...
खाना-पीना/(सोना) ही नहीं तेरे काम....हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ...2
आत्म पुरुषार्थ से सिद्ध बनना ऽऽऽ आओ...(1)...

सत्ता-सम्पत्ति-डिग्री ही नहीं लक्ष्य...आत्म श्रद्धा प्रज्ञा चर्या लक्ष्य...
दान-दया-सेवा-परोपकार करो...काम-भोग-विलासिता त्यज...

संकीर्णता-कट्टरता/(कटुता) त्यज रे...हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ...2

सरल-सहज-मधुर बन रे! ऽऽऽ आओ...(2)...

अस्त-व्यस्त-संत्रस्त तू त्यज रे!....सत्य-समता-शान्ति भज रे!....

दिखावा-आडम्बर तू त्यज रे!....ढोंग-पाखण्ड परे धर्म कर रे!....

आत्म विशुद्धि-शान्ति ही धर्म रे!.....हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ...2

ख्याति-पूजा-प्रसिद्धि त्यज रे! ऽऽऽ आओ...(4)...

भेड़-भेड़िया चाल तू त्यज रे!...आत्मविश्वास-अनुभव कर रे!....

नैतिक-सदाचार पालन कर....स्व-पर उपकार तू कर रे!...

दीन-हीन-दम्भ तू त्यज रे!....हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ...2

आत्म-गौरवशाली बन रे! ऽऽऽ आओ...(4)...

इस हेतु ध्यान-अध्ययन कर रे!...आत्मविश्लेषण-सुधार कर रे!...

सत्यग्राही व गुणग्राही बन कर...उदार सहिष्णु बन रे!...

समय-शक्ति का सुदपयोग कर.....हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ...2

'कनक' तू महामानव बन रे! ऽऽऽ आओ...(5)...